शुजा ख़ावर की ग़ज़लें

बात

शुजा (शुजा ख़ावर)

की उर्दू ग़ज़लों का संग्रह

देवनागरी लिपि में

पृष्ट न. ग़ज़ल

१००. जो गुज़र जाए दिन अब वही ठीक है
१०१ था यह रिश्ता कहाँ आह और वाह का
१०२. पाओगे बड़ी शोहरत गर काम ये कर जाओ
१०३. सुकूं और चैन तो ले लेगा देगा कुछ नहीं
१०४. लिखो उसके तब्बसुम ने तसल्ली हर तरह कर दी
१०५. जो क़िस्सा था ख़ुद से छुपाया हुआ
१०६. ज़रा देखो कहानी में भी ये मंज़र नहीं मिलते
१०७. ख़ता इक शख़्स की और सारी दुनिया से खिंचे रहना
१०८. दिमाग़ अब आप ख़ुद ही देखिए क्या मुझ बशर का है
१०९. बराबर जिसकी अज़मत का यहां दम भर रहे हैं लोग
११०. तनासुब इन दिनों हर चीज़ का बस इस क़दर समझो
१११. और इक हश्र सरे-शाम बयां कौन करे
११२. इसके मफ़हूम पे कुछ हम ही नज़र रखते थे
११३. सीख लीं हम से तेरे आरिज़ों-लब की बातें
११४. हम अपने नज़रयात को ठुकराये हुए हैं
११५. हालत उसे दिल की न दिखाई न बयां की
११६. क्या फ़िक्र जो दुश्मन है मेरे यार ग़ज़ल के
११७. ये लफ़्ज़, यह लहजा, यह ज़ुबां, कौन सुनेगा
११८. उलझाओ अगर तारे नफस में नहीं आता
११९. रफ़्तार आंधियों की अभी से बता के रख
१२०. जब भी किसी से तर्के – तअल्लुक़ किया करो
१२१. जाता रहा यक़ीं तो गुमा से भी जाइये
१२२. दो-चार साल और लड़ाई उसूल की
१२३ मस्लहत ऐसी भी क्या मैं तो ग़ज़ब करता हूँ
१२४. लिखने लगे हैं नाम हम अपना लक़ब के साथ
१२५. चेहरा किसी का सुनिए और आवाज़ देखिए

दर्द का सिलसिला भी जारी है
चारागर[१] का भी ख़ौफ तारी है

आरज़ूओं[२] से ख़ूब यारी है
कायनात[३] इन दिनों हमारी है

फ़लसफ़ी[४] अपनी राह ले चुपचाप
हमने ख़ुद ज़िन्दगी गुज़ारी है

ख़ूब बिकता है रोज़ माल इसका
वक़्त ख़्वाबों[५] का ब्यौपारी है

हम तो पहले ही कह रहे थे मियां
शायरी[६] सिर्फ शेरकारी[७] है।

---

१. मसीहा २. इच्छाओं ३. सृष्टि ४. दार्शनिक ५. सपनों ६. कविता ७. काव्य गढ़ना (यानी कृत्रिम कविता)

मेरे वजूद[१] से कम तेरी जान थोड़ी है
फ़िसाद[२] तेरे-मेरे दरम्यान[३] थोड़ी है

यहाँ वहाँ की बुलन्दी[४] में शान[५] थोड़ी है
पहाड़ कुछ भी सही आसमान थोड़ी है

मिले बिना कोई रुत हम से जा नहीं सकती
हमारे सर पे कोई साइबान[६] थोड़ी है

यह वाक़्या[७] है कि दुश्मन से मिल गए हैं दोस्त
मेरा बयान बराये[८] बयान थोड़ी है

करम[९] है मुझ पे किसी और के जलाने को
वो शख़्स मुझ पे कोई मेहरबान थोड़ी है

"शुजा" शायरी होती है ज़ात[१०] के बल पर
मेरी कुमक[११] पे कोई ख़ानदान थोड़ी है

---

१. जान २. झगड़ा ३. बीच ४. ऊंचाई ५. बड़ाई ६. सर के ऊपर की छाया ७. सच्ची बात ८. केवल कहने के लिए ९. दया १०. किसी का अपना निजी व्यक्तित्व ११. सहायता

सुकूं[१] ज़मीने-क़नाअत[२] पे जब नज़र आया
तो आरज़ू[३] की बुलन्दी[४] से मैं उतर आया

हुजूमे-फ़िक्र[५] में तेरा ख़्याल[६]-दर आया[७]
कोई तो आशना[८] इस भीड़ में नज़र आया

रक़ीब[९] मेरे खिलाफ उसके कान भर आया
जो इस ग़रीब[१०] के बस का था काम, कर आया

हयातो-मौत[११] की कुछ साज़बाज़[१२] लगती है
तेरा ख़्याल गया और चारागर[१३] आया

दिलो-दिमाग़ की सब नफ़रतें बरैहना[१४] थीं
अचानक आज जो दुश्मन हमारे घर आया

जो हम से होगा वो हम भी ज़रुर कर लेंगे
अगर बहार का मौसम शबाब[१५] पर आया

वो जिससे पूरा तआर्रुफ़[१६] भी हो न पाया था
वो एक शख़्स[१७] हमें याद उम्र भर आया

तेरे क़सीदे[१८] से उसका भला तो क्या होता
"शुजा" कुछ तेरा उस्लूब[१९] ही निखर आया

---

१. शान्ति २. धैर्य की धरती ३. इच्छा ४. ऊंचाई ५. विचारों की भीड़ ६. ध्यान ७. घुस आया ८. परिचित ९. प्रतिद्वंदी प्रेमी १०. बेचारे ११. जिन्दगी और मौत १२. षड़यंत्र १३. मसीहा १४. नंगी १५. जवानी १६. परिचय १७. व्यक्ति १८. प्रशंसा १९. शैली ।

असर में देखिए अब कौन कम निकलता है
उधर से तेग़[1] इधर से कलम निकलता है

फ़िराक़[2] में तो वो मायूसी जान लेवा थी
पर आज वस्ल[3] में हैरत से दम निकलता है

हमारे दिल में तो घर सा बना लिया इसने
निकालने से कहीं दिल से ग़म निकलता है

मैं बेरूख़ी की शिकायत करूं भी क्या उससे
जो मुझको ग़ौर से देखे तो दम निकलता है

जो दाम मिलते हैं बेचो मताए[4] फ़न को "शुजा"
ये माल इन दिनों वैसे भी कम निकलता है

---

१. तलवार २. विरह ३. मिलन ४. लापरवाही ५. कला का धन ।

तेरे ख़ुलूस[१] नें आखों से हाल पूछा है।
हमारे दर्द को लफ़्ज़ों[२] ने घेर रक्खा है।
हर एक बात पे मुझ से सवाल करता है।
मेरा शऊर[३] मेरे खून का प्यासा है।
ज़मीन यूं ही नहीं घूमती किसी के गिर्द[४]।
मुझे भी दोस्तो दिन-रात जलना पड़ता है।
न इतने जोर से सोचो कि जाग उट्ठे वो।
खुदा अभी हमें तखलीक[५] करके सोया है।
मुझे करीब से देखो कुछ और दूर हटो।
तुम्हारी आँख उजाले से अब भी खीरा[६] है।

---

१. सहानुभूति २. शब्द ३. समझबूझ ४. चारों ओर ५. रचना ६. बहुत तेज उजाले से चुंधियाई हुई।

सितमगरों[१] की तबाही को आम कर देंगे
हमारे शहर के मजलूम[२] नाम कर देंगे
खुदा ने चाहा तो सब इंतजाम कर देंगे
गज़ल पे आए तो मतले[३] में काम कर देंगे
तुम्हारे जैसे जिए और कुछ नहीं कर पाए
हमारे जैसे मरे भी तो नाम कर देंगे
पड़े रहें तो कलन्दर[४], उठें तो फितना[५] हैं
हमें जगाया तो नींदें हराम कर देंगे
तुम एक उम्र से तम्हीद लिख रहे हो शुजा
हम एक लफ़्ज़ में क़िस्सा तमाम कर देंगे

---

१. अत्याचारी २. जिन पर अत्याचार किया जाये ३. ग़ज़ल की पहली पंक्ति ४. स्वीकार ५. समाप्ति ६. परिचय ७. शब्द ८. लाभ-हानि की चिन्ता से मुक्त मस्त व्यक्ति ९. उपद्रव ।

कहां कहां है ख़ुदा जाने राब्ता[१] दिल का
दिमाग़ से नहीं होगा मुक़ाबला[२] दिल का
उसे पता ही नहीं क्या है मरतबा[३] दिल का
ख़्याल ही नहीं करता वह बेवफा दिल का
इलाज तेरे तग़ाफ़ुल[४] ने कर दिया दिल का
बहुत दिनों से मिजाज़ आसमां पे था दिल का
तुम इंतज़ाम करोगे बताओ क्या दिल का
यहां तो ख़ुद नहीं मालूम मुददआ[५] दिल का
अजीब लोग हैं ये दिल को क्या समझते हैं
तबीब[६] जिस्म में ढूंढा किए पता दिल का
बस एक तर्ज़[७] बया की मिली है दाद[८] हमें
सुना के देख लिया सब को माजरा[९] दिल का
"शुजा" दिल की कहानी बस अब तमाम[१०] करो
बयान करने लगे हैं हमा शुमा[११] दिल का

---

१. संबंध २. बराबरी ३. स्थान ४. बेध्यानी ५. मांग ६. वैद्य ७. लिखने की शैली ८. वाह वाह ९. कहानी १०. समाप्त ११. हर कोई (ऐरा-ग़ैरा)।

रक़ीब[१] ये न समझ हम रहे ख़सारे[२] में
हमारा ज़िक्र[३] है सेयक़ूल के सिपारे[४] में
तमाम[५] बात समझ लो इक इस्तआरे[६] में
चमक नहीं रही उम्मीद[७] के सितारे में
हर एक ख़ूबी[८] नज़र आ गई तुम्हारे में
कमी बस एक यही रह गई हमारे में
हमारी राय का दुनिया को इंतज़ार रहा
हमीं ने ग़ौर[९] न की ज़िन्दगी के बारे में
कहीं छुपाए न बैठे हों अपने आप में हम
वो शख़्सियत[१०] जिसे हम ढूंढ़ते हैं सारे में
ख़ुदा हमारा सा उसलूब[११] भी किसी को न दे
ख़्याल बह गया ज़ोरे[१२] बयां के धारे में
ज़रा सा ख़ुद को भी बदलो तो लुत्फ़[१३] आए "शुजा"
हवा तो तुमने बदल डाली इक इशारे में

---

१. ओ शत्रु २. घाटे में ३. वर्णन ४. कुरान का एक खंड जिसमें खुदा ने कहा है कि वह उनका साथ देता है जो सहन करें और धीरज रखें ५. सम्पूर्ण ६. रुपक ७. आशा ८. अच्छाई ९. सोच विचार १०. व्यक्तित्व ११. शैली १२. शैली का जोर १३. मज़ा ।

उरुज[१] ही में नहीं है कमाल[२] सूरज का
ज़वाल[३] भी है बड़ा बे-मिसाल सूरज का
ज़मीन लूट चुकी सारा माल सूरज का
फिर आसमान पे पड़ता है काल[४] सूरज का
तुलूअ[५] में ही निहां[६] है मआल[७] सूरज का
अगरचे[८] शाम को पूछूंगा हाल सूरज का
उमीदें चांद के हमराह[९] डूब जाएंगी
सहर[१०] फिर आके बिछा देगी जाल सूरज का
दहकते दिन को ख़ुनक[११] चांदनी से उम्मीदें
अंधेरी रात के दिल में ख़्याल सूरज का
गुज़ारना है हर इक दिन इसी ज़मीं[१२] पे "शुजा"
बस अब दिमाग़ से ख़दशा[१३] निकाल सूरज का

---

१. उत्थान, उन्नति २. कलाकारी, कौशल ३. पतन ४. अकाल ५. उदय ६. छिपा हुआ ७. अंजाम, अन्त ८. यद्यपि ९. साथ १०. सुबह ११. ठण्डी १२. पृथ्वी १३. शंका।

शुरुअ में तो था मशहूर वलवला[१] मेरा
फिर उसके बाद पता भी नहीं चला मेरा
ज़बान[२] कोई भी समझा न इस्तआरों की[३]
इसीलिए तो मियां[४] और दिल जला मेरा
चन्द एक ख़्वाब ही बाक़ी[५] हैं, बाक़ी टूट चुके
अब ऐसा कौन-सा मुशिकल है मसअला[६] मेरा
सुकूते-दश्त[७] को तोड़े बग़ैर आता है
मिजाज़[८] ख़ूब समझता है ज़लज़ला[९] मेरा
गुज़र बसर के लिए हो गया हूं चुप, वर्ना
बयाने-दर्द[१०] है महबूब[११] मशग़ला[१२] मेरा
क़लम ने खूब ग़ज़ल गोई[१३] की "शुजा" लेकिन
ग़ज़ल सराई[१४] नहीं कर सका गला मेरा

---

१. जोश २. भाषा ३. प्रतिकात्मक ४. भई (बातचीत में सम्बोधित करने का शब्द) ५. शेष ६. समस्या ७. वीराने का सन्नाटा ८. स्वभाव ९. भूकम्प १०. दर्द की चर्चा ११. प्रिय १२. काम, शौक १३. ग़ज़ल लिखना (कहना) १४. ग़ज़ल गाना।

१२६. पहले हुआ जो करते थे हम वो नहीं रहे
१२७. अब दूर भी करो मेरे दिन-रात की कमी
१२८. जो ज़िन्दगी मिली, वो किताबों में लग गई
१२९. सामान मेरा अर्शे-बरीं पर पड़ा रहा
१३०. उस बेवफ़ा का शहर है और वक़्ते शाम है
१३१. कुछ भी न हाथ आया वसीयत के बावजूद
१३२. फ़र्सूदा क़ारईन को चक्कर में डाल दे
१३३. रखते हैं अपने ख़्वाबों को अब तक अज़ीज़ हम
१३४. दिल ने तेरी गली से किनारा नहीं किया
१३५. तू भी मेरे ख़्याल से होकर नहीं गया
१३६. टूटे हैं पांव और फ़लके हैं निगाह में
१३७. उसका ख़याल आ गया ज़िक्रे-अदू के बाद
१३८. बैठे बिठाए सब को परीशान कर दिया
१३९. पैग़ाम रोज उधर के इधर लाइए नहीं
१४०. सब ख़्वाब पूरे हो गए दिल भर गया मियां
१४१. उसका ख़्याल भी है बस अब नाम का ख़्याल
१४२. पानी की आड़ में ये समन्दर में कौन है
१४३. ये तय हुआ है कि ज़ब्त पर मिल्कियत हमारी
१४४. ऐसा भी जियां क्या है अगर ठीक नहीं है
१४५. ऐसे हालात में कर बैठे तमन्ना कैसे
१४६. उसको ना ख़्याल आए तो हम मुंह से कहें क्या
१४७. उम्मीद थी हमराह तो रस्ते में भटक गये
१४८. मेहरबां रात तो दे जाती है ख़्वाब एक से एक
१४९. जिस्म का ग़म नहीं खाया जाता
१५०. अब भी लगता है हमें हाथ में कासा अच्छा
१५१. अगर बोले तो पर्दा रह नहीं सकता क़लन्दर का

यही तो रखती है पहचान ख़ास[१] तन्हाई
कि बज़्म-बज़्म[२] मिलेगी उदास[३] तन्हाई
बुझा सकी न कहीं अपनी प्यास तन्हाई
तमाम[४] रात रही मेरे पास तन्हाई
हमें तो ख़ैर से है यूं भी रास[५] तन्हाई
उसे न कर दे कहीं बदहवास[६] तन्हाई
तसव्वुरात[७] पे क़ाबू हमें नहीं रहता
उतारती है जब अपना लिबास तन्हाई
मिया "शुजा" ये ख़ामोशी थोड़ी देर की है
अभी सुनाएगी क़िस्से[८] पचास तन्हाई

---

१. विशेष २. सभा सभा ३. दुखी, सुस्त ४. सारी ५. अनुरुप, माफिक
६. घबराया हुआ ७. कल्पनाएं ८. कथाएं ।

निकाल ज़ात[१] से बाहर निकाल तन्हाई
कमाल जब है कि शेरों में डाल तन्हाई

अज़ाबे-जां[२] भी जहां में नहीं कोई ऐसा
रफ़ीक़[३] भी है बड़ी बेमिसाल[४] तन्हाई

तमाम ज़िन्दगी दो वाक़ियात[५] में यूं है
उरुज[६] उसकी रफाक़त[७], ज़वाल[८] तन्हाई

कोई भी वक़्त हो, तेरा ही ज़िक्र[९] करती है
कभी तो पूछे हमारा भी हाल तन्हाई

अगरचे[१०] शहर में बिखरी है जा बजा[११] फिर भी
"शुजा" अपने लिए घर में पाल तन्हाई

---

१. अपने आप २. जान के लिए मुसीबत ३. दोस्त ४. अद्वितीय ५. घटनाओं ६. उत्थान ७. दोस्ती, साथ ८. पतन ९. चर्चा १०. यद्यपि ११. जगह-जगह ।

वहां आना जाना तो सब का रहा
हमारा ना जाना गज़ब[१] का रहा
उधर दोस्ती दोस्त करते रहे
मगर फैज[२] इधर मेरे रब का रहा
गया दश्त[३] को जो वो दीवाना था
मुफक्किर[४] तो बिस्तर में दुबका रहा
मिली दाद गलिब को हर शेर पर
बड़ा रौब नामो[५]-नसब का रहा
कभी ज़िन्दगी से नहीं मिल सके
अजब सिलसिला[६] रोज़ो[७] शब का रहा
वहां बेसबब[८] बन गई कायनात[९]
यहां सारा किस्सा सबब का रहा

.१. जोरदार २. कृपा ३. जंगल ४. बुद्धिजीवी ५. वंश ६. कड़ी ७. दिन रात ८. बिना कारण ९. सृष्टि ।

उड़ा क्या जो रुख़[१] पर हवा के उड़ा
कि इससे तो अच्छा हूं मैं बे उड़ा
किसी दिन अचानक क़रीब आके तू
तसव्वुर[२] के मेरे परख़चे[३] उड़ा
अभी तक नज़र में है अपना वजूद[४]
तख़्ययुल[५] ! ज़रा और ऊंचे उड़ा
जिसे सब समझते थे बे-बालो-पर[६]
वही इक परिन्दा[७] क़फ़स[८] ले उड़ा
"शुजा" आंधियों की करो फ़िक्र[९] तुम
वो आई सहर[१०] और मैं ये उड़ा

---

१. दिशा २. कल्पना ३. टुकड़े ४. अस्तित्व ५. कल्पना ६. बिना परों का ७. पक्षी ८. पिंजरा ९. चिंता १०. सुबह ।

सफ़र पर मेरे साथ चलता नहीं है
कोई घर से बाहर निकलता नहीं है
वही आज भी है, उदासी जो कल थी
अजब[१] है ये मौसम बदलता नहीं है
किधर तेरा रुजहान[२] है, तू ही जाने
मगर ग़ैर[३] अब हमसे जलता नहीं है
मैं जिसके लिए शायरी कर रहा हूं
वही शेर लफ़्ज़ों[४] में ढलता नहीं है

---

१. विचित्र २. रुचि ३. दुश्मन ४. शब्दों

मेरे चर्चे आम बहुत हैं
तेरे सर इल्ज़ाम[१] बहुत हैं
घर भी, महफ़िल[२] भी, बस्ती भी
तन्हाई[३] के नाम बहुत हैं
लावारिस फिरती है रुबाई[४]
और उमर ख़य्याम[५] बहुत हैं
अन्दर अन्दर बेकारी है
बाहर बाहर काम बहुत हैं
कौन "शुजा" अब लाए फ़लक[६] से
अपने ही पैग़ाम[७] बहुत हैं

---

१. आरोप २. बस्ती ३. एकात ४. चौकड़ी (कविता की एक शैली) ५. फारसी के प्रख्यात कवि जो रुबाई के लिए प्रमुख हैं ६. आकाश ७. संदेश।

आने वाले कल की बातें
जंगल में मंगल की बातें
हिज्र[१] की शब[२] में कौन सुनेगा
सब्र[३] के मीठे फल की बातें
दिल कहता है, दुनिया छोड़ो
देखो इस पागल की बातें
हम संजीदा[४] हो जाते हैं
करो न उस चंचल की बातें
मौसम बदला तो याद आई
धरती को बादल की बातें
आज तो कोई आस[५] नहीं है
छोड़ो यारों, कल की बातें
चांद उसके आगे क्या शै[६] है
क्यों करते हो हल्की बातें
सोने चांदी भी करते हैं
तांबे और पीतल की बातें
हम भी "शुजा" अब कर लेते हैं
मीठे बनकर छल की बातें

---

१. विरह २. रात ३. शान्ति ४. गम्भीर ५. आशा ६. वस्तु ।

दिन में तो पांव उठ गये थे दश्त[१] से घर के लिए
अब रात में वहशत[२] कहां से लाइए सर के लिए।

होता है कितना अहतमाम[३] इस दीदए तर[४] के लिए
ख़ामोशी बाहर के लिए और शोर अन्दर के लिए।

कितनी शबें[५] तारीक हैं एक रोज़े महशर[६] के लिए
कितने तमाशे देखने हैं एक मंज़र[७] के लिए।

आज आरज़ू पूरी भी करके ग़ैर[८] को हासिल नहीं
जो-जो मज़े कल हमने ख़ाली[९] आरज़ू करके लिए।

तख़लीक़[१०] को माहौल ही कुछ इस तरह का चाहिए
पत्थर हैं कारआमद[११] बहुत मुझ आईनागर[१२] के लिए।

---

१. वन २. दीवानापन ३. ताम-झाम ४. भीगी आंख ५. रातें ६. न्याय का दिन ७. दृश्य ८. खलनायक ९. केवल १०. रचना ११. काम में आने वाले १२. शीशा बनाने वाला।

दिल जल रहा है तो मियां आहो-फुग़ा[१] जल्दी करो
कल तक बदल जाएगा ये तर्ज़े-बयां[२] जल्दी करो

बाहर निकल कर अब कहीं ढूंढो अमां[३] जल्दी करो
गिरने लगा है ज़ात[४] का बोदा[५] मकां[६] जल्दी करो

उड़ते हुओं को घूरता है आसमां, जल्दी करो
परवाज़[७] पर बस अब लगीं पाबन्दियां, जल्दी करो

जितना भी हो, जैसे भी हो अस्लूब[८] बदलो शेर[९] का
महफिल[१०] से उठकर जा रहे हैं नुक्तादाँ[११] जल्दी करो

मक़्ता[१२] करो वर्ना "शुजा" पूरी ग़ज़ल जल जाएगी
वो उठ रहा है साफ़[१३] लफ़्ज़ों[१४] से धुआं जल्दी करो

---

१. खुलकर रोना धोना २. शैली ३. भई ४. अपना आप ५. कमज़ोर ६. मकान ७. उड़ान ८. शैली ९. काव्य १०. सभा ११. साहित्य और काव्य के पारखी १२. ग़ज़ल का अंतिम शेर १३. सामने १४. शब्दों ।

अब क़हर[१] भी मेरे ख़ुदा[२] का देखिए
बस होने वाला है धमाका देखिए

करना था हमको दोस्तों पर तबसरा[३]
और लिख गए अपना ही ख़ाका[४] देखिए

कैसा ग़ज़ब ढाया[५] मेरी तश्बीह[६] ने
बस इन दिनों चलना सबा[७] का देखिए

बेनाम-सी कर दी हमारी शख़्सियत[८]
क्या वार[९] है उसकी वफ़ा[१०] का देखिए

मौसम बदल जाते हैं ख़ुद ही ख़ुद "शुजा"
बस बैठे बैठे रुख़ हवा का देखिए

---

१. विनाशकारी क्रोध २. भगवान ३. टीका टिप्पणी ४. रेखा चित्र ५. क्या धूम मचा दी ६. उपमा ७. हवा ८. व्यक्तित्व ९. आक्रमण १०. वफादारी ।

शुजा ख़ावर की ग़ज़लों के बहाने...

* *कमलेश्वर*

तो, बात यहाँ से शुरू करता हूं। मैं शहर मैनपुरी का रहने वाला हूं। मैनपुरी ज़िले के लिए दो मज़बूत कंधे मौजूद हैं — एक ज़िला एटा, जहाँ अमीर ख़ुसरो ने जन्म लिया और दूसरा ज़िला आगरा — जहाँ ग़ालिब पैदा हुए। इसीलिए शायद मुझे शुजा ख़ावर की ग़ज़लों पर कुछ कहने का हक़ हासिल है, क्योंकि अमीर खुसरो और ग़ालिब मेरे पूर्वज भी है और पड़ौसी भी। एक ने मुझे खड़ी बोली दी और दूसरे ने मुझे हिंदवी-उर्दू ग़ज़ल दी।

यूं तो ग़ज़ल "वली" दक्कनी के ज़माने से वजूद मे आ गई थी, लेकिन ग़ज़ल की भरपूर परम्परा दिल्ली और लखनऊ से शुरू हुई।

मैं सारे खतरे उठाकर यह ज़रूर कहना चाहूंगा कि हिन्दी गीत लोकगीत और हमारी खड़ी बोली से विकसित हिन्दी गीत और उर्दू ग़ज़ल एक लौकिक यानी मजाज़ी परम्परा को निभाते रहे हैं — यहाँ तक कि वली, मीर, सौदा, ग़ालिब, फैज़, फिराक़, शमशेर बहादुर सिंह, दुष्यंत कुमार, अहमद फ़राज़ और शुजा ख़ावर तक ग़ज़ल में किसी प्रतिमा के तसव्वुर के बिना बात नहीं की जा सकती — चाहे वह इश्क-हक़ीक़ी हो या इश्क-मजाज़ी। यही ग़ज़ल की हिंदुस्तानी कैफ़ियत है कि वह (चाहे भारत की हो या पाकिस्तान की) आसमान से नहीं, धरती से अपना रिश्ता जोड़ती है। जब शुजा ख़ावर यह कहते हैं कि

दोनों बिलकुल चुप रहते हैं खूब ज़माना[१] साज़ी है
शहरे ख़िरद[२] में दीवाना है शहरे जुनूं[३] में काज़ी[४] है

जीना कहते हैं जिसको उस खेल में हम माहिर[५] तो हैं
हार गए तो किस्मत अपनी जीत गए तो बाज़ी है

सच्ची बातें बरसों पहले जोशे जुनूं[६] में लिख दी थीं
बाद में हमने जो लिक़्खा है सब इन्शा पर दाज़ी[७] है

अपनी मर्ज़ी[८] के रस्ते पर जाऊ तो कैसे जाऊं
आगे आगे मुस्तक़बिल[९] है पीछे-पीछे माज़ी[१०] है

समझौता करवा ही दिया है आख़िर दूर अन्देशी[११] ने
देखो अब मैं भी ज़िन्दा हूं और दुनिया भी राज़ी है

---

१. दुनियादारी २. सूझ-बूझ ३. दीवानापन ४. सूझ-बूझ रखने वाला ज्ञानी ५. विशेषज्ञ ६. दीवानेपन का ज़ोर ७. निबन्ध लिखना ८. इच्छा ९. भविष्य १०. अतीत ११. दूर की सोचना ।

दिन के पास कहां जो हम रातों में माल बनाते हैं
बदहालों[१] को ख़्वाब ही शब भर[२] को ख़ुशहाल[३] बनाते हैं

उसको तसव्वुर[४] तक लाने में आप ही खो जाते हैं हम
ख़ुद ही फंस जाते हैं हम और ख़ुद ही जाल बनाते हैं

अदब[५] के बाज़ारों में इन शेरों की क़ीमत क्या मालूम
हम तो खाली कारीगर हैं हम तो माल बनाते हैं

जागते सोते ख़्वाब बुना करते हैं हम शब भर ऐसे
लड़की वाले जैसे रातों में पंडाल बनाते हैं

माहो साल[६] के मालिक लम्हों[७] से भी रहते हैं महरुम
हमको देखो लम्हों से भी माहो साल बनाते हैं

---

१. दुःखीगण २. केवल रात-रात के लिए ३. सुखीगण ४. कल्पना ५. साहित्य ६. महीने और वर्ष ७. पल और क्षण ।

तीर बनकर खैर[१] से हर दिल पे जब सीधा लगेगा
शेर मेरा दुश्मनों को भी बहुत अच्छा लगेगा

दश्त[२] को जा तो रहे हो सोच लो कैसा लगेगा
सब उधर ही जा रहे हैं दश्त में मेला लगेगा

खैर[३] हश्रे[४] आरज़ू पर तो तुम्हारा बस नहीं है
आरज़ू तो कर लो यारों आरजू में क्या लगेगा

सारे अन्दाज़े नजर के निस्बतन[५] होते हैं – मसलन[६]
हम नहीं होंगे तो हर कोताह[७] क़द लम्बा लगेगा

फसले गुल[८] जो कर रही है सामने है देख लीजे
मैं करूंगा कुछ तो नाम अब मेरी वहशत[९] का लगेगा

सरसरी[१०] अन्दाज़ से देखो तो महफ़िल रंग में है
गौर से देखो तो इक इक आदमी तन्हा लगेगा

जिन्दगी पर गौर करना छोड़ दोगे जब "शुजा" तुम
आह भी देगी मज़ा और दर्द भी मीठा लगेगा

---

१. सफलता पूवर्क चलो २. जंगल ३. चलो (माना कि) ४. अभिलाषा की दुर्गति ५. तुलनात्मक ६. उदाहरणत: ७. छोटे कद वाला ८. बाहर ९. दीवानापन १०. ऊपरी ।

कैसे तन्हाई के हाथों लुट गया इन्सान देखो
आओ मेरी चारपाई का शिकस्ता[१] बान देखो

नारसी[२] अपनी जगह है, देख लेना क्या बुरा है
आरज़ू[३] के शहर में फैला हुआ सामान देखो

डूबने से पहले मौजों में घिरे अच्छे लगोगे
यूं भी आएगा किनारों तक यही बुहरान[४] देखो

इक तहफ़्फ़ुज़[५] सा है उन मायूसियों[६] की हमरही[७] में
पड़ न जाए रास्ते में फिर कोई इमकान[८] देखो

इस तरह ख़्वाबों से रिश्ता तोड़ना अच्छा नहीं था
हो गई फिर बस्तियां की बस्तियां वीरान देखो

कब तलक ख़ुद ही निकालोगे "शुजा" अच्छी ज़मीनें[९]
एक दिन तुम भी किसी उस्ताद का दीवान[१०] देखो

---

१. टूटा हुआ २. पहुंच न होना ३. अभिलाषा ४. आपातकालीन स्थिति ५. सुरक्षा ६. निराशाओं ७. साथ ८. संभावना ९. ग़ज़ल का ढांचा १०. काव्य संग्रह ।

हुआ तो है उदू[१] का कुछ दबाव कम
पर अब भी है मेरी जानिब[२] झुकाव कम

हवाला[३] दो समन्दर की ख़ामोशी का
नदी शायद करे अपना बहाव कम

उसे छोड़ो, ज़माने से ही मिल आओ
करो तो शख़्सियत[४] का कुछ तनाव कम

करो कुछ इस्तिफ़ादा[५] दूसरों से भी
बयाने-ग़म[६] सुनो ज़्यादा, सुनाओ कम

तबीअत[७] और उलझती है हक़ीक़त[८] से
अब अपने ख़्वाब[९] ख़ुद को भी बताओ कम

लगी अन्दर की जब तेज़ी से बढ़ती है
तो हो जाता है बाहर से लगाव कम

तवज्जो[१०] अनकही नज़्मों[११] पे ज़्यादा है
जभी अपनी ग़ज़ल पर है रचाव[१२] कम

---

१. दुश्मनों, शत्रुओं २. और ३. संदर्भ ४. व्यक्तित्व ५. लाभ उठाना ६. दुख की चर्चा ७. मन ८. सच्चाई ९. सपने १०. ध्यान ११. कविताओं १२. साज सज्जा, श्रंगार ।

सही बात तो ये है कि तुम ग़लत न हम ग़लत
ग़ज़ल के शेर कहके यूं ही कर रहे हैं ग़म ग़लत[१]

ज़बान[२] ने कहा तो है कि सब जहां[३] में ठीक है
बयान दे रही साफ़ मेरी चश्मे-नम[४] ग़लत

वो रास्ते मिलें जो मंज़िलों[५] से भी अज़ीम[६] हों
कभी उठा के देखिए तो एक-दो क़दम ग़लत

शुमार[७] हश्रे-आरज़ू[८] न कीजे आरज़ू[९] के साथ
हिसाब[१०] ज़िन्दगी का आ रहा है एकदम ग़लत

जहां से चाहिए थी इब्तदा वहां है ख़ात्मा
किसी ने शरहे आर्ज़ू लिखी है यक क़लम ग़लत

---

१. दुख दूर २. मुख, जीभ ३. संसार ४. भीगी आंखे ५. गंतव्य ६. महान ७. गिन्ती न करें (यानी उसका हिसाब न लगाएं) ८. कामना का हश्र ९. कामना १०. लेखा जोखा (खाता)।

जो गुज़र जाए[१] दिन अब वही ठीक है
इस ख़ुदाई[२] में बस बन्दगी[३] ठीक है

ज़ीस्त[४] बेआरज़ू[५] कौन-सी ठीक है
और है भी तो किस काम की ठीक है

सोचना हो तो बस सोचिए उम्र भर
देखने में तो हर आदमी ठीक है

शब[६] को सूरज चढ़े, दिन में तारे रहें
आजकल वक़्त का भी कोई ठीक है

कुछ न कहना हो तो लफ़्ज़ ही लफ़्ज़[७] हैं
और कहना हो तो ख़ामोशी[८] ठीक है

शायरी की तुम्हें फ़िक्र[९] क्यों है "शुजा"
हो गई जो भी अच्छी-बुरी, ठीक है

---

१. बीत जाये २. सरकार ३. पूजा ४. जीवन ५. बिना किसी कामना के ६. रात ७. शब्द ही शब्द ८. मौन ९. चिंता ।

था यह रिश्ता कहाँ आह और वाह का
सब हुनर[१] इसमें है मेरे जर्राह[२] का
कैसे आदम की दुनिया बनी देखिए
काम इबलीस[३] का नाम अल्लाह का
बेनियाजी[४] का रंग ऐसा पक्का नहीं
बन्दा[५] तो मैं भी हूं हां मगर चाह का
चांद सूरज के बीच इख़्तलाफात[६] हैं
ख़ुद ही रखिए हिसाब अब हर इक माह का
फूल को पंखुड़ी-पंखुड़ी कर गया
क़त्ल वाजिब[७] है ग़ालिब के शर्राह[८] का
दोनों बाहम[९] नज़र आते हैं ख़्वाब में
एक पत्थर है मंजिल का एक राह का

---

१. कला २. शल्य चिकित्सक ३. शैतान ४. बिना स्वार्थ के अपने आप में मग्न रहना ५. स्वार्थ रखने वाला भगत ६. भेदभाव ७. आवश्यक ८. कविता की व्याख्या लिखने वाला ९. साथ-साथ ।

पाओगे बड़ी शौहरत[१] गर[२] काम ये कर जाओ
जीना नहीं आता तो ख़ामोशी से मर जाओ

यूं टूटना वैसे तो अच्छा नहीं होता है
अब टूट गए तो हर सम्त[३] बिखर जाओ

ये हाल[४] हुआ है तो किस काम का मुस्तक़बिल[५]
माज़ी[६] के समन्दर में चुपके से उतर जाओ

तब्दीलिए मौसम[७] को जाएं तो कहा जाएं
सब एक सा मौसम है इस वक़्त जिधर जाओ

जब आ ही गए उसके कूंचे[८] से गुज़र कर अब
जल्दी से लगे हाथों जां[९] से भी गुज़र जाओ

वैसे तो मुज़िर[१०] होगा ख़्वाबों की तरफ जाना
फिर लौट के मत आना बिलफ़र्ज[११] अगर जाओ

यूं आके फ़लक[१२] पर तुम ख़ामोश "शुजा" क्यों हो
या तोड़ लो तारों को या लौट के घर जाओ

---

१. प्रसिद्धि २. अगर ३. दिशा ४. वर्तमान ५. भविष्य ६. अतीत ७. मौसम बदलने के लिए ८. गली ९. जान, प्राण १०. जान बचाकर भागना ११. मान लो कि १२. आकाश।

सुकूं[१] और चैन तो ले लेगा देगा कुछ नहीं
तख़य्युल[२] सिर्फ बोलेगा करेगा कुछ नहीं

छुपा लो सुबह का मंज़र अंधेरी रात में
लुटा ये माल तो घर में बचेगा कुछ नहीं

अब इसको क्या बतायें पर हमें मालूम है
सितमगर[३] को सितम करके मिलेगा कुछ नहीं

ये दिल महफ़िल में तो क़ाबू में रहता है मगर
अकेले में ये रोया तो सुनेगा कुछ नही

न सुनने की शिकायत की तो अब शेवा[४] यह है
सुनेगा बात सारी और कहेगा कुछ नहीं

वो दिल को भा गया है तो उसे हासिल करो
मियां यूँ रोते रहने से बनेगा कुछ नहीं

यह इक पर्दा उठा कर सौ गिराती हैं शुजा
फ़क़त आँखों से देखा तो दिखेगा कुछ नहीं

---

१. चैन २. कल्पना ३. अत्याचारी ४. रंग ढंग ।

"बात यह है कि मसाइल तो वहाँ नीचे हैं
और मुलाक़ात हुआ करती है रब से ऊपर"

या फिर

"ईमान भी है ख़त्मे नबुव्वत पे हमारा
महसूस भी करते हैं पयम्बर की ज़रूरत"

तो इस बर्रे-सग़ीर के पाकिस्तानी ज़िले से भी वज़ीर आग़ा की आवाज़ उभरती है कि "हमें अपना रिश्ता आसमान से नहीं, धरती से जोड़ना है।"

तब मुझे धरती से जुड़े दिष्यंत कुमार और शुजा ख़ावर के चुभते और बेचैनी से भरे अशआर याद आते हैं।

फैज़ ने साहित्य के एक पूरे दौर और एक ख़ूबसूरत इंसानी सिद्धांत के लिए अपनी ज़िन्दगी बलिदान दी, जो आज नहीं तो कल परवान चढ़ेगा। इक़बाल जैसे बड़े शायर ने विदेशी असर के विरोध में ख़ुद को पैन-इस्लामिज़्म का पैरोकार बना लिया और वह इस्लाम की सबसे बड़ी देन — बराबरी और इंसानियत के पैरोकार की जगह एक इस्लामी मुल्क के शायर बनकर रह गए। ज़ाहिर है कि आज भी इक़बाल हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की सरहदों से बाहर निकलकर दुनिया के उतने बड़े शायर नहीं बन पाए, जितना उन्हें होना चाहिए था। इक़बाल रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे बड़े शायर हैं, पर मज़हब के नाम पर दो क़ौमों के सिद्धांत को तरजीह देकर उन्होंने ख़ुद अपने बड़प्पन को तराशा है और उसका ख़मियाज़ा उठाया है।

अपने वक़्त के शायरों को वली, मीर, सौदा, ग़ालिब, फैज़ और फ़िराक़ से आगे का शायर घोषित करना एक खतरनाक

लिखो उसके तब्बसुम[१] ने तसल्ली हर तरह कर दी
छुपा लो एक मिसरे[२] में ज़माने भर की बेदर्दी
सुराही एक तो साक़ी ने मेरी इस क़दर भर दी
पुरानी तशनगी[३] ने फिर बढ़ा दी मेरी सरदर्दी
लिहाफ़ों से हमेशा के लिए जाती नहीं सर्दी
अगर सर्दी से बचना है तो सुन "गल्लां" क़लन्दर "दी"
वो देखो कर्बला[४] फिर सामने है ग़ौर से देखो
उधर हथियार "लखां दे" इधर हिम्मत बहत्तर[५] "दी"
दवाई चारागर[६] ने दी भी तो हम मर नहीं पाए
मगर तेरे ना आने ने ये दुश्वारी भी हल कर दी
मिलन की रात वो बोला कहां है अब "शुजा" साहब
वो इसतक़लाल[७] वो हिम्मत वो खुद्दारी[८] वो पामर्दी[९]
तुम्हारी शायराना अज़मतों[१०] को ये छुपाती है
"शुजा" खावर उठा कर फेंक दो ये आज़ीं[११] वर्दी

---

१. मुस्कान २. कविता की एक पंक्ति ३. प्यास ४. व ५. यहां सच और झूठ के बीच ऐतिहासिक युद्ध मतलब है जो हज़रत हुसैन और उनके विरोधी यज़ीद के बीच कर्बला नामक स्थान पर हुआ जिसमें यज़ीद की सेना में लाखों थे और हज़रत हुसैन के साथ केवल ७२ साथी थे ६. वैद्य, हकीम ७. दृढ़ता ८. आत्म-सम्मान ९. पुरूष का पक्का इरादा १०. महानताओं ११. अस्थायी ।

जो क़िस्सा था ख़ुद से छिपाया हुआ।
वो था शहर भर को सुनाया हुआ॥

मुख़ालिफ़[१] से सुलहो सफ़ाई[२] जो की।
कई दोस्तों का सफ़ाया हुआ॥

जो महफ़िल में पहचानता तक न था।
तसव्वुर[३] में बैठा है आया हुआ॥

पहेली हम इक पूछते हैं बताओ।
जो अपना न था वो पराया हुआ॥

हर इक ज़ख़्म जायेगा मेरे ही साथ।
नमक सब ने है मेरा खाया हुआ॥

नज़र आ रहा है जो वो आसमां।
ये है मेरे रब[४] का बनाया हुआ॥

---

१. विरोधी २. मेल-मिलाप ३. कल्पना ४. भगवान

ज़रा देखो कहानी में भी ये मंज़र[१] नहीं मिलते
बड़ा अम्बार[२] है जिस्मों का लेकिन सर नहीं मिलते

पुराने फ़न[३] के माहिर[४] शहर में पहले ही उनक़ा[५] थे
नए फ़न[३] के भी अब माक़ूल[६] कारीगर नहीं मिलते

फ़लक[७] पर रोज़ कोई काम पड़ जाता है दुनिया का
जभी तो रात को हम अपने बिस्तर पर नहीं मिलते

किसी मौसम में दोनों ख़्वाहिशें[८] पूरी नहीं होती
चमन में फूल हों तो दश्त[९] में पत्थर नहीं मिलते

---

१. दृश्य २. ढ़ेर ३. कला ४. दक्ष ५. बहुत कम ६. उचित ७. आकाश ८. इच्छायें ९. वीराने ।

खता[१] इक शख़्स[२] की और सारी दुनिया से खिंचे रहना
मियां अच्छा नहीं लगता है यूं घर में पड़े रहना

यहां पर ठीक है बाहर से बे-हिस[३] ही बने रहना
मगर अन्दर की है बात और अन्दर से सजे रहना

किसी को ग़ौर[४] से अव्वल[५] तो देखेंगे नहीं ये लोग
अगर देखें तो अपनी ज़ात[६] के पीछे छुपे रहना

नहीं तब्दील होता तबसरों[७] से कोई भी किरदार[८]
तमाशाई को काफ़ी है तमाशा देखते रहना

न जाने कब से हम साबित कदम[९] लोगों का शेवा[१०] है
कोई उम्मीद रखना या किसी उम्मीद पे रहना

मुसीबत तो तब आती है जब अपनी बात कहनी हो
वगरना[११] सहल[१२] है औरों के मौक़फ़[१३] पर जमे रहना

बहुत से दोस्तों के चेहरे घर बैठे नज़र आए
बड़ा अच्छा रहा दुश्मन के घर के सामने रहना

---

१. गलती २. व्यक्ति ३. बे परवाह ४. ध्यानपूर्वक ५. पहले ६. वजूद ७. टीकाओं ८. चरित्र ९. स्थिर १०. तरीका ११. अन्यथा १२. सरल १३. मत।

दिमाग़ अब आप ख़ुद ही देखिए क्या मुझ बशर[१] का है
ये सब जंज़ीरें पांव में हैं और सौदा[२] सफ़र का है

वहां पर दिल जिगर की बात भी सुनता नहीं कोई
यहां पर मसअला ही अस्ल में दिल और जिगर का है

सभी तूफ़ान की ज़द[३] पर हैं जब और साफ़ है नक़्शा
तो फिर क्या देखना यारों हवा का रूख़ किधर का है

ज़रूरत सख़्त इक पत्थर की है शीशों की बस्ती में
ज़रा मालूम तो हो क्या इरादा अपने सर का है

कहां से इब्तिदा कीजे बड़ी मुश्किल है दरवेशों[४] !
कहानी उम्र भर की और जलसा[५] रात भर का है

---

१. मनुष्य २. हर समय दिमाग़ में रहने वाला ख़्याल ३. खतरे में ४. चार दरवेशों (फकीरों) की व्यथा की ओर इशारा है ५. सभा ।

बराबर जिसकी अज़मत[१] का यहां दम भर रहे हैं लोग
उसी के सामने जाते हुए भी डर रहे हैं लोग

सितारे, चांद, सूरज, आसमां[२] सब ख़ैरियत[३] से हैं
वहां कुछ भी नहीं होता, यहा पर मर रहे हैं लोग

जो दिल ही दिल में शर्मिन्दा हैं अपनी सब ख़ताओं[४] पर
उसी के सामने मेरी बुराई कर रहे हैं लोग

तेरी फितना गरी[५] है हर तरफ ये जानते हैं सब
मगर इल्ज़ाम[६] रस्मन[७] आसमा[८] पर धर रहे हैं लोग

"शुजा" इनकी कई बातों से यों मालूम होता है
यहां आने से पहले चांद-तारों पर रहे हैं लोग

---

१. महानता २. आकाश ३. कुशलपूर्वक ४. भूलों पर ५. गड़बड़ी ६. आरोप ७. यों ही ८. विधाता ।

तनासुब[१] इन दिनों हर चीज़ का बस इस क़दर[२] समझो
नज़र आए गली भर तो उदासी[३] शहर भर समझो

सभी के पास कुछ कहने को है और उसने भेजा है
वही पैग़ाम[४] दे देगा, जिसे पैग़ाम्बर[५] समझो

मुकम्मल[६] रफ्ता-रफ्ता[७] हो रहा है एक इक किरदार[८]
फ़साना[९] जिन्दगी का बस मियां अंजाम[१०] पर समझो

"शुजा" आख़िर ग़ज़ल के शेर तुम कहने लगे कब से
न दर्दे-दिल से तुम वाक़िफ[११] न तुम सोज़े-जिगर[१२] समझो

---

१. अनुपात २. इतना ३. निराशा ४. संदेश ५. अवतार ६. सम्पूर्ण ७. धीरे-धीरे ८. पात्र ९. कहानी १०. अंत ११. परिचित १२. जिगर की आग।

और इक हश्र[१] सरे-शाम बपां[२] कौन करे
ख़ामोशी[३] चीख़ रही हो, तो सदा[४] कौन करे

लोग अच्छी तरह हमसे ही कहां वाक़िफ हैं
उसके बर्ताव[५] का लोगों से गिला[६] कौन करे

इन दिनों जब्र[७] बहुत ताज़ा मज़ामीन[८] का है
चाहते सब हैं मगर ज़िक्र[९] तेरा कौन करे

क्या मज़ेदार[१०] ख़्याल[११] आते हैं दिल में, लेकिन
इन ख़्यालात[१२] का इज़हार[१३] क्या, कौन करे

अब तो तेरा ही सहारा है उमीदे फ़र्दा[१४]
काम मेरा हो तो फिर तेरे सिवा कौन करे

---

१. हंगामा २. बरपा ३. मौन ४. ध्वनि ५. परिचित ६. व्यवहार ७. शिकायत ८. दबाव ९. नये-नये विषय (विचार) १०. चर्चा ११. अच्छे १२. विचार १३. विचारों १४. व्यक्त १५. भविष्य की आशा।

इसके मफ़हूम[१] पे कुछ हम ही नज़र रखते थे
यूँ तो रखने को सभी दर्दे-जिगर[२] रखते थे
आप जज़्बात[३] छुपाने का हुनर[४] रखते हैं
हम भी जज़्बात[३] छुपाने का हुनर रखते थे
हम पे वो वक़्त भी गुज़रा है कि नींद आती न थी
दर्द की गोद में जब तक कि न सर रखते थे
अब तो ख़ैर अपनी तबीअत[५] का भी मालूम नहीं
पहले हम सारे ज़माने की ख़बर रखते थे
कुछ नहीं होता किताबों पे किताबें लिख दो
अगले वक़्तों[६] में तो दो लफ़्ज़[७] असर रखते थे

---

१. भावार्थ २. जिगर का दर्द ३. भावनाएं ४. कला ५. स्वास्थ (कुशल)
६. प्राचीन समय ७. शब्द ।

सीख लीं हम से तेरे आरिज़ो-लब[१] की बातें
आजकल ग़ैर भी करता है ग़ज़ब[२] की बातें
वस्ल[३] की रात में भी हिज्र[४] की शब[५] की बातें
हम भी किस वक़्त सुनाने लगे कब की बातें
क्या सुनाते हो मुझे शेरों-अदब[६] की बातें
दोस्तों ख़ूब समझता हूं मैं सबकी बातें
गोया[७] सब क़हक़हे दिन के जो थे, मसनूई[८] थे
कौन मानेगा मियां नालाए-शब[९] की बातें
सीख लो काम गुज़ारे[१०] के लिए कोई "शुजा"
कुछ नहीं देंगी मियां, शेरो-अदब[६] की बातें

---

१. होठों २. ज़ोरदार ३. मिलन ४. विरह ५. रात ६. काव्य साहित्य ७. अर्थात ८. कृत्रिम ९. रात का रोना १०. जीविका ।

कोशिश है, पर मैं यह खतरा उठाना चाहता हूं।

हिन्दी में दुष्यंत कुमार, शेरजंग गर्ग आदि और उर्दू में निदा फ़ाज़ली, शहरयार और ख़ावर ने रचनात्मकता का भारी ख़तरा उठाया है और यह साबित किया है कि ग़ज़ल किसी मुल्क या उसकी सरहद की मोहताज नहीं – वह अपने वक़्त की बात करने के लिए आज़ाद है।

ग़ज़ल एक रविश है, एक परम्परा है जिसे तभी तोड़ा जा सकता है, जब एक गहरी और ज़ाती परम्परा को जन्म दिया जा सके – हिन्दी में दुष्यंत कुमार ने यही किया, और –

और उर्दू में निदा फ़ाज़ली, शहरयार और शुजा ख़ावर के लेखन ने एक आज़ाद, अमली और ज़ाती परम्परा को जन्म दिया। आप इन शायरों को किसी शायर से नहीं जोड़ सकते, पर ग़ज़ल की बदलती सोच और उसकी परम्परा से इन्हे जोड़े बग़ैर रह भी नहीं सकते। इतना ही नहीं, इन्होंने हिन्दी और उर्दू को एक बार फिर जोड़ दिया है।

तो शुरू की बात पर फिर लौट आऊं। कई सदियों तक अमीर खुसरो और ग़ालिब ने मेरा साथ दिया, लेकिन जब मेरे आज के इतिहास के घाव जब टीसते हैं और सोच-समझ की मेरी अंदरूनी दुनिया जब (६ दिसम्बर, ९२ और १२ मार्च, ९३) के बेहूदा और तूफानी ज़लज़लों के झटके खाकर सुन्न होने लगती है, तो कोई धर्मग्रन्थ और फ़लसफ़ा मेरा साथ नहीं देता – तब अपने दौर की यह ग़ज़लें ही मेरा साथ देती हैं।

शुजा ख़ावर की ग़ज़लें मेरे मन में उठते हर सवाल को या तो पेश करती हैं या उनके जवाब देती हैं। मेरी हर बेचैनी, मेरे दिल और दिमाग़ की बेकली, मेरी आत्मा की उदासी, मेरे दौर

हम अपने नज़रयात[१] को ठुकराये हुए हैं
वह हमको इसी शर्त पे अपनाये हुए हैं

सर धुनते हैं अख़बार को पढ़-पढ़ के यहां लोग
यानी अदब-व-शेर[२] से उकताये हुए हैं

तन्हाई का एक और मज़ा लूट रहा हूं
मेहमान मेरे घर में बहुत आए हुए हैं

मैंने अभी इन पर कोई तनक़ीद[३] नहीं की
कुछ दोस्त इसी बात से घबराये हुए हैं

क्या रक्खा है इस हलक़ये अहबाब[४] में लेकिन
हम तुमसे न मिलने की क़सम खाये हुए हैं

---

१. विचार २. कविता साहित्य ३. आलोचना ४. दोस्तों का समूह ।

हालत उसे दिल की न दिखाई ना बयां[१] की
ख़ैर[२] उसने न की बात तो हमने ही कहां की
पहले तो हंसा ज़ोर से फिर आहो[३] फ़ुग़ां की
मस्ती में क़लन्दर ने बड़ी दूर की हां की
एक उसका सरापा[४] है कि बस में नहीं आता
क्या हो गई हालत मेरे अन्दाज़े[५] बयां की
एक-एक सितमगर[६] को तसव्वुर[७] में बुलाकर
शमशीरे[८] ज़बां हमने भी क्या खूब रवां[९] की
तूफ़ाने मआनी[१०] मेरे हर लफ़्ज के पीछे
तेज़ी है हर एक शेर में दिल्ली की जबां की
सहराये[११] अदम का भी "शुजा" खूब मज़ा है
क्यूँ सोचते रहते हो फ़क़त[१२] गुलशने जां की

---

१. वर्णन करना २. चलो छोड़ो ३. रोना धोना ४. सर से पांव तक पूरा शारीरिक रूप रंग ५. वर्णन की शैली ६. अत्याचारी ७. कल्पना ८. जीभ की तलवार ९. तेज़ की१०. अर्थों का उबलता तूफान ११. अस्तित्व रहित वन १२. अस्तित्व का बाग़ ।

क्या फिक्र[१] जो दुश्मन हैं मेरे यार ग़ज़ल के
मद्दाह[२] भी मिल जाएंगे दो-चार ग़ज़ल के
तूफ़ान हो सीने[३] में मगर लब[४] पे ख़ामोशी
हज़रात[५] यही होते हैं आसार[६] ग़ज़ल के
दुनिया की इनायत[७] हो कि हो तेरी नवाज़िश[८]
ख़ाली नहीं जाते हैं कभी वार[९] ग़ज़ल के
अल्फ़ाज़[१०] के अल्फाज़ मआनी[११] के मआनी
होशियार[१२] बड़े होते हैं फ़नकार[१३] ग़ज़ल के
सौ बार ये सोचा कि बस अब नज़्म[१४] लिखेंगे
चक्कर में मगर आ गए हर बार ग़ज़ल के
बाज़ार में हर शख़्स क़सीदे[१५] का तलबगार[१६]
हम हैं कि लिए फिरते हैं अशआर[१७] ग़ज़ल के

---

१. चिंता २. प्रशंसक ३. छाती ४. होंठ ५. सज्जनों ६. पहचान ७. कृपा ८. मेहरबानी ९. हमले १०. शब्द ११. अर्थ १२. चतुर १३. कलाकार १४. कविता १५. प्रशंसा पत्र १६. इच्छुक १७. शेर ।

ये लफ्ज़[१], ये लहजा[२], ये जुबां[३], कौन सुनेगा
क्यों दश्त[४] में देते हो अज़ां[५], कौन सुनेगा
मौज़ू[६] भी यूँ कौन सा अच्छा है हमारा
और उस पे ये अन्दाज़[७], अमां[८] कौन सुनेगा
सारी ही ज़मीं[९] पर है सितम[१०] कर्बो-बला[११] का
इक मेरी शहादत[१२] का बयां[१३] कौन सुनेगा
अव्वल[१४] तो हम अब कहते नहीं कुछ भी किसी से
और हमने कहा भी तो यहां कौन सुनेगा
क्यों ख़्वाब[१५] सुनाते हो "शुजा" अपने हर इक को
बेकार की बातें ये मियां[१६], कौन सुनेगा

---

१. शब्द २. स्वर ३. भाषा ४. जंगल (वीराना) ५. पुकार ६. विषय ७. शैली ८. भई (अनौपचारिक बातचीत में सुनने वाले को सम्बोधित करने का शब्द) ९. धरती १०. अत्याचार ११. दुख और बेचैनी १२. बलिदान१३. गाथा १४. पहले १५. सपना १६. अरे भाई।

उलझाओ अगर तारे[१] नफ़स में नहीं आता
कल तेरा तसव्वुर[२] मेरे बस में नहीं आता
अफ़सोस[३] का इज़हार[४] तो करता है ख़तों में
पर हमदमे[५] देरी ना कफ़स[६] में नहीं आता
क्या हो गई हालत मेरे अन्दाज़े[७] बयां की
एक उसका सरापा है कि बस में नहीं आता
हम कुफ़्र[८] पे मजबूर नहीं होते मगर यार
खाता था जो अल्लाह की क़सम में —— नहीं आता
नाकामी[९] को भी चाहिए इक उम्र[१०] रफीकों[११]
ये मरहला[१२] दो-एक बरस में नहीं आता

---

१. सासों का तार २. कल्पना ३. सहानुभूति ४. वर्णन ५. पुराना मित्र ६. पिंजड़ा ७. शैली ८. अल्लाह के होने मे विश्वास न रखना ९. असफलता १०. युग ११. मित्रों १२. मंज़िल।

रफ़्तार आँधियों की अभी से बता के रख
इस मसअले[१] को सामने फ़ौरन[२] हवा के रख

मुमकिन है कल खुले कि यह सब कुछ फ़ुज़ूल[३] था
पस[४] आज के भी काम को कल पर उठा के रख

अच्छी नहीं है हर कसो-नाकस[५] की वाहवाह
अल्फ़ाज़[६] की तहों में मआनी[७] छुपा के रख

अच्छी गुज़र रही है तो इबहाम[८] ठीक है
तरसील[९] टेढ़े वक़्त की ख़ातिर[१०] बचा के रख

अन्दर से जो भी हाल हो घर का हुआ करे
बाहर से आरज़ू[११] का दरीचा[१२] सजा के रख

मुंह पर हरेक बात को लाता है क्यों "शुजा"
दो एक बातें दिल में भी बन्दे खुदा के रख

---

१. समस्या २. तुरन्त ३. बेकार ४. अतः ५. हर कोई ६. शब्द ७. अर्थ ८. गोल गोल बात ९. संचार (बात को समझना) १०. हेतु ११. इच्छा १२. खिड़की।

जब भी किसी से तर्के-तअल्लुक़[१] किया करो
जो बात मुंह पे आए वही कह दिया करो

पैदा जुनूं में एक नया ज़ाविया[२] करो
वहशत[३] बढ़े तो चाक गरेबां सिया करो

यह ज़ेरे-लब[४] की बात तो है शायरों की बात
तनक़ीद[५] कर रहे हो तो ऐलानिया[६] करो

उमीदे-मर्ग[७] है गुज़र औक़ात[८] के लिए
अब ज़िन्दगी का काम तो बस शौकिया करो

इस दर्जा[९] एहतियात[१०] भी अच्छी नहीं "शुजा"
जब कुछ न बन पड़े तो मियां रो लिया करो

---

१. संबंध विच्छेद २. पहलू ३. दीवानगी ४. धीमे से, होठों ही होठों में ५. टीका टिप्पणी ६. खुले आम ७. मृत्यु की आशा ८. समय बिताने ९. इतनी १०. सावधानी ।

जाता रहा यक़ीं[१] तो गुमा[२] से भी जाइये
जब दिल ही मर गया है तो जां से भी जाइये

दो गज़ ज़मीं हो अपनी तो क्यूँ रहिए इस जगह
ज़ाती मकान हो तो यहां से भी जाइये

मरने से रोक देता है कोई न कोई ख़्वाब
सब रास्ते हैं बंद जहां से भी जाइये

झुकिए तो यूं भी ढ़ंग से मिलता नहीं कोई
और "मैं" के फ़लसफ़े की अमां[४] से भी जाइये

अब तक मिला भी क्या है उन आँखों की मद्ह[५] से
क्यों इलतफ़ाते[६] पीरेमुग़ां[७] से भी जाइये

पड़ता है पासवाँ से बहुत ख़ानए ख़ुदा[८]
एक बार हो के कूए बुतां[९] से भी जाइये

---

१. विश्वास२. दुर्विश्वास ३. ये संसार ४. सुरक्षा ५. प्रशंसा ६. कृपा ७. साकी (मदिरा पिलाने वाला) ८. खुदा का घर ९. प्रिय की गली ।

दो-चार साल और लड़ाई उसूल[१] की
फिर खाइए मजे से कमाई उसूल की

लाज़िम[२] हुई है सब पे बड़ाई उसूल की
ज़ालिम भी दे रहा है दुहाई उसूल की

तर्के[३] ताल्लुक़ात का किस्सा भी खूब है
जब मसलेहत ने जान बचाई उसूल की

चुपचाप रोज़ो[४] शब के कुएं में पड़े रहो
बाहर गये तो फिर वही खाई उसूल की

बहने न देगी वक़्त की रफ़्तार[५] से हमें
सतहे[६] वजूद पर जो है काई उसूल की

हम को यह फ़ख्र[७] है कि हमें चुप सी लग गई
सबकी ज़बां पे बात जब आई उसूल की

---

१. सिद्धान्त २. आवश्यक ३. सम्बन्ध का टूटना ४. दिन रात ५. गति ६. व्यक्तित्व की ऊपरी परत । ७. गर्व

मसलेहत[१] ऐसी भी क्या मैं तो ग़ज़ब करता हूँ।
जिनका सर चाहिये उनका भी अदब करता हूँ।

कौन जानेगा तेरा ज़िक्र मै कब करता हूँ।
पहले इन होंठों को सी लेता हूँ तब करता हूँ।

दिल में सब कुछ है मगर ज़िक्र ग़ज़ल में तेरा।
न कभी पहले किया और न अब करता हूँ।

आप सब शायरी करते रहें ऐसे जैसे।
मुझको तिब[२] आती नहीं फिर भी मतब[३] करता हूँ।

अपनी ख़लवत[४] में तेरी बज़्म सजाने के बाद।
फिर तेरी बज़्म में ख़लवत को तलब करता हूँ।

---

१. जोड़ तोड़, होशयारी २. इलाज की विद्या ३. वैद्य के बैठने की जगह
४. एकान्त

की उलझनों, तूफानों और काली आंधियों की तरजुमानी करती हैं। ये ग़ज़लें मुझे भीतरी और बाहरी अंधेरों से उभारती हैं।

शुजा ख़ावर की ग़ज़लों से गुज़रते हुए मुझे लगता है कि यही तो मैं कहना चाहता था, जिसे कहने का ढंग और ढब मुझे नहीं आया। शुजा की ग़ज़लें मुझे, मेरे लेखन और मेरे वक़्त को निजी और गहरी पहचान देती हैं। ये ग़ज़लें आसान हैं, आमफ़हम हैं, आदमी की आशाओं, निराशाओं और चिंताओं से जुड़ी हुई हैं। इन्हें पढ़ा जा सकता है, सुना जा सकता है, गुनगुनाया जा सकता है और ज़रूरत पड़ने पर चाबुक की तरह इस्तेमाल किया ज़ा सकता है। ये ग़ज़लें हमारे अंदर के शौर और बाहर की बेचैनी को बड़े ज़ाती और कलात्मक अंदाज़ से पेश कर देती हैं - मुझे उन शब्दों, मुहावरों और उस माहौल से जोड़ देती हैं, जो खड़ी बोली के नाते मेरे अपने हैं, यानी जो ख़ालिस हिंदुस्तानी हैं

जगह-जगह मुझे इन शब्दों ने छुआ है

"यू तकना बदज़ौक़ी है
चांद को छत पर चढ़ कर देख"

यहाँ "तक" (यानी तकना) अपने "ना" के साथ ऐसा गड़ा हुआ है कि यह ना भी करता है और ख़ालिस बोलचाल तक भी पहुंचाता है। साथ ही यह हमारी ईद और करवा चौथ की याद एक साथ दिलाता है-

या फिर—

"प्यास का सुख और पानी का दुःख
जोड़ के देखो कितना बैठा"

लिखने लगे हैं नाम हम अपना लक़ब[१] के साथ
थोड़ा-सा इख़्तिलाफ़[२] जरूरी है सब के साथ

रखते[३] सफर में इतने न लो ख़्वाब अबके साथ
दो-एक ख़्वाब तो हैं चलो ख़ैर सबके साथ

इस कशमकश में जान गंवाना फ़ज़ूल[४] है
समझौता कर लिया है मियां रोज़ो-शब[५] के साथ

किस मुंह से शाहे-वक़्त[६] पे तनक़ीद[७] हम करें
हम खुद सलाम[८] करते हैं उसको अदब[९] के साथ

अस्लूब[१०] से जियादा कोई शै[११] नहीं अज़ीज़[१२]
लिखता हूं मदह[१३] मैं भी मगर अपने ढ़ब के साथ

उसका बयान[१४] हमने ग़ज़ल में किया तो है
वो सिलसिला कहां है मगर चश्मो-लब[१५] के साथ

फ़ुरसत मिले तो दिन के अंधेरों की सोचिए
तारीकियां[१६] तो रोज़ ही आएंगी शब[१७] के साथ

कुछ दोस्तों को पूछती फिरती है फिर हवा
कह दो "शुजा" छोड़ चुके वो तो कब के साथ

---

१. उपाधि २. विरोध ३. सामान ४. बेकार ५. दिन-रात ६. राजा (शासक) ७. टीका-टिप्पणी ८. प्रणाम ९. आदर १०. शैली ११. वस्तु १२. प्यारी १३. प्रशंसा १४. चर्चा १५. आंखें व होठ १६. अन्धकार १७. रात ।

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

चेहरा किसी का सुनिए और आवाज़ देखिए
मफ़हूम[१] फिर बताऊंगा, अल्फाज़[२] देखिए

ज़ोरे-बयान[३] क्यों मेरे टूटे परों पे है
ईमान की तो ये है कि परवाज़[४] देखिए

अब ये भी क़त्लो-खून[५] के बिल्कुल खिलाफ़ हैं
जिन्दा हैं अपने शहर के जांबाज़[६] देखिए

यारों ने दुश्मनों से बना ली मगर शुजा
हम दोस्तों से हो गए नाराज़ देखिए

---

१. अर्थ २. शब्द ३. बात का ज़ोर ४. उड़ान ५. मरना-मारना ६. शूरवीर।

पहले हुआ जो करते थे हम वो नहीं रहे
देखो शबे फ़िराक़[१] हैं और रो नहीं रहे

हम ग़ैर[२] और वो सभी अपनी जगह पे हैं
बस यूं कहो मियां कि ग़ज़लगो[३] नहीं रहे

यारों दिखाओ फिर कोई ऐसा हुनर[४] के बस
ग़ैरों की कोई फ़िक्र ही हमको नहीं रहे

तदबीर[५] भी है जान भी है मसलेहत[६] भी है
रहना न था बस एक हमें सो नहीं रहे

अशआर[७] से अयां[८] है तो अशआर मत पढ़ो
हम दिल के दाग तुमको दिखा तो नहीं रहे

---

१. विरह की रात २. खलनायक ३. ग़ज़ल लिखने वाले शायर४. कला ५. उपाय ६. जोड़ तोड़ ७. कविता की पंक्तियां ८. प्रकट ।

अब दूर भी करो मेरे दिन-रात की कमी
तुम तो अमीर हो तुम्हें किस बात की कमी

पहचान जिन्दगी के मरज़ की है बस यही
बोहतात माहो-साल[१] की लम्हात[२] की कमी

दिल खोलकर ना रोए तो जल जाओगे मियां
गरमी को तेज़ करती है बरसात की कमी

कुछ ख़्वाब देखना भी जरूरी है दोस्तों
ख़्वाबों से पूरी होती है हालात[३] की कमी

यारों की कामयाबी पे हम और क्या कहें
तक़दीर[४] का है फ़ैज़[५] और औक़ात[६] की कमी

मरने से पहले मर के न देखा अगर जनाब[७]
आख़िर तक रहेगी शुरूआत[८] की कमी

बेजा[९] तलाश करते हो क्यों कायनात[१०] में
ऐसी कमी "शुजा" जो है ज़ात की कमी

---

१. महीने व साल २. क्षण ३. परिस्थिति ४. भाग्य ५. वरदान ६. वास्तविक मूल्य ७. श्रीमान ८. आरम्भ ९. बेकार १०. सृष्टि ।

जो ज़िन्दगी मिली, वो किताबों में लग गई
और शायरी जो की वो निसाबों[१] में लग गई

तेरे बदन ने फूंक दिए फ़लसफ़े[२] तमाम[३]
कल रात आग मेरी किताबों में लग गई

इतनी हक़ीक़तों[४] को तो मैं क्या सभालता
थोड़ी-सी चोट मेरे ही ख़्वाबों[५] में लग गई

बिल्कुल नई ज़बान[६] में कुछ शेर कह "शुजा"
वो शायरी न थी जो निसाबों[१] मे लग गई

---

१. पाठ्यक्रम २. दर्शन ३. सब ४. सच्चाईयों ५. सपनों ६. भाषा शैली।

सामान मेरा अर्शे-बरीं[१] पर पड़ा रहा
मैं बद् दिमाग़[२] और कहीं पर पड़ा रहा

मायूसियों[३] ने घेर लिया सारा आसमां
रात आरज़ू का चांद ज़मीं पर पड़ा रहा

उसको खुदाइयों[४] की सज़ा[५] मिल गई मगर
सजदों[६] का दाग़ मेरी जबीं[७] पर पड़ा रहा

क्या बात थी कि मिलते रहे दूसरों को ताज[८]
फिर भी हुमा[९] का साया[१०] हमीं पर पड़ा रहा

ख़ानाबदोशियों[११] का सताया हुआ था वो
दो गज़ ज़मीं मिली तो वहीं पर पड़ा रहा

---

१. आकाश में सबसे ऊंचाई पर २. अहकारी ३. निराशाओं ४. राजपाट ५. दण्ड ६. पूजापाठ (सेवा) ७. माथा ८. राज मुकुट ९. एक पक्षी जिसके बारे में ये परम्परा बतायी जाती है कि वो जिसके सिर पर बैठ जाये वह व्यक्ति राजा बन जाता है १०. छाया ११. घर से बेघर।

उस बेवफा का शहर है और वक़्ते शाम[१] है
ऐसे में आरज़ू ——— बड़ी हिम्मत का काम है

हमको भी छोड़ता हुआ आगे निकल गया
जज़्बों[२] का क़ाफ़िला[३] भी बड़ा तेज़गाम[४] है

बे-आरज़ू भी ख़ुश हैं जमाने में बाज़[५] लोग
यां[६] आरज़ू के साथ भी जीना हराम है

तौबा[७] के सिलसिले में बस इतना कहेंगे हम
मसलक[८] हो बादानोशी[९] तो तौबा हराम[१०] है

नक़्क़ाद[११] तुमको पूछते आए थे कल "शुजा"
कहते थे शायरों में तुम्हारा भी नाम है

---

१. शाम का समय २. भावनाओं ३. कारवां ४. द्रुतगामी ५. कुछ ६. यहां ७. क्षमा ८. जीने का ढ़ंग ९. मदिरापान १०. निषेध ११. समीक्षक।

कुछ भी न हाथ आया वसिय्यत के बावजूद
नादार[१] हूं बुज़ुर्गों की दौलत के बावजूद

हिम्मत है तो जलाए हमारी तरह कोई
शम्मए-ख़्याल[२] बादे-हक़ीक़त[३] के बावजूद

अपने तअल्लुक़ात[४] सभी से रहे मगर
कुछ कशमकश[५] थी मेल-मुरव्वत[६] के बावजूद

यह वाक़ई[७] बड़े ही तअज्जुब[८] की बात है
दुनिया उसी जगह है क़यामत[९] के बावजूद

सबका ही नाम लेते हैं इक तुझ को छोड़कर
ख़ासा शऊर[१०] है हमें बहशत[११] के बावजूद

कल तक "शुजा" जिसकी इनायत[१२] पे हम जिए
अब जी रहे हैं उसकी इनायत के बावजूद

---

१. गरीब २. वैचारिक दीप ३. यथार्थ की आंधी ४. संबंध ५. दवींचातानी ६. मेल जोल ७. वास्तव में ८. आश्चर्य ९. प्रयल १०. समझ ११. दीवानगी १२. कृपा।

फ़र्सूदा[१] क़ारईन[२] को चक्कर में डाल दे
तारीकियों[३] को सुबह के मंज़र[४] में डाल दे
मौसम का जुल्म[५] फैलता जाता है हर तरफ
अर्ज़ी[६] इक आसमान के दफ़्तर में डाल दे
ग़रक़ाब[७] एक जाम में सब आंसूओं को कर
दरिया[८] तमाम[९] एक समन्दर में डाल दे
क़ब्ज़ा हमारे घर पे उदासी[१०] का है "शुजा"
ख़्वाबों[११] का माल और किसी घर में डाल दे

---

१. पुराने २. पाठक ३. अंधकारों ४. दृश्य ५. तबाही ६. प्रार्थना पत्र ७. डुबोना ८. नदी ९. सम्पूर्ण १०. निराशा ११. सपनों ।

बोलचाल के अंदाज़ की यह खासियत शुजा ख़ावर के निजी होने की बहुत बड़ी पहचान है, वैसी ही जैसी हिन्दी में दुष्यंत कुमार के पास है।

मुश्किल यह है कि मैं शुजा ख़ावर को जितना पढ़ता जाऊंगा उतना ही लगातार लिखता जाऊंगा। अपनी बात को आखिर कहीं रोकना तो पड़ेगा ही। इसलिए मैं उनकी एक ही रचना को पकड़कर अपनी बात ख़त्म करता हूं, क्योंकि इस एक ही रचना में मेरी तन्हाई, बेचैनी, उलझनों, सन्नाटों, ख़्वाहिशों और खुद्दारी की सारी दशाएं और मन के सारे रंग मौजूद हैं - और हमारे दौर की उबलती-खौलती, सुख-दुःख का हिसाब बैठाती, जीने की शर्तों और क़द्रों का एहसास दिलाती यह चंद लाइनें ही हमारी ज़िन्दगी का सच्चा फलसफा हैं, इन्हीं चंद लाइनों को रेखांकित करके अपनी बात ख़त्म करता हूं—

एक नहीं सब मंज़र देख
बाहर क्या है अंदर देख
और निकल शीशा बन कर
ले वो आया पत्थर देख
यूं तकना बद ज़ौक़ी है
चांद को छत पर चढ़ कर देख
इसके कहने में मत आ
झुक जायेगा यह सर देख

कितने चौड़े रस्ते हैं
अपनी गली के बाहर देख
पीरे मुग़ाँ की ख़ैर नहीं
तश्ना लबों के तेवर देख
झेल नहीं सकता पर झेल
देख नहीं सकता पर देख
ज़ात का घर छोटा है बहुत
ख़ावर और कोई घर देख

रखते हैं अपने ख़्वाबों[१] को अब तक अज़ीज़[२] हम
हालांकि इसमें हो गए दिल के मरीज़[३] हम
इसके बयान[४] से हुए हर दिल अज़ीज़[५] हम
ग़म[६] को समझ रहे थे छुपाने की चीज़ हम
ये कायनात[७] तो किसे मिलती है —— छोड़िए
अपनी ही ज़ात[८] से न हुए मुस्तफ़ीज़[९] हम
चारागरी[१०] की बात किसी और से करो
अब हो गए हैं यारों पुराने मरीज़[११] हम

---

१. सपनों २. प्यारा ३. रोगी ४. चर्चा ५. लोक़प्रिय ६. दुख ७. ससार ८. व्यक्तित्व ९. लाभान्वित १०. मसीहाई ११. रोगी ।

दिल ने तेरी गली से कनारा नहीं किया
ज़ालिम ने एक काम हमारा नहीं किया
हम बेख़यालियों[१] के जहन्नुम[२] में जल गए
जिस वक़्त भी ख़्याल[३] तुम्हारा नहीं किया
दुनिया की बात छोड़िए दुनिया तो गैर[४] थी
तुमने भी कुछ ख़्याल[३] हमारा नही किया
जब वक़्त अपने साथ था तो तुम नहीं मिले
अब तुम मले तो वक़्त ने यारा नही किया
सामां[५] उदासियों[६] का बहुत घर में था "शुजा"
एक उसकी आरजू पे गुज़ारा नहीं किया

---

१. खोये-खोये २. नर्क ३. ध्यान ४. बेगानी ५. सामान ६. निराशाओं ।

तू भी मेरे ख़्याल[१] से होकर नहीं गया
और मैं भी कुछ दिनों से फ़लक[२] पर नहीं गया
डर था वहां भी शहरे-हक़ीक़त[३] न हो कहीं
पस[४] मैं दयारे ख़्वाब[५] के अन्दर नहीं गया
हालांकि[६] उसके बाद मुलाक़ात भी हुई
दिल से तेरी जुदाई का मंज़र[७] नहीं गया
ख़ैर उसकी बेनियाजी[८] तो तस्लीम[९] है मगर
उसके बगैर मैं भी कोई मर नहीं गया

---

१. ध्यान २. आकाश ३. यथार्थ की नगरी ४. अतः ५. सपनों का संसार ६. यद्यपि ७. दृश्य ८. लापरवाही ९. स्वीकार ।

टूटे हैं पांव और फ़लक[१] है निगाह में
कुछ रह गई कमी मेरे हाले-तबाह[२] में
अपनी ही शख़्सियत[३] से हैं यूं जेरबार[४] हम
दब जाए जैसे शेर कोई वाह वाह में
वाइज़[५] भी जब से पीने लगा मेरे साथ साथ
बाक़ी नहीं रही कोई लज़्ज़त गुनाह में
कुछ शर्म अब तुझे भी तो आएगी शाहे-वक़्त[६]
ले हम भी आ गए हैं तेरी बारगाह[७] में
हमने ग़ज़ल में उसके सिवा सबसे बात की
अब इसको आप कुछ भी कहें इस्तिलाह[८] में
गर्मी है शहरे-दिल[९] में अभी तक मगर "शुजा"
माहौल काफ़ी सर्द[१०] है गिर्दो-नवाह[११] में

---

१. आकाश २. बुरी स्थिति ३. व्यक्तित्व ४. दबे हुए ५. धर्मोपदेशक ६. शासक, राजा ७. दरबार ८. शब्दावली ९. दिल की नगरी १०. ठण्डा ११. आसपास ।

उसका ख़्याल आ गया जिक्रे-उदू[१] के बाद
ठंडी हवाएं चलने लगीं गर्म लू के बाद

अपनी तलाश होगी तेरी जुस्तुजू[२] के बाद
ज़ाहिर[३] है हम नमाज़[४] पढ़ेंगे वुज़ू[५] के बाद

ऐसा लगा दीवाने से कल गुफ़्तगू[६] के बाद
कुछ और हो गया है गरीबाँ रफू के बाद

आख़िर अज़ीज़[७] क्यों न हों नाकामियां हमें
हासिल[८] हुइ हैं ये भी बड़ी जुस्तुजू[९] के बाद

इस क़ाफिए[१०] पे मक़्ता[११] बहुत ठीक है "शुजा"
कुछ भी नहीं है नारए अल्लाह हू[१२] के बाद

---

१. दुश्मनों की चर्चा २. खोज ३. स्पष्ट ४. पूजा ५. नमाज से पहले मुंह हाथ धोना ६. बातचीत ७. प्यारी ८. प्राप्त ९. प्रयास १०. तुकबंदी ११. ग़ज़ल का अन्तिम शेर १२. अल्लाह (भगवान) के नाम का नारा।

यह किस ने मुझ पे जँग का एलान कर दिया
अच्छे भले बशर को मुसलमान कर दिया

बैठे बिठाए सब को परिशान कर दिया
दीवानगी[१] ने शहर को वीरान[२] कर दिया

रात उसने दश्ते[३] जां को गुलिस्तान[४] कर दिया
हमने भी हर उसूल को क़ुर्बान[५] कर दिया

कैसे यहां समा गई वुसअत[६] जुनून[७] की
तंगी ने दश्त की मुझे हैरान कर दिया

शिकवे[८] से शख़्सियत[९] में हरारत[१०] ही और थी
यार उसके इलतफात[११] ने बेजान कर दिया

हर मसलेहत[१२] दिमाग की बेहद मुफीद[१३] थी
लेकिन ये दिल किसी पे नहीं मान कर दिय।

---

१. पागलपन २. उजाड़ ३. जंगल रूपी जान ४. बाग ५. न्यौछावर ६. फैलाव ७. दीवानापन ८. शिकायतें९. व्यक्तित्व१०. जोश ११. सद्भावपूर्ण व्यवहार १२. जोड़-तोड़ १३. लाभदायक।

पैगाम[१] रोज़ उधर के इधर लाइए नहीं
रातों में अब फ़लक[२] की तरफ जाइए नहीं
ऐसा बुरा था शहर तो पछताइये नहीं
अब दश्त[३] आ गया है तो घबराइए नहीं
उठवाये खुलूस[४] की दीवार बीच में
यारों को असलियत[५] कभी दिखलाइए नहीं
इस शर्त पर मैं भूल भी सकता हूं आपको
गर[६] आप भी कभी मुझे याद आइए नहीं
जो चाहिए हमें वो नहीं है किसी के पास
जो सब के पास है वो हमें चाहिए नहीं
कर देगी ठीक इनको समन्दर की ख़ामुशी[७]
दरियाओं के चढ़ाव से घबराइए नहीं
हां वस्ल[८] में दिखाइए जीकर तो बात है
बचकर "शुजा" हिज्र[९] में इतराइए नहीं

---

१. संदेश २. आकाश ३. जंगल (आवारा घूमने की जगह)४. लगाव (जो दिखाया जाये) ५. वास्तविकता (कड़ी सच्चाई) ६. अगर ७. शान्त रहने की दशा १२. मिलन १३. विरह ।

सब ख़्वाब पूरे हो गए दिल भर गया मियां
इस ज़िन्दगी के वास्ते मैं मर गया मियां

नूर[१] अन्दरूने[२] ज़ात से लेने गया तो था
तारीकी[३] इस क़दर[४] थी कि ख़ुद डर गया मियां

बाक़ी हिसाब छोड़िए वैसे तो हर तरह
यह साल पिछले साल से बेहतर गया मियां

होशो[५] हवास दोस्ती करते फिरें तो क्या
मैं दुश्मनों के बीच में पीकर गया मियां

मुश्किल पड़ेगी कल के मुअर्रिख़[६] को देखना
मैं घर गया ना आज सफर पर गया मियां

अगली सफ़ों[७] में अम्न[८] पसन्दी का शोर है
तन्हा[९] जिहाद[१०] कीजिए लश्कर[११] गया मियां

समझौता कर लिया है शहनशाहे[१२] वक्त से
अच्छा है रोज़ रोज़ का चक्कर गया मियां

---

१. अलौकिक प्रकाश २. अंतरात्मा ३. अंधेरा ४. अधिक ५. होशियारी ६. इतिहासकार ७. पंक्तियों ८. शांतिवाद ९. अकेले १०. सिद्धान्त पर आधारित युद्ध ११. सेना १२. वर्तमान राजा ।

उसका ख़्याल भी है बस अब नाम का ख़्याल
वहशत[१] ना हो सवार तो किस काम का ख़्याल

आग़ाज़[२] में ना कीजिए अंजाम[३] का ख़्याल
ये क्या मियां कि सुबह से ही शाम का ख़्याल

आवारगी[४] है अपनी फ़कत नाम के लिए
सहरा[५] में भी है घर के दरो[६] बाम का ख़्याल

हिकमत[७] ने तज़्रबों[८] से भी महरूम[९] कर दिया
दाने[१०] को देखते ही हुआ दाम[११] का ख़्याल

रोज इक नया जहां है निगाहों के सामने
करता नहीं फ़लक[१२] मेरे आराम का ख़्याल

---

१. पागलपन २. प्रारम्भ ३. परिणाम४. दीवानेपन में इधर-उधर घूमना ५. जंगल ६. दरो-दीवार ७. सूझ-बूझ ८. प्रयोग ९. वंचित १०. अन्य (पक्षी का) ११. जाल १२. आकाश ।

पानी की आड़ में ये समन्दर में कौन है
नज़रों को क्या पता है कि मंज़र[१] मे कौन है

यादों के ठैरने को जगह की कमी नहीं
तन्हाई के अलावा मेरे घर में कौन है

तारीफ़ अपनी तुझ से किए जा रहा है ग़ैर[२]
ये भी पता नहीं कि बराबर में कौन है

कुछ मंज़िलें अज़ीम[३] हैं, कुछ राह रौ अज़ीम[३]
देखें "शुजा" किसके मुक़द्दर में कौन है

---

१. दृश्य २. बेगाना ३. महान ।

शुजा ख़ावर की शायरी पर कुछ विचार –उर्दू से

प्रोफेसर आल अहमद सुरुर

कायनात और ज़ात में कुछ चल रही है आजकल
जब से अन्दर शोर है बाहर है सन्नाटा बहुत

शायरी सहीफ़ा-ए-कायनात (दोनों दुनियाओं का वर्णन) है। शायरी इन्कशाफ़े ज़ात (मनुष्य की अपनी हस्ती का इज़हार) है, दोनों बातें अपनी जगह सही हैं मगर आजकल यह एक कलीशे भी बन गए हैं अन्दर का शोर और बाहर का सन्नाटा इस बात को बड़े लुत्फ़ से पेश करता है और साथ-साथ शोर और सन्नाटे की बलाग़त (रचनात्मक विस्तार) के ज़रिए एक ख़ास रवैये पर तन्क़ीद (आलोचना) भी करता है, तन्क़ीद क्योंकि जारेहाना (उत्तेजित) नहीं है और सिर्फ़ हर तरह की इन्तहा पसंदी (विपल्वबाद) पर एक लतीफ़ (नाज़ुक) तन्ज़ है इसलिए पढ़ने वाला या सुनने वाला इस से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है। वह तरफ़दारी (ग़ालिब ने कहा था – हम सुख़न फहम हैं ग़ालिब के तरफ़दार नहीं) के बजाये सुंख़न फ़हमी (शायरी को समझना) का क़ायल हो जाता है

शायद एक और मिसाल मेरी बात को ज़्यादा वाज़ेह (स्पष्ट) कर दे:

"इस के बयान से हुए हरदिल अज़ीज़ हम
ग़म को समझ रहे थे छुपाने की चीज़ हम"

क़दरों (मूल्य) की उलट फेर और इस दौर में ज़ख़्मों की नुमायश के ज़रिए मक़बूलियत (लोकप्रियता) हासिल करने की रविश (अन्दाज़) पर यह एक दिलचस्प तबसरा है

वक़्त की परवाज़ (उड़ान) के साथ तारीख़ का अपने को दोहराना, राहे रास्त (सीधा रास्ता) का क़ायल होने के बावजूद इन्सान की कजरवी, (चाल का टेढ़ापन) यह आशोब (हंगामा) है जिस से सिर्फ़ रिक़्क़त (संवेदना) या रूमानियत, रजाइयत (आशावाद) या रवादारी से

ये तय हुआ है कि ज़ब्त[१] पर मिल्कियत[२] हमारी
और इसके बदले सितम[३] पर उसकी इज़ारादारी[४]
बदलती जाती है दिन-ब-दिन शख़्सियत[५] हमारी
तेरा तसव्वुर[६] भी आज, कल पड रहा है भारी
ये तेज़ चलती हुई हवाएं, ये बर्फ़बारी[७]
फिर आज बर्बाद कर दी यादों ने शाम सारी
रक़ीब[८] का काम बन गया शोख़[९] हरकतों से
गई अकारत[१०] तमाम यारों की बुर्दबारी[११]
तुम्हारी फितरत[१२] अजीब सी है "शुजा" ख़ावर
न दोस्तदारी[१३], न होशियारी[१४] न इनकिसारी[१५]

---

१. बरदाश्त २. स्वामित्व ३. अत्याचार ४. अधिपत्य ५. व्यक्तित्व ६. कल्पना ७. हिमपात ८. वह व्यक्ति जो हमारी प्रेमिका से प्यार करता हो (प्रतिद्वंदी) ९. चंचल १०. बेकार ११. गंभीरता १२. प्रकृति १३. मित्रभाव १४. चालाकी१५. शालीनता ।

ऐसा भी जियां[१] क्या है अगर ठीक नहीं है
अच्छा जी – हमारी ही नज़र ठीक नही है

इतना भी उदासी का असर ठीक नहीं है
सैहरा[२] में भी रोते हो कि घर ठीक नहीं है

हो जाना यूं ही शीरो शकर[३] ठीक नहीं है
तन से न जुदा[४] हो जो वो सर ठीक नहीं है

मुश्किल से तो हाथ आई है पर ठीक नहीं है
ईमान[५] की पूछो तो सहर ठीक नहीं है

देख – आंखों में जल-थल है, न यादों की तरफ जा
बरसात के मौसम में सफर ठीक नहीं है

नाले[६] के लिए रौनके शब[७] ठीक नहीं थीं
अब कीजे तबस्सुम[८] तो सहर[९] ठीक नहीं है

हमने ही बसाया था तुझे शहरे तमन्ना[१०]
और हम ही हुए शहर बदर[११], ठीक नहीं है

दिन भर तो कनारों की हिफ़ाज़त[१२] में थे हम लोग
अब रात में साहिल पे भंवर ठीक नहीं है

जल मरते हैं अहबाब[१३] "शुजा" देख के जिसको
हर शेर में ऐसा भी हुनर[१४] ठीक नहीं है

---

१. हानि २. वन ३. दूध और शक्कर के समान एक-दूसरे में मिल जाना ४. अलग ५. धर्म सत्य ६. जोर से रोना ७. रात की चमक-दमक ८. हंसना ९. भोर १०. अभिलाषा ११. नगर बाहर किया हुआ १२. सुरक्षा १३. कवि मित्र १४. कला।

ऐसे हालात[१] में कर बैठे तमन्ना[२] कैसे
दिल के मारों ने जिगर[३] इतना दिखाया कैसे
बात सब तर्के-तअल्लुक़[४] की किया करते हैं
सोचता कोई नहीं है के ये होगा कैसे
जैसे मौज़ू[५] बदल देता है तू रोज़ के रोज़[६]
अपने अस्लूब[७] को बदलूं में खुदाया[८] कैसे
घर से बाहर खुले मैदान में आकर देखो
रूख[९] बदल जाता है पल भर में हवा का कैसे
एक मंज़र[१०] भी हक़ीक़ी[११] नहीं लगता यारों
ऐसे देखेगा कोई रोज़ तमाशा कैसे
इज्तिनाब[१२] उसने किया बाद में, हैरत[१३] ये है
इस क़दर भीड़ में उसने मुझे देखा कैसे
इल्तिफ़ात[१४] उसका वहिश्त[१५] और तग़ाफ़ुल[१६] दोज़ख़[१७]
सिर्फ इक शख़्स[१८] बदल देता है, दुनिया कैसे
हम तो वैसे भी अकेले थे, मगर ये देखो
मजलिसी[१९] लोग भी मारे गए तन्हा[२०] कैसे

---

१. परिस्थिति २. इच्छा ३. साहस ४. सम्बन्ध-विच्छेद ५. विषय ६. प्रतिदिन ७. शैली ८. हे ! भगवान ९. दिशा १०. दृश्य ११. सच्चा १२. अलगाव १३. आश्चर्य १४. स्नेह १५. स्वर्ग १६. बेध्यानी, लापरवाही १७. नर्क १८. व्यक्ति १९. सभा सजाने वाले २०. अकेले।

उसको ना ख़्याल आए तो हम मुंह से कहें क्या
वह भी तो मिले हमसे हमीं उससे मिलें क्या

लश्कर[१] को बचाएंगी ये दो-चार सफें[२] क्या
और इनमें भी हर शख़्स ये कहता है हमें क्या

ये तो सभी कहते हैं कोई फ़िक्र[३] ना करना
ये कोई बताता नहीं हमको कि करें क्या

घर से तो चले आते हैं बाज़ार की जानिब[४]
बाज़ार में ये सोचते फिरते हैं कि लें क्या

जिस्मानी ताल्लुक़[५] पे ये शर्मिन्दगी[६] कैसी
आपस में बदन कुछ भी करें इससे हमें क्या

आँखों को किए बंद पड़े रहते हैं हम लोग
इस पर भी तो ख़्वाबों से है महरूम[७] करें क्या

दो-चार नहीं सैकड़ों शेर उस पे कहे हैं
इस पर भी वो समझे ना तो कदमों पे झुकें क्या

जब जश्ने सहर[८] हो तो चले आना खुदाओ
ये रात तो बन्दे ही गुजारेंगे तुम्हें क्या

ख़्वाबों से भी मिलते नहीं हालात के डर से
माथे से बड़ी हो गई यारों शिकनें क्या

---

१. सेना २. सेना की टुकड़ियां ३. चिन्ता ४. तरफ (ओर) ५. शारीरिक संबंध ६. लज्जा ७. वंचित ८. भोर समारोह ।

उम्मीद[१] थी हमराह[२] तो रस्ते में भटक गये
मायूसी[३] चली साथ तो हम दूर तलक गये

दिन भर तो किया मार्का[४] हालात से लेकिन
रात आई तो ख़्वाब आप ही आंखों से टपक गये

जागे हैं तो पाया है क़दम बोस[५] जहाँ को
क्या जानिए हम रात में क्या नींद में बक गये

सूरज के ज़माने में रहा चांद भी गुमनाम
सूरज पे पड़ा वक्त तो तारे भी चमक गये

मंज़िल है अगर दूर तो फिर फ़लसफ़ी[६] साहब
आप आगे चले जाइए हम लोग तो थक गये

साथ आये नहीं दश्त[७] तलक यार पुराने
रस्ते में हमें डाल के चुपके से सरक गये

मैं गाता रहा वस्ल के अशआर[८] तो चुप थे
और तहत[९] में इज़हारे तमन्ना[१०] पे तिनक गये

---

१. आशा २. साथ में ३. निराशा ४. मुक़ाबला ५. पैरों को छूते हुए ६. केवल उपदेश देने वाला विद्वान ७. वन (आवारा घूमने का स्थान) ८. मिलन के गीत ९. बिना गाये (साधारण स्वर में बोलना) १०. अभिलाषा को प्रकट करना।

मेहरबां[१] रात तो दे जाती है ख़्वाब एक से एक
दिन ही ज़ालिम है जो ढाता है अज़ाब[२] एक से एक

खूब जाहिल हूँ के पढ़ता हूं फ़क़त चेहरों को
गो कुतब खाने[३] में रखी है किताब एक से एक

बोलता रहता है मिम्बर[४] से वहां एक ही शख़्स[५]
अपने मैखाने[६] में करता है खिताब[७] एक से एक

सांस लेते हैं हक़ीक़त[८] की अमलदारी में
ख्वाब हम देखते हैं फिर भी जनाब एक से एक

आजकल तो खसोख़ाशाक[९] के भी लाले हैं
वरना क्या देखे नहीं हमने गुलाब एक से एक

मेरी ख़ामोशी से क़ायम है सवालों का भरम
बोलूँ तो मुझ को भी आता है जवाब एक से एक

छोड़ो ये बात करो और कोई बात "शुजा"
देख रखा है यहां आलीजनाब[१०] एक से एक

---

१. दयालु २. अत्याचार ३. पुस्तकालय ४. धार्मिक स्थान से बोलने का प्लेटफार्म ५. व्यक्ति ६. मदिरालय ७. सम्बोधन ८. राज़ ९. घास-फूंस १०. महोदयगण ।

जिस्म[१] का ग़म नहीं खाया जाता
इश्क[२] होता तो छुपाया जाता
आरज़ू को ना दबाया जाता
खुद को ऐसे ना बचाया जाता
अम्न[३] में सूख गया था जब ख़ून
जंग में कैसे बहाया जाता
तू ही नीचे ज़रा आ जा ऐ इश्क़
हमसे ऊपर नहीं आया जाता
जज़्बे दिल[४] की ही ख़ुदाई होती
इस पे ईमान[५] तो लाया जाता
कहीं तो रोक नज़र पर लगती
कोई पर्दा तो हटाया जाता
हम किधर के हैं किधर जाना है
कम से कम ये तो बताया जाता
अब लतीफ़े[६] भी रुला देते हैं
अब नहीं इनसे हंसाया जाता
अंदरूनी[७] है मर्ज़ क्या दिखलायें
जख़्म होता तो दिखाया जाता
उसको पा जाओ तो जानोगे "शुजा"
वो कहीं भी नहीं पाया जाता

---

१. शरीर २. सच्चा प्रेम (अशारीरिक प्रेम) ३. शान्तिवाद ४. दिल की सच्ची भावना ५. धर्म-विश्वास ६. चुटकुले ७. छिपा हुआ।

अब भी लगता है हमें हाथ में कासा[१] अच्छा
यानी छोड़ा है बुज़ुर्गों[२] ने असासा[३] अच्छा

न दवा अब है मुनासिब[४] न दिलासा[५] अच्छा
काम कर देगा मेरा दर्द ही खासा[६] अच्छा

शख़्सियत[७] अपनी उभरती है इसी पहलू से
तू समन्दर[८] है तो ये बन्दा[९] पियासा अच्छा

ऐसी कुछ राय नहीं रखते हम इन चीज़ों पर
उसका चेहरा हो तो लगता है मुहासा अच्छा

साथ में सारा ज़माना[१०] है तो किस काम का है
इतने लोगों से मियां एक शनासा[११] अच्छा

हम भी लिखेंगे तेरे हुस्न[१२] के मौज़ू[१३] पे कुछ
और हो जाए जो उस्लूब[१४] ज़रा-सा अच्छा

---

१. भीख का प्याला २. पूर्वजों ३. सम्पत्ति ४. उचित ५. सांत्वना ६. काफी ७. व्यक्तित्व ८. समुद्र ९. व्यक्ति १०. दुनिया ११. परिचित १२. सौन्दर्य १३. विषय १४. शैली ।

अगर बोले तो पर्दा रह नहीं सकता कलन्दर[१] का
न बोले तो भला किरदार[२] ही फिर क्या कलन्दर का
तमाशा शहर वालों ने किया अच्छा कलन्दर का
कहीं फ़ितरत[३] कलन्दर की कहीं चेहरा क़लन्दर का
हको[४] बातिल के किस्से[५] सुनके वह हंसना कलन्दर का
नहीं हंसता तो बोलो क्या बिगड़ जाता कलन्दर का
ताल्लुक़[६] ख़ूब शाहे[७] वक़्त से निकला क़लन्दर का
कहीं भी जाइये अब कुछ नहीं होता क़लन्दर का
उठाता है कोई और आजकल खर्चा कलन्दर का
न वो तेवर[८] क़लन्दर के ना वो लहजा[९] क़लन्दर का
सुना है आज भी है शादमां[१०] वह लोग जो कल थे
चलो जी ये भी अन्दाज़ा ग़लत निकला कलन्दर का
अभी तो लोग बस पत्थर घरों से फेंक देते हैं
किसी दिन देख लेना कत्ल[११] भी होगा कलन्दर का
बड़ा भारी तसादुम[१२] है नतीजा[१३] देखिए क्या हो
उम्मीदें ख़ैर अन्देशों[१४] की अन्देशा[१५] कलन्दर का
बस इतना है कि वह है मुतमइन[१६] और मैं परेशां हूं
मुक़द्दर तो मियां जैसा मेरा वैसा क़लन्दर का
"शुजा ख़ावर" ग़ज़ल में खुद को जाने क्या समझते हैं
क़लन्दर को सुनाने आए हैं किस्सा क़लन्दर का

---

१. मस्त व्यक्ति जो न अपनी चिंता करे न दूसरों की २. आचरण ३. आचरण ४. सत्य-असत्य ५. कथाऐं ६. तालमेल ७. वर्तमान राजा ८. अकड़ ९. बोलने का ढंग १०. प्रसन्न ११. हत्या १२. टकराव १३. परिणाम १४. शुभ चिन्तक १५. आशंका १६. सन्तुष्ट ।

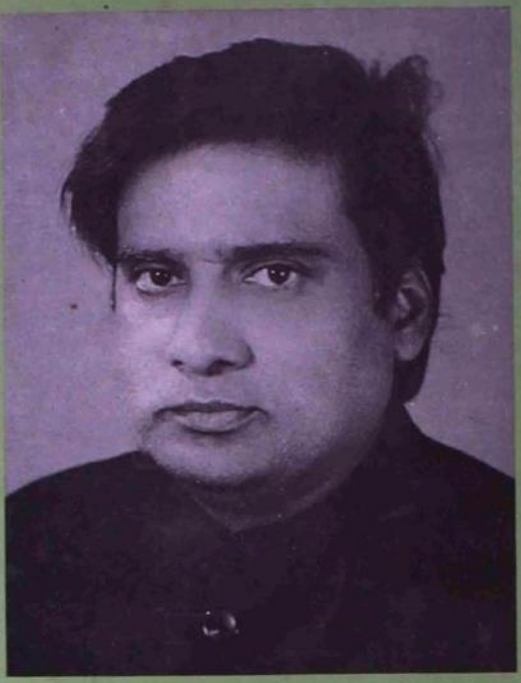

यूं देखने से मेरे क्या फ़ायदा किसी को।
देखा उसी ने मुझको जिनने सुख़न में देखा ॥

(मीर सोज़)

नहीं गुज़ारा जा सकता, इस के ज़हर को अपनी रूह (आत्मा) में जज़्ब करके इस में से अमृत निकालना होता है — यह अशआर देखिए:-

दरो दीवार पर इतना पड़ा है सारे दिन पानी
अगर कल धूप भी निकलेगी तो घर बैठ जाएगा।

कहाँ से इब्तदा कीजे बड़ी मुश्किल है दरवेशों
कहानी उम्र भर की और जलसा रात भर का है।

दिल जल रहा है तो मियां आहो फुग़ां जल्दी करो
कल तक बदल जाएगा यह तर्ज़े बयां जल्दी करो।

ख़ामोशियों ने समाअत को कर दिया बेकार
सकूत चीख रहा हो तो क्या सुनाई दे

घर भी बस्ती भी महफिल भी
तन्हाई के नाम बहुत हैं।

सुनाये वस्ल की शब हरकसोनाक़िस के शेर उसको
और अब फुरक़त में अपना शेर भी अच्छा नही लगता।

सामान मेरा अर्शे बरीं पर पड़ा रहा
मैं बद दिमाग़ और कहीं पर पड़ा रहा।

यह वाक़ई बड़े ही तअज्जुब की बात है
दुनिया इसी जगह है क़यामत के बावजूद।

तारीख़ की ख़ातिर भी दो एक निशां छोड़ो
अन्दर ही जलो लेकिन बाहर तो धुआं छोड़ो।

गर्म लफ़्जों और सर्द आहों पे मरता है ज़माना
दर्द के बाज़ार में अच्छी कमाई हो रही है।

शुजा ख़ावर की इस नुक्ता संजी (अन्दाज़) में मुझे एक मैचोरिटी या पुख़्तगी और मर्दानगी मिलती है। यह ज़िन्दगी के अजायबात (अद्भुत) और तज़ादात (प्रतिपिकूलता) हार मानने को तैयार नहीं। अपनी तन्ज़ के नश्तर से ज़हन को कचोके देती रहती है, उनके यहाँ नई-नई ज़मीनें और नई-नई रदीफ़ें भी अपनी तरफ मृतवज्जा

(आकर्षित) करती हैं मगर मेरे नज़दीक ज़्यादा अहमियत उनके लहजे की है, वह न वाइज़ (उपदेशक) हैं न नासेह मुशफ़िक़ (प्यार से उपदेश देने वाला) न नक़ीब ना पयाम्बर (रास्ता दिखाने वाला)। अपने दीदा-ए-हैरां (अचम्भित आँखों) के ज़रिए से उन्होंने बज़ाहिर (ऊपर से) एक खिलंडरेपन से ज़िन्दगी का मशाहेदा (देखना) किया है मगर इस खिलंडरेपन में एक कुलंदराना (कलन्दर के अन्दाज़ से) शान है उन्हें करतब बाज़ी (दाव-पेच) से बचना है और सिर्फ़ चौंकाने की लज़्ज़त से भी। मैं चाहता हूँ कि उनके दीदा-ए-हैरां की हैरानी न जाए ताकि वह उर्दू शायरी को ज़हन की तब से ताब (रोशनी और ताक़त) और फ़न (कला) की मुसर्रत (आनन्द) और बसीरत (ज्ञान) देर तक देते रहें।

ज़ोय अनसारी

क्या शुजा ख़ावर लफ़्ज़ों और इस्तआरों (रूपक) अलामतों (प्रतिरूप) और मुहावरों पर अपनी गिरफ़्त (पकड़) या चाबुक़दस्ती (गिरप्त) दिखाने और मनवाने की ख़ातिर बाज़ शेर निकालता है। क्या उसने ग़ज़ल की बाज़ ऐसी ज़मीनें खूसूसियत (विशेषता) से चुनी हैं जिन में अगले "मर्ज़बान" (यहाँ मतलब शायर) हल नहीं चला गए। क़ुदरते कनाम (काव्य की महारत) और फ़नी मशाक़ी (कला की महारत) इस कलाम की मिक़दार से नहीं इस सिफ़त (विशेषता) से ज़ाहिर होती है कि जहाँ कोई इस्तआरा या इज़हार जुब्बा व दस्तार (चोला आदि) पहने बड़े तकल्लुफ (रख रखाव) से जलवा अफ़रोज़ (विराजमान) है वही एक जाट अपना पग्गड़ जमाये बैठा है और दोनों पहलू व पहलू (साथ-साथ) हैं और दोनों की यकजाई (एक साथ होना) शायर की फ़नकारी में सरकशी (आम रविश से बग़ावत) को उभार कर दिखाती है। यह जिद्दत भी है नुदरत (नयापन) भी है शायर की शनाख़्त (पहचान) भी है और उसके शायराना हौंसले का कारनामा भी जो रायगां (बेकार) नहीं जाएगा अपने मानने वाले पैदा करके रहेगा।

"शुजा ख़ावर (शुजाउद्दीन साजिद) के बारे में"

पहला नाम	:	शुजाउद्दीन साजिद
जन्मतिथि	:	२४ दिसम्बर, १९४८
पिता का नाम	:	अमीर हुसैन
प्रथम रोज़गार	:	लेक्चरर अंग्रेज़ी, दिल्ली कालेज, देहली विश्वविद्यालय
वर्तमान रोज़गार	:	सरकारी मुलाज़मत
शायरी का प्रारम्भ	:	१९६४
प्रकाशित किताबें	:	

१. उर्दू शायरी में ताजमहल (१९६८) —सम्पादन
२. दूसरा शजर (१९७०) — नज़्म
३. वावैन (१९८२) — गज़लें और नज़्में
४. मिस्रए सानी (१९८७) — ग़ज़लें
५. गज़ल पारे (१९९०) — चुने हुए शेरों का संग्रह तीन लिपियों में
६. रश्के फारसी (१९९३) — ग़ज़लें

स्थायी पता	:	म०न० १७२२, रोद ग्रान स्ट्रीट, बाज़ार लाल कुआं, दिल्ली-११० ००६
वर्तमान पता	:	१, पार्क लेन, पार्क स्ट्रीट, नई दिल्ली-११० ००१.

(शुजा ख़ावर) शेर में गुफ़्तुगू (बातचीत) की और आम से मुहावरे में फ़लसफ़े की जो पुट मिला देते हैं व ख़ास उन्हीं का सदरी नुस्ख़ा (बिल्कुल अपना नुस्खा) है अब तक किसी के हाथ नहीं लगा। उनके बुजुर्गों और मआसरीन (अपने जमाने के लोग) में किसी ने यह बातें इस ढंग से नहीं कहीं थीं।

कुर्तुलएन हैदर (ज्ञानपीठ एवार्ड प्राप्त)

जदीद (आधुनिक) ग़ज़ल का दरूनी (कहरा) सिलसिला मीर से है कि मीर एक ग़ैर मामूली हिसयत (संवेदना) के शायर थे और आज के शायर ही की तरह एक बोहरानी अहद (उथल पुथल का ज़माना) में लिख रहे थे। शुजा ख़ावर और उनके हम अस्र (अपने जमाने के) शायरों का रावता (रिश्ता) १८वीं सदी के मीर से इसलिए भी गहरा है कि यह शौरा (कविगण) अभी एक ऐसे अहद (युग) में शेर कह रहे हैं जो ख़ुद अपने आप से नबरदआज़मा (अपने आप से उलझे हुए) हैं। शुजा ख़ावर की शायरी में तन्हाई के साथ-साथ समाजी मुजलिसियत (सामाजिक चेतना) और इन्फ़रादियत (अछूतापन) के शाना-ब-शाना रवायत (रस्मीपन) का शऊर जावजा (जगह-जगह) नज़र आता है। उनके यहाँ एक तरह के ग़ैर रस्मीपन और शायराना तसन्नो (बनावट) से इनहिराफ़ (छोड़ना) की कैफ़ियत कहीं कम और कहीं ज़्यादा मौजूद है।

कुछ अशआर अपनी बन्दिश और गहराई के सबब (कारण) मुतास्सिर (प्रभावित) करते हैं। ऐसे अशआर की जिद्दत (नयापन) और तीखापन तर्जुमे (अनुवाद) में क़ायम नहीं रह सकता था। शुजा ख़ावर के ऐसे मख़सूस (विशेष) अशआर हमारे ज़हन को इन मख़सूस अवामिल (मुद्दों) की तरफ ले जाते हैं जिन से उर्दू ज़बान के जख़ीरे (शब्दों का भंडार) और उनकी मानवियत (अर्थ) इबारत (आधारित) है।

न जाने क्यों शुजा ख़ावर की शायरी में उन क़लंदरों के नारों और आवाज़ों की गूंज देती है जो कभी पुरानी दिल्ली के ख़ामोश गली

कूंचों में शबाना (रात के समय) आवारागर्दी किया करते थे मगर इन ग़ज़लों में वह भी मौजूद है जिसे हम शहरी फ़हम व फ़रास्त (नागरिक चेतना) और इजतिमाई तजुर्बात (सामूहिक अनुभव) से मनसूब (कह सकते है) कर सकते हैं।

उर्दू के अहम (महत्वपूर्ण) और ग़ैर अहम शौरा ने बे-शुमार (अनगिनत) अशआर कहे हैं जो इन्सानी सूरते हाल पर ज़मान व मकान (समय व अंतरिक्ष) की हदूद (सीमाएं) से मावरा (परे) एक हमागीर (भरपूर) तबसरे का विकार (महत्व) और ऐतबार (विश्वसनीयता) रखते हैं। ऐसे अशआर में एक हमगीर और आफ़ाक़ी (भरपूर महान) तासीर होती है, उर्दू शायरी की इस खूसूसियत (विशेषता) ने इसे खास व आम के लिए यकसां (एक जैसे) तौर पर ख़ास्ते (महत्वपूर्ण) की चीज़ बनाया है, जिससे आलिम (ज्ञानी) और नादान दोनों असर इदराक (ज्ञान) और हज़ (मज़ा) लेते रहे हैं। शुजा ख़ावर उर्दू शायरी की इसी मख़सूस और अवामी रचायत (जनप्रणाली) के शायर हैं जिसमें अशआर ज़बान ज़द (जुबानी तौर पर याद) हो जाते हैं।

कुछ अशआर—

दुकानें शहर में सारी नई थीं
हमें सब कुछ पुराना चाहिए था

उठाता है कोई और आज कल ख़र्चा क़लंदर का
न वह तेवर क़लंदर के न वह लहजा क़लंदर का

तन्हाई का इक और मज़ा लूट रहा हूँ
मेहमान मेरे घर में बहुत आये हुए हैं।

गुज़िश्ता लम्हात हो बुला लो नविश्ता अलफ़ाज़ को मिला लो
जवाब तैयार कर के निकलो सवाल बाहर खड़ा हुआ है।

प्रोफ़ेसर मोहम्मद हसन

शुजा ख़ावर का असल कसरनामा यह है कि अक्सर (अधिकतर) अशआर तशबीह (उपमा) व इस्तआरे की बैसाखी के बग़ैर खड़े हैं और उसके बावस्फ (बावजूद) दिलों में डूबे जाते हैं। एहसासात की

रंगारंगी और तर्ज़े कलाम (बात कहने का ढंग) की शैवा बयानी (बिल्कुल अपनी बात को अपने ढंग से कहना) दिल जीते लेती है।

इस शायरी में मौसम के ऐसे पेश पा उफ़तादा (आम और घिसेपिटे) अनासिर (चीजें) जैसे के हवा, सूरज, पानी, चांदनी वग़ैरह अजीबो-ग़रीब मानवियत (अर्थपूर्णता) इख़तियार कर गये हैं। सबूत के लिए पानी, सूरज, हवा, पत्थर रदीफ़ वाली ग़ज़लें देख डालिये या फिर उन अशआर को सामने रखिये जिन में हवा का तज़करा (वर्णन) है और किस-किस ज़ाविये (कोण) से है।

शायद फिराक़ गोरखपुरी के बाद वह तन्हा ग़ज़ल गो शायर है जिस ने सीधी सादी वारदात को कैफ़ियत में ढाल दिया है।

ग़ज़ल सहले मुमतना (बड़ी आसानी व सादगी से बात कहने का अन्दाज) की शायरी को आला तरीन सतह (उच्चतम स्तर) की शायरी समझा जाता रहा है और सहले मुमतना की एक तारीफ़ यह भी है कि इसकी नसर (गद्य) न हो सके और शेर में नसर का सा दरो बस्त (रूप) क़ायम रहे, यह ख़ूसूसियत शुजा ख़ावर के कलाम में मौजूद है। एक जुमले में कहना हो तो शुजा ख़ावर की शायरी को मानूस अजनबियतों (जाना पहचाना अनजानापन) की शायरी कहा जा सकता है। हर लफ़्ज़ मानूस जाना पहचाना है मगर शुजा ख़ावर को कुछ ऐसा गुर याद है कि यही मानूस जाने पहचाने अलफ़ाज़ अनोखे बांके अजनबी से हो जाते हैं।

डा० ख़लीक़ अंजुम

एक दिलचस्प हकीकत यह है कि २०वीं सदी में इन दोनों शहरों (दिल्ली और लखनऊ) में सफ़े अव्वल के फनकार पैदा होना बन्द हो गए — २०वीं सदी के तमाम बड़े शायर दिल्ली और लखनऊ से बाहर पैदा हुए। सिर्फ इकबाल, जोश, फिराक़, जिगर, असग़र, हसरत, साग़र निजामी, फैज, रवीश सिद्दीकी, सरदार जाफरी, कैफी आजमी, जां निसार, अख्तर के नाम मिसाल के तौर पर पेश किए जा सकते हैं। दिल्ली में साइल और ब बेखुद पैदा हुए। जबान, मुहावरा और रोजमर्रा का इस्तेमाल (प्रयोग) सीखने के लिए इन शायरों का मुताला (अध्ययन) जरूरी है। लेकिन यह दोनों अपने अहद (युग) के मुमताज (महत्वपूर्ण) शायर तो हैं, बड़े शायर नहीं हैं।

बहुत तबील (लम्बे) अर्से के बाद सरजमीने दिल्ली से एक बड़ा शायर पैदा हुआ है यानि शुजा खावर। शुजा खावर को दिल्ली की जबान पर वो कुदरत (नियंत्रण) हासिल है जो "दाग़ स्कूल" के असातज़ा (उस्तादों) को थी। लेकिन वह सिर्फ जबान की शायरी नहीं करते। अपने गिर्द फैली हुई जिन्दगी पर उनकी गहरी नजर है। वह असरी (वर्तमान) जिन्दगी के मसायल को खास तौर से जिन्दगी के तजादात (अद्भुताओं) को इतनी बेतक्ल्लुफ़ी, बसाख्तगी (बहाव के साथ) सादगी से बयान करते हैं। मीर और गालिब में बुनियादी फर्क (मूल्य अंतर) यह था कि गालिब बाइज (महन्त / उपदेशक) की तरह आम इन्सानी सतह से बुलन्द होकर जिन्दगी की सच्चाई बयान करते थे। गालिब और मीर में वो ही फर्क है जो बाइज (महन्त) और सूफी में होता है। बाइज सिर्फ गुफ्तार (कथन) का गाजी (वीर) होता है जबकि सूफी गुफ्तार और किरदार (कर्म) दोनों का। बाइज मिम्बर पर खड़े होकर खुद को आम सतह (स्त्र) से बुलन्द (ऊंचा) कर लेता है। शुजा का रवय्या सूफी का है। वह मिम्बर पर खड़े होकर तकरीर नहीं करते बल्कि आम लोगों में रहकर उन्हीं के अन्दाज में गुफ्तगू करते हैं। जो उनका अकीदा (विश्वास) है वो ही उनकी जबान पर है — शुजा की एक अहम खूबी यह भी है कि वह आम बोलचाल के उन अल्फाज को शायरी में इस्तेमाल करके अदबी विकार (सम्मान) देते हैं जिनसे हमारे काबिले अहतराम खवास (आदरणीय और बड़े लोगों) को शदीद नफरत है —

आम जबान के अल्फाज का यह बेतवल्लुफ़ और गैर-रस्मी (अनौपचारिक) इस्तेमाल सिर्फ वे ही शायर या अदीब कर सकता है जिसे जबान पर गैर मामूली (असाधारण) कुदरत हो।

प्रोफेसर गोपी चन्द नारंग

"मुसल्लमात (जानी-मानी बातें) से गुरेज़ (परहेज) शुजा ख़ावर की शायरी का एक ख़ास अन्दाज़ है। इस शायरी में गहरी मानवियत है। उनकी ग़ज़ल का लहजा इन्तहाई (अधिक) बेतकल्लुफ़, ग़ैर रस्मी (परम्परा से अलग) और शख़्सी (व्यक्तिगत) है, जो ग़ज़ल में अपने डिक्शन के साथ आया है, अपने तमाम हमअसरों (अपने जमाने के कविगण) से अलग हट कर एक राह बना लेना बहत मुश्किल काम होता है।"

सहीह बात तो यह है कि तुम ग़लत न हम ग़लत।
ग़ज़ल के शेर कहके यूँ ही कर रहे हैं ग़म ग़लत।।

कुछ नहीं बोला तो मर जाएगा अन्दर से शुजा।
और अगर बोला तो फिर बाहर से मारा जाएगा।।

मेरा दिल हाथों में लो तो क्या तुम्हारा जाएगा
और मेरा ही समरक़न्द व – बुख़ारा[१] जाएगा

तश्नगी[२] का एक-इक पहलू उभारा जाएगा
वस्ल की शब[३] को भी फ़ुरक़त[४] में गुज़ारा जाएगा

कल यह मंसूबा[५] बनाया हमने पी लेने के बाद
आसमानों को ज़मीनों पर उतारा जाएगा

दोस्त समझाते तो हैं, लेकिन समझते यह नहीं
जो भी कुछ जैसे भी जाएगा, हमारा जाएगा

डूबने से फ़ायदा भी होगा और नुक़सान भी
ज़ेहन[६] से तूफान हाथों से किनारा जाएगा

दर्द जाएगा तो कुछ कुछ जाएगा, पर देखना
चैन जब जाएगा तो सारा का सारा जाएगा

कुछ नहीं बोला तो मर जाएगा अन्दर से "शुजा"
और अगर बोला तो फिर बाहर से मारा जाएगा ।

---

१. फार्सी कवि हाफिज़ के प्रसिद्ध शेर की तरफ इशारा है जिसमें कहा गया है कि यदि मेरा महबूब मेरा दिल अपने हाथों में ले तो मैं उस पर समरक़न्द व बुखार तक न्यौछावर कर दूंगा २. तृष्णा ३. मिलन की रात ४. जुदाई ५. योजना ६. दिमाग

कर लिया है ख़ुद से कितना दूर अपने आप को।
— एक दिन तो आइने में घूर अपने आप को।

एक जलवे के तसव्वुर[१] से हुआ है जब से ख़ाक[२]।
दिल समझ बैठा है कोहेतूर[३] अपने आप को।

आग इतनी है कि दुनिया को जला दे यह, मगर।
फूंकता है ज़ात[४] का तंदूर अपने आप को।

हमसे एक-एक शेर लेकर हमको ख़ाली कर दिया।
और ग़ज़ल ने कर लिया भरपूर अपने आप को।

ज़ुल्म का मौसम था और तक़रीर[५] आती थी मुझे।
दो ही दिन में कर लिया मशहूर[६] अपने आप को।

मुसतरद[७] कल रात कर दी सारी दुनिया यक क़लम[८]
और यूं[९] कहते हैं हम मजबूर अपने आप को।

अब यह ग़ैरों के तअस्सुब[१०] की शिकायत क्यों "शुजा।
कर चुके हैं जबकि नामंजूर[११] अपने, — आप को।

---

१. कल्पना २. राख ३. तूर नामक पहाड़ जिस पर यह धार्मिक विश्वास है कि एक अवतार मूसा के निवेदन पर अल्लाह ने अपनी झलक दिखाई जिसकी चमक और गर्मी से वह पहाड़ जलकर राख हो गया ४. व्यक्तित्व ५. भाषण ६. प्रसिद्ध ७. अस्वीकार ८. केवल एक शब्द लिखकर ९. अनुचित पक्षपात ११. अमान्य

हालात[१] न बदलें तो इसी बात पे रोना
बदलें तो बदलते हुए हालात पे रोना

पड़ जाएगा तुमको भी ग़मे-ज़ात[२] पे रोना
जिस बात पे हंसते हो, उसी बात पे रोना

इज़हार[३] में क़ुव्वत[४] है तो मिल जाएगा मौज़ू[५]
सूखा नहीं पड़ता है, तो बरसात पे रोना

इस शहर में सब ठीक है, क्या सोच रहे हो
रोना है तो अपने ही ख़यालात[६] पे रोना

मैं आपकी इस सर्द मिज़ाजी[७] पे हंसूंगा
और आप मेरी शिद्दते-जज़्बात[८] पे रोना.

---

१. परिस्थितियाँ २. अपने आप का दुख ३. अपनी बात कहना ४. शक्ति ५. विषय ६. विचारों ७. ठण्डा स्वभाव ८. भावनाओं की बहुतात

इस सर की ज़रूरत, कभी उस सर की ज़रूरत
पूरी नहीं होती मेरे पत्थर की ज़रुरत

बन्द आँखें किए रहते हैं बीनाइयों[१] वाले
दिखता हो तो फिर क्या किसी मंज़र[२] की ज़रूरत

दिल ऊपरी तस्कीन[३] पे राज़ी[४] नहीं होता
और लोग समझते नहीं अन्दर की ज़रूरत

ईमान भी है ख़त्मे नबुव्वत[५] पे हमारा
महसूस भी करते हैं पयम्बर[६] की ज़रूरत

वैसे तो सभी कुछ है मगर बहरे-नुमाइश[७]
क़तरे[८] को है बस एक समन्दर की ज़रूरत

फिर दश्त नवरदी[९] का चलन आम हुआ है
फिर होती है महसूस हमें घर की ज़रूरत

दुश्मन को "शुजा" आपका अस्लूब[१०] बहुत है
बरछी की ज़रुरत है, न ख़ंजर की ज़रूरत.

---

१. आँखों वाले २. दृश्य ३. सांत्वना ४. तैयार ५. मुसलमानों का यह धार्मिक विश्वास कि हज़रत मुहम्मद उनके अन्तिम अवतार थे। ६. अवतार ७. प्रदर्शनार्थ ८. बूंद ९. वीराने में भ्रमण १०. शैली

बात

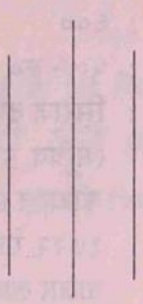

शुजा (शुजा ख़ावर)

सरदी भी ख़त्म हो गई बरसात भी गई ।
और इसके साथ गरमिये जज़्बात[१] भी गई ।

उसने मेरी किताब का दीबाचा[२] पढ लिया ।
अब तो कभी-कभी की मुलाक़ात भी गई ।

मैं आसमां पे जाके भी तारे ना ला सका ।
तुम भी हुए उदास मेरी बात भी गई ।

हम सूफ़ियों[३] का दोनों तरफ से ज़ियां[४] हुआ ।
इरफ़ाने ज़ात[५] भी ना हुआ रात भी गई ।

मिलने लगी है आम तो पीना भी कम हुआ ।
क़िल्लत[६] के ख़त्म होते ही बोहतात भी गई ।

---

१. भावनाओं की गर्मी २. परिचय ३. संत-सूफी ४. हानि ५. सिद्धि ६. कमी

कब किसने जान दी है कहाँ, कुछ नहीं पता ।
यां[१] इतना अहतमाम[२] है वां[३] कुछ नहीं पता ।

टूटेगा कब यह रिश्तये जां[४] कुछ नहीं पता ।
पूछो यह सब वहाँ से यहाँ कुछ नहीं पता ।

हम तो जनाब निकले थे ख़ाली बयान को ।
आया कहाँ से ज़ोरे बयां[५] कुछ नहीं पता ।

ज़ोरे क़लम[६] में इतना इज़ाफ़ा[७] हुआ है क्यों ।
जब से हुई है बंद ज़बां, कुछ नहीं पता ।

सब लिख रहे हैं मदह इसी की मगर हुज़ूर ।
किस पर गिरेगी बरक़े तपां[९] कुछ नहीं पता ।

दो चार ख़्वाहिशें[१०] हैं और एक जिन्दगी है बस ।
हमको यह सब जमान-व-मकां[११] कुछ नहीं पता ।

इतना पता है बस कि हमारे लिए नहीं ।
किसके लिए है सारा जहाँ कुछ नहीं पता ।

हम जाहिलों की बात तो है जाहिलों की बात ।
इन आलिमों[१२] को भी तो मियां कुछ नहीं पता ।

कुछ आर जार दैर-व-हरम[१३] में भी रख "शुजा" ।
कब छोड़ दे यह पीरेमुग़ां[१४] कुछ नहीं पता ।

---

१. यहाँ २. ताम-झाम ३. वहाँ ४. सांस की रस्सी ५. वर्णन ६. लेखन का जोर ७. वृद्धि ८. प्रशंसा लेख (चमचागीरी) ९. जलती हुई बिजली १०. अभिलाषाएं ११. काल व स्थान की बड़ी-बड़ी बातें १२. विद्वान १३. मंदिर-मस्जिद १४. साकी (मदिरा पिलाने वालों का प्रमुख)

अब तो उठता ही नहीं आरिज़ो लब[१] से ऊपर
सर में रहता तो मेरा इश्क़ था सबसे ऊपर

गुम हुए जाने कहाँ आया हूँ जबसे ऊपर
वो ख़्यालात जो रखता था मैं सबसे ऊपर

नीचे यह बढ़ती हुई सल्तनत[२] इबलीसों[३] की
और हम आँख लगाए हुए कब से ऊपर

बात यह है कि मसाइल[४] तो वहाँ नीचे हैं।
और मुलाक़ात हुआ करती है रब से ऊपर

कामयाबी[५] तो शुजा ऐसे नहीं मिल सकती।
आप जाते ही नहीं शेरो अदब[६] से ऊपर।

---

१. गाल और होंठ २. राज ३. राक्षस ४. समस्याएं ५. सफलता ६. कविता साहित्य

हक़ो बातिल[१] का सबक़ अब न पढ़ाओ उस्ताद ।
यह तो सब याद है कुछ और सुनाओ उस्ताद ।

नहीं बिकता तो दुकान अपनी बढ़ाओ उस्ताद ।
माल के दाम मगर यूं न गिराओ उस्ताद ।

आलिमाना[२] यह बयां ज़ुल्म[३] का अच्छा है मगर ।
ख़त्म होगा कि नहीं साफ बताओ उस्ताद ।

काम इस का भी नहीं चलता दिवानों के बग़ैर
लो, बहार आ गई फिर हाथ मिलाओ उस्ताद ।

जिए जाने का मर्ज़ तो हमें मारेगा ही ।
तुम भी मरने की कोई राह सुझाओ उस्ताद ।

जिस्म का क्या है जो चाहे वो झुका दे इसको ।
सर तो ऊंचा है इसे तो ना झुकाओ उस्ताद ।

देखो किस पाये[४] के अशआर[५] कहे हैं मैंने ।
अब तो इसलाह[६] का चक्कर न चलाओ उस्ताद ।

---

१. सत्य-असत्य २. विद्वानों के ढंग से ३. अत्याचार ४. स्तर ५. कविता की पंक्तियाँ ६. काट-छांट

बदन बदन से और लबों से लब मिलते हैं
इस से ज़्यादा हम तुमसे भी कब मिलते हैं

जितना आपस में सारे मजहब[१] मिलते हैं
उतना इनके मानने वाले कब मिलते हैं

उसकी बेदर्दी का शिकवा ठीक नहीं है
हम भी उससे कौन सा बेमतलब मिलते हैं

फ़ुरकत[२] में तो हरदम साम्ने रहते हैं वो
पर गायब हो जाते हैं जब-जब मिलते हैं

लम्हों[३] से मिलने ही नहीं देते माहो साल[४]
रोज यही है अब मिलते हैं तब मिलते हैं

क्या तहज़ीब[५] सिखाई दोस्तों ने – यानी[६] हम
पहले दुश्मन से कटते थे अब मिलते हैं

ऐसी मिसालें पहले कम थीं लेकिन अब तो
मैखाना मैखाना[७] तश्ना लब[८] मिलते हैं

वो तो कभी मिलते ही नहीं जिनसे मिलना है
जिन से नहीं मिलना वो रोजो शब मिलते हैं

"शुजा" रूतो का फेर है सारा रोते क्यों हो
मिलने की रुत आती है तो सब मिलते हैं

---

१. धर्म, २. विरह ३. क्षणों ४. महीने व साल ५. होशियारी ६. अर्थात ७. शराबियों का अड्डा ८. प्यासे

एक नहीं सब मंज़र देख
बाहर क्या है अन्दर देख

वो लाखों का लश्कर देख
और हम सिर्फ़ बहत्तर — देख

और निकल शीशा बनकर
ले वो आया पत्थर देख

यूँ तकना बदज़ौक़ी[१] है
चांद को छत पर चढ़कर देख

इसके कहने में मत आ
झुक जाएगा यह सर देख

कितने चौड़े रस्ते हैं
अपनी गली के बाहर देख

पीरे मुग़ा[२] की ख़ैर[३] नहीं
तशना[४] लबों के तेवर देख

झेल नहीं सकता पर झेल
देख नहीं सकता पर देख

ज़ात[५] का घर छोटा है बहुत
ख़ावर और कोई घर देख

---

१. बेढंगापन २. मदिरा पान करने वालों का मुखिया ३. सुरक्षा ४. प्यासे ५. अपना मात्र व्यक्तित्व

बीत गया मैं बैठा-बैठा
तेरे दर पर अच्छा बैठा

अब माज़ी[१] पर गुज़र बसर है
मुस्तक़बिल तो मैं खा बैठा

मेरे सिवा वो बोला सबसे
कैसा ठीक निशाना बैठा

तन्हाई में बज़्म[२] सजाई
और महफ़िल में तन्हा बैठा

रौंद के मंज़िल इक दीवाना
वापस रस्ते पर जा बैठा

आह की फ़ुरसत हिज्र[३] में कब थी
देखा सोचा उट्ठा बैठा

टूट गई चरपाई सारी
हिज्र का धंधा महंगा बैठा

जहाँ बिठा देंगे हम जैसे
इक-इक लफ़्ज़ रहेगा बैठा

प्यास का सुख और पानी का दुख
जोड़ के देखो कितना बैठा

---

१. अतीत्त २. महफिल ३. विरह

शहनशाह जिस तरह से ख़ानक़ाहों[१] में भी होते हैं
फ़क़ीरी सिलसिले[२] के लोग शाहों[३] में भी होते हैं

यक़ीं[४] आया है अब जब ख़ुद हमारे साथ बीती है
पढ़ा तो था कि रहज़न[५] सरबराहों[६] में भी होते हैं

सितम[७] को देखते रहना सितम से कम नहीं होता
मेरा दावा है कि क़ातिल गवाहों में भी होते हैं

भरी आबादियों में जान का ख़तरा ज़ियादा है
अगरचे[८] हादसे[९] सुनसान राहों में भी होते हैं

"शुजा" वो ख़ैरियत[१०] पूछें तो हैरत[११] में न पड़ जाना
परेशां[१२] करने वाले ख़ैरख़्वाहों[१३] में भी होते हैं

---

१. मठों २. साधू संबंधी ३. राजाओं ४. विश्वास ५. लूटने वाले ६. मार्ग दर्शकों ७. अत्याचार ८. यद्यपि ९. दुर्घटनाएं १०. कुशल मंगल ११. आश्चर्य १२. सताने वाले १३. शुभ चिंतकों

यहाँ तो क़ाफिले भर को अकेला छोड़ देते हैं
सभी चलते हों जिस पर हम वो रस्ता छोड़ देते हैं

जो ज़िन्दा हो उसे तो मार देते हैं यहाँ वाले
जो मरना चाहता हो उसको ज़िन्दा छोड़ देते हैं

क़लम में जोर जितना है जुदाई की बदौलत[१] है
मिलन के बाद लिखने वाले लिखना छोड़ देते हैं

कभी सैराब[२] कर जाता है ख़ाली अब्र[३] का मंजर
कभी सावन बरसकर भी प्यासा छोड़ देते हैं

जमीं के मसअलों[४] का हल अगर यूँ ही निकलता है
तो लो जी आज से हम तुमसे मिलना छोड़ देते हैं

ख़्यालो[५] ख़्वाब की दुनिया में दिल कुछ ऐसा लगता है
कि हम बाहर की दुनिया को अकेला छोड़ देते हैं

वो नंगे[६] आदम्यित ही सही पर यह बता ऐ दिल
पुराने दोस्तों को इस तरह क्या छोड़ देते हैं

यह दुनियादारी[७] और इरफान[८] का दावा "शुजा ख़ावर"
मियां इरफ़ान हो जाए तो दुनिया छोड़ देते हैं

---

१. कारण से २. पानी से संतुष्ट होना ३. घटा ४. समस्याओं ५. सपने व कल्पनाएं ६. मानवता के माथे पर कलंक ७. घर गृहस्थी ८. ज्ञान

अब शोरे गिरिया[१] देखना जब रात कम होने लगे।
सैलाब[२] तब आते हैं जब बरसात कम होने लगे।

क्या क्या नज़र आता है आँखें बंद करके देखिए।
तरसील[३] बढ़ती है तभी जब बात कम होने लगे।

उसने तरस खाकर बदन की भीख क्या दे दी हमें।
बस आसमानी[४] इश्क़ के जज़्बात कम होने लगे।

बस आँख को आराम दे बन्दे के बाहर कुछ नहीं
चश्मे तसव्वुर[५] खोल मौजूदात[६] कम होने लगे।

रूहानियत[७] के जब्र[८] ने सारे बदन को खा लिया।
सदियां[९] तो हाथ आती कहाँ, लम्हात[१०] कम होने लगे।

---

१. रोने-धोने का शोर २. बाढ़ ३. प्रेषण ४. अशारीरिक प्रेम (शुद्ध) ५. कल्पना की आँख ६. आसपास उपस्थित चीजें ७. आत्मा से संबंधित विचारधारा ८. दबाव ९. शताब्दियाँ १०. क्षण

सारे कापीराइट लेखक शुजा ख़ावर के नाम हैं

प्रकाशन का साल	:	१९९३
टाइटल	:	क़ैस रामपुरी
प्रकाशन	:	कमप्यूटाईप मीडिया २१२ दिल्ली चैम्बर दिल्ली गेट, नई दिल्ली - २.
संख्या	:	६००
मूल्य	:	५०/- रू०
प्रकाशक	:	सिराज दर्पण (सचिव, ग़ज़ल आबाद, कल्चरल सोसायटी, १७२२, रोद ग्रान स्ट्रीट, बाज़ार लाल कुंआ, दिल्ली-११०००६)
थोक विक्रेता	:	ग्रीन पब्लिशिंग हाऊस २११ दिल्ली चैम्बर दिल्ली गेट, नई दिल्ली - २.

यह किताब ब्यूरो ऑफ प्रोमोशन ऑफ उर्दू, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित हुई।

विजदान[१] में वो आया इलहाम[२] हुआ मुझको।
मैं भूल गया उसको वह भूल गया मुझको।

मैं गुमशुदा[३] लोगों की फेहरिस्त[४] में खो जाता।
वो तो मेरे दुश्मन ने पहचान लिया मुझको।

इस अहद[५] में क्या रख्खा था जिस पे बसर होती।
क्या होता जो विरसे[६] में मिलता न ख़ुदा मुझको।

इतनी बड़ी दुनिया में कब से मैं अकेला हूँ।
ऐ-रब्बे करीम[७] अपने बन्दों से मिला मुझको।

---

१. सहृदयता २. देववाणी ३. खोए हुए ४. सूची ५. युग ६. बपौती ७. दयालु भगवान

तारीख़[१] की ख़ातिर[२] भी दो-एक निशां[३] छोड़ो
अन्दर ही जलो लेकिन बाहर तो धुआं छोड़ो

ये तंगख़्याली[४] की बातें हैं मियां छोड़ो
एक उसका ही कूंचा[५] क्या सारा ही जहाँ[६] छोड़ो

कहते हैं कि तब आना जब आहो-फ़ुग़ां[७] छोड़ो
उस बज़्म[८] में जाओ तो इस दिल को कहां छोड़ो

इज़हार[९] की ख़ूबी[१०] का उस पर न असर[११] होगा
मिलने का सबब[१२] ढूंढो, फ़ुरक़त[१३] का बयां[१४] छोड़ो

इन तेज़ उजालों से बीनाई[१५] को खतरा है
जैसे भी बने फौरन[१६] ख़्वाबों का मकां[१७] छोड़ो

कौन आपकी बातों में आएगा "शुजा" साहब
अशआर[१८] से क्या दुनिया बदलेगी, अमां छोड़ो

---

१. इतिहास २. हेतु ३. निशानी ४. संकीर्ण विचार ५. गली ६. संसार ७. रोना चिल्लाना ८. सभा ९. विचार-व्यक्ति १०. विशेषता ११. प्रभाव १२. कारण १३. विरह १४. वर्णन १५. दृष्टि १६. तुरन्त १७. सपनों का घर १८. शेर शायरी

किसी ने सताया किसी ने नवाज़िश[१] करी
तपे अब्[२] में हम तो सूरज ने बारिश करी

तुम्हारी समझ में यह नुक्ता[३] नहीं आएगा
फ़लक[४] ने हमारी ही क्यों आज़माइश[५] करी

बराबर के रिश्ते में क्या गुफ़्तुगू का मज़ा
न फरमाया[६] तुमने न हमने गुज़ारिश[७] करी

जो ख़्वाहिश[८] से ना आशना[९] थे मज़े में रहे
और उसको मज़ा आ गया जिसने ख़्वाहिश करी

गोआ तेरी यादों की लज़्ज़त तो दिल्ली में है
भला सा कनारा समन्दर का और "फ़िश करी"

---

१. दया २. घटा ३. बात ४. आकाश ५. परीक्षा ६. कहा ७. निवेदन ८. इच्छा ९. अपरिचित

यह क़ाज़ी[१] कराएगा दंगा कोई।
फ़क़ीरों से लेता है पंगा कोई।

अनल हक़[२] की तफसीर करते हैं सब।
कभी दार[३] पे जाके टंगा कोई।

यहाँ बेलिबासी[४] में भी सौ लिबास।
वहाँ ज़र पहनकर भी नंगा कोई।

किसी से भी बनती नहीं देर तक।
मेरी राख में है पतंगा कोई।

भूला तो यह सब रोज़मर्रा[६] कि अब।
भला है कोई और चंगा कोई।

हक़ीक़त[७] पे आवाजा[८] कसता है रोज़।
तखय्युल[९] है यह या लफंगा कोई।

---

१. मुल्ला पंडित २. "मैं ही सत्य हूँ" यह आवाज एक मस्त सूफी सरमद ने लगायी था जिस पर दंड के तौर से उस समय के धार्मिक राजा ने उसको कत्ल करवा दिया था। ३. फांसी ४. वस्त्र हीनता ५. हीरे-मोती ६. कहावतें ७. वास्तविकता ८. छेडछाड़ करने के शब्द ९. कल्पना

इस ऐतबार[१] से बे-इन्तिहा[२] ज़रुरी है
पुकारने के लिए इक ख़ुदा[३] ज़रूरी है

हज़ार रंग में मुमकिन[४] है दर्द का इज़हार[५]
तेरे फ़िराक़[६] में मरना ही क्या ज़रूरी है

शऊर[७] शहर के हालात[८] का नहीं सब को
बयान[९] शहर के हालात का ज़रूरी है

कुछ ऐसे शेर हैं यारों, जो हम नहीं कहते
हर एक बात का इज़हार क्या ज़रुरी है

"शुजा" मौत से पहले ज़रूर जी लेना
यह काम भूल न जाना, बड़ा ज़रुरी है

---

१. हेतु २. बहुत ज्यादा ३. भगवान ४. संभव ५. व्यक्त करना ६. जुदाई ७. समझ ८. परिस्थिति ९. विवरण

बताए कौन अब इन ख़ानदान वालों को
के बेज़बानियाँ दी हैं ज़बान वालों को

हमारे जैसे ही बतलाएंगे हवा का रूख ।
यह बात क्या पता इन साएबान[३] वालों को ।

ख़ुद अपनी ज़ात[४] से है बातचीत बन्द यहाँ ।
पयाम[५] कौन दे सारे जहान वालों को ।

ध्यान से कहाँ सुनते हैं अपने दिल की बात ।
सुनें तो सांस भी भारी हो कान वालों को ।

वहाँ खुदा के सिवा कोई रह नहीं सकता ।
हटाओ बाक़ी सब इन आसमान वालों को ।

मुझे तलाश है हिन्दोस्तान वालों की ।
मेरी तलाश है हिन्दोस्तान वालों को ।

इन्हीं के फैज़[६] से यह इन-फरादियत[७] है जनाब ।
दुआएं दीजे मेरे ख़ानदान वालों को ।

रहे हम आप अगर अपने-अपने रस्तों पर ।
तो फायदा है फक़त[८] दरमियान[९] वालों को ।

यह जब गई तो ख़ुद इनको ख़बर नहीं होगी ।
अज़ीज़[१०] तो है बहुत जान, जान वालों को ।

---

१. बात कहने के चिह्न और इशारे २. चिह्न और इशारों की बात न समझने वाले (हर बात का वर्णन मांगने वाले) ३. छाया ४. व्यक्तित्व ५. संदेश ६. दया ७. सबसे अलग-थलग होना ८. केवल ९. बीच वाले १०. प्रिय

पेश कर दी है उसको जान तलक ।
खोलता जो नहीं ज़बान तलक ।

कुश्तो ख़ूं[१] का नहीं निशान तलक ।
अब है तलवार बस मियान[२] तलक ।

शोर करते हैं यह मुअज़्ज़िन[३] जब ।
सुनने देते नहीं अज़ान तलक ।

कहीं सर भी ना दोश[४] पर बाकी ।
और कहीं सर पे सायबान[५] तलक ।

फ़लसफ़े मेरी ताक में हैं मियां ।
घर से जाता हूँ बस दुकान तलक ।

क्या हवायें थीं उसके दामन[६] में ।
हिल गई दर्द की चटान तलक ।

पास होना है तो शुजा साहब ।
रहिये खामोश इम्तहान[७] तलक ।

---

१. मार-काट २. तलवार को रखने का कबर ३. मस्जिद में जोर-जोर से अजान देने वाले ४. कन्धा ५. छाया-छत्र ६. आंचल ७. परीक्षा

जैसा मंज़र[१] मिले, गवारा[२] कर
तब्सरे[३] छोड़ दे, नज़ारा कर[४]

वस्ल[५] किसको नसीब[६] होता है
"दाग़"[७] के शेर पर गुज़ारा कर[८]

अब तो जीने की आरज़ू भी नहीं
चारागर अब तो कोई चारा कर।

हम तो बन्दे हैं जुमबिशे-लब के
यूं न ख़ामोश रह के मारा कर।

अपने अल्लाह से हो जब शिकवा[९]
सब के अल्लाह को पुकारा कर।

---

१. दृश्य २. सहन ३. टिप्पणी ४. तमाशा देख ५. मिलन ६. भाग्य से मिलना ७. उर्दू के प्रसिद्ध कवि ८. काम चला ९. शिकायत

ना पूछो तो छिपाते कुछ नहीं हैं।
जो पूछो तो बताते कुछ नहीं हैं।

अता[१] करने को करदी चश्मे बीना[२]।
मगर हमको दिखाते कुछ नहीं हैं।

तख़य्युल[३] का ख़ज़ाना मिल गया है।
हम अब करते कराते कुछ नहीं है।

न कर इन रिश्ते नातों पर भरोसा।
के अब यह रिश्ते नाते कुछ नहीं हैं।

फलक[४] पर साज़िशें[५] होती हैं लेकिन।
ज़मीं को हम बताते कुछ नहीं हैं।

यह क्या रिन्दी[६] है, हमने तो सुना था।
जो पीते हैं वो खाते कुछ नहीं हैं।

तकल्लुम[७] यह कि हमने सी लिए लब।
तरन्नुम[८] यह कि गाते कुछ नहीं हैं।

अगरचे आना जाना है फलक पर।
मगर हम साथ लाते कुछ नहीं हैं।

बरसने पर अगर आ जाए बरसात।
तो फिर यह छतरी छाते कुछ नहीं हैं।

मुनाफा[९] उनको हो जाता है अक्सर।
कि जो घर से लगाते कुछ नहीं हैं।

---

१. प्रदान २. देखने समझने वाली आँख ३. कल्पना ४. आकाश ५. षड़यंत्र ६. शराब पीने का चलन ७. बोलना ८. गाना ९. लाभ

मसीहा[१] तुझको कैसा लग रहा है।
हमें तो ज़ख़्म[२] अच्छा लग रहा है।

फ़क़ीरे[३] शहर सीधा मत खड़ा हो।
अमीरे[४] शहर छोटा लग रहा है।

बलन्दी से फ़लक की[५] यह गिरा कौन।
तख़य्युल[६] का परिन्दा लग रहा है।

हक़ीक़त में[७] नहीं वैसा मेरा ज़ब्त।
तेरी महफिल में जैसा लग रहा है।

अगर रौनक़ है महफिल में तो फिर क्यों।
मुझे हर शख़्स[८] तन्हा लग रहा है।

कहानी में कहीं आया नहीं जो।
वही किरदार[९] सच्चा लग रहा है।

ना जाता लग रहा है दौरे ज़ुल्मत[१०]।
ना रोज़े हश्र[११] आता लग रहा है।

शुजा तेरी गुनहगारी[१२] के पीछे।
हमें हज का इरादा लग रहा है।

---

१. वैद्य, हकीम २. घाव ३. पीर-फकीर ४. राजा-महाराजा ५. आकाश की ऊंचाई ६. कल्पना ७. वास्तव में ८. व्यक्ति ९. पात्र १०. अंधकार का युग ११. बुरे-भले के निर्णय का दिन १२. पाप से भरी गतिविधियाँ

इन्तिसाब (समर्पण)

जी चाहता है के इस किताब का समर्पण जनाब **राजेन्द्र कुमार जैन**, *सीनियर एड़वोकेट, सुप्रीम कोर्ट के नाम करूं – सो मैंने किया – आर.के. जैन साहब आदमी भी ख़ूब हैं।*

– शुजा ख़ावर

क़लन्दरी[१] के फ़राइज़[२] निभाने पड़ते हैं।
अब अपने आप को तेवर[३] दिखाने पड़ते हैं।

पुराने शहरों से जिनको निकाला जाता है।
नए भी शहर उन्हीं को बसाने पड़ते हैं।

बताओ हाल तो ख़िलवत[४] में शर्म आती है।
नहीं बताओ तो महफ़िल में ताने पड़ते हैं।

यज़ीद[५] वालों को हर मात खानी पड़ती है।
हुसैन वालों को कुछ ज़ख़्म खाने पड़ते हैं।

जबान खोलो तो नाराज हों ख़िरद[६] वाले।
ख़मोश रहिए तो पीछे दीवाने पड़ते हैं।

वजूद[७] इन दिनों आसां नहीं है जिस्मों[८] का।
जनाब इनके लिए सर झुकाने पड़ते हैं।

मज़ा तो हमको भी सरगोशियों[९] में आता था।
पर आजकल हमें नारे लगाने पड़ते हैं।

रमोज़ेफन[१०] से भी वाक़िफ़[११] नहीं हैं जो उस्ताद।
तमाम शेर उसी को दिखाने पड़ते हैं।

कुछ और काम कर अब शायरी को छोड़ शुजा।
कि इसमें दूर से पैग़ाम लाने पड़ते हैं।

---

१. पीरी-फकीरी २. कर्तव्य ३. टेढ़ा और कड़ा रूख ४. एकांत ५. हज़रत हुसैन का प्रतिद्वंद्वी जो युद्ध जीत कर भी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका। ६. समझ-बूझ ७. जीवित रहना (उपस्थिति) ८. शरीर ९. धीरे-धीरे कानों में बोलना १०. काव्य कला के भेद ११. जानकार

फिराए शहर में तन्हा[१] ख़ुदा किसी को नहीं ।
जुनून[२] या तो सभी को हो या किसी को नहीं ।

नसीब[३] आजकल ऐसी अदा किसी को नहीं ।
फ़ना[४] भी हो गए हम और पता किसी को नहीं ।

हम इश्क़ वालों के हलक़े[५] से इसलिए उठ आए ।
बयान[६] करते थे सब और था किसी को नहीं ।

क़बा[७] का रौब तो पड़ जाएगा यहाँ लेकिन ।
दिखाइएगा यह बन्दे क़बा[८] किसी को नहीं ।

तेरे ज़वाल[९] का बस एक यही सबब है शुजा ।
लगाया सबसे मगर दिल दिया किसी को नहीं ।

---

१. अकेला २. दीवानापन "पागलपन" ३. उपलब्ध ४. समाप्त (सम्पन्न) ५. समूह (बैठक) ६. वर्णन ७. अति प्रभावित करने वाला लम्बा चौड़ा वस्त्र ८. ऐसे वस्त्र के बटन ९. पतन

बचने की ख़बर भी न किसी यार को पहुँचे ।
बेकार में सदमा[१] कहीं दो-चार को पहुँचे ।

तलवार से क्या चोट क़लमकार[२] को पहुँचे ।
वो धार क़लम में है कि तलवार को पहुँचे ।

ख़लक़त[३] तो हमें देखने आई थी मगर हम ।
अख़लाक़[४] के मारे तेरे दीदार[५] को पहुँचे ।

हम सरफिरे[६] दस्तार[७] के बन्दे हैं सितमगर[८] ।
सर ले ले मगर हाथ ना दस्तार को पहुँचे

बचने में जिस आज़ार[९] से इक उम्र लगाई ।
आख़िर में हम भी उसी आज़ार को पहुँचे ।

अपनों को तो उंगली भी पकड़ने नहीं देता ।
वो बुत जो थमा देता है अग़यार को पहुँचे

---

१. दुख २. लेखक ३. लोग ४. लिहाज़, सभ्यता ५. देखना ६. आत्मसम्मान में अकड़े हुए ७. पगड़ी ८. अत्याचारी ९. रोग

है जब से शिकम[१] चैन से, बेचैन है सर कुछ।
एहसास[३] यह अच्छा है पर इज़हार[४] तो कर कुछ।

उस पर तो नहीं मेरी ख़ामोशी का असर कुछ।
मुझ पर ही असर होता है होता है अगर कुछ।

रखते ही नहीं जो किसी मौसम की ख़बर कुछ।
होता नहीं दरकार[६] उन्हें रख़्ते सफ़र[७] कुछ।

है क़ैद इधर हम तो उधर अमनो अमां[९] है।
लगता है अब इस शहर में बदला हुआ हर कुछ।

वो रात गई जिसमें चमकते थे सितारे।
यह वक़्ते सहर[१०] है नहीं आएगा नज़र कुछ।

---

१. पेट २. भरा हुआ ३. भावना ४. प्रकट करना ५. प्रभाव ६. आवश्यक ७. यात्रा का सामान ९. शान्ति १०. भौर का समय

फ़िरऔन[१] की बस्ती में भी हम शाद[२] नहीं थे।
मूसा[३], मगर ऐसे भी तो बरबाद नहीं थे।

वह शहर तो आबाद था लोगों से हमेशा।
हाँ लोग ही ऐसे थे कि आबाद नहीं थे।

शायर बने आख़िर उसी मौके की बदौलत[४]।
जिस मौके के अशआर हमें याद नहीं थे।

आजाद रवी[५] के थे जो पाबन्द[६] हमेशा।
ज़ाहिर है कि वह लोग भी आज़ाद नहीं थे।

बच्चों ने जवानी को बड़े ग़ौर से देखा।
एक रोज़ जमाअत[७] में जब उस्ताद नहीं थे।

---

१. एक कठोर सम्राट जिसका अवतार हज़रत मूसा ने सामना किया और हराया २. प्रसन्न ३. एक नम्बर वाला ४. के कारण ५. आज़ाद रहने का चलन ६. बंधे हुए ७. कक्षा

ख़ुदा मालूम[१] ऐसा क्या है क्यों रोता है अक्सर[२] दिल ।
कि जब से रख लिया हमने हिसाबे दोस्तां दर दिल[३] ।

वही मज़मून[४] अपना है जो सबका है मगर फिर भी ।
जिसे सब संग[५] दिल कहते हैं हम लिखते हैं पत्थर दिल ।

जो ख़ुद से भी छिपा रख्खे हैं ऐसे भी हैं महसूसात[६]
समझ लीजे कि हमने रख लिया है दिल के अंदर दिल ।

यज़ीदी[७] फौज में इक दिल न था बैअत न ले पाई ।
हुसैनी[८] क़ाफ़िले के साथ थे पूरे बहत्तर[९] दिल ।

कोई उलझन ना होती और निहायत[१०] मुतमइन[११] रहता
हमारी होशियारी से उठाता फ़ायदा गर दिल ।

जबां तो ख़ैर अपना भी ज़माना[१२] साज़ है लेकिन ।
ख़ुदा का शुक्र है रख्खा है सीने में बचाकर दिल ।

मसल[१३] है जान अगर है तो जहाँ भी है "शुजा साहब" ।
मियां भारी नहीं करते हैं यूं हर वाक़ये[१४] पर दिल ।

---

१. खुदा जाने २. बार बार ३. कहावत है कि दोस्तों का हिसाब दिल में रखा जाता है लिखा नहीं जाता ४. विषय ५. पत्थर दिल (कठोर) ६. भावनाऐं ७. करबला के युद्ध में यज़ीद की सेना में हजारों लाखों सिपाही थे परन्तु ये बड़ी सेना ८. इमाम हुसैन से अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकी ९. सत्य की इस फौज में केवल ७२ लोग थे १०. अत्यधिक ११. सन्तुष्ट १२. जोड़ तोड़ १३. कहावत १४. घटना

बुराई लोग करते रहते हैं दिन रात पत्थर की ।
ज़रा इक दिन सुनी तो जाए चलकर बात पत्थर की ।

रही मसरुफ़ियत मेरी तरह हज़रात[१] पत्थर की ।
ज़माने[२] भर के शीशे और तन्हा ज़ात[३] पत्थर की ।

अगरचे[४] हमको भी मालूम है औक़ात पत्थर की ।
मगर वहशत[५] में फिर दरकार[६] हैं ख़िदमात[७] पत्थर की ।

अभी कल तक यह मंज़र[८] सोच भी सकता न था कोई ।
कि शीशे बैठ जाएंगे लगाकर घात पत्थर की ।

"शुजा" इतनी भी गहरी शायरी अच्छी नहीं होती ।
कलम है फूल सा और लिख रहे हो बात पत्थर की ।

---

१. सज्जनों २. दुनिया ३. वजूद ४. यद्यपि ५. दीवानगी ६. आवश्यक ७. सेवा ८. दृश्य

समझते क्या हैं इन दो चार रंगों को उधर वाले।
तरंग आई तो हर मंज़र[१] बदल देंगे नज़र[२] वाले।

सितम[३] के वार हैं तो क्या क़लम[४] की धार भी तो है।
गुज़ारा ख़ूब कर लेते हैं इज़्ज़त से हुनर[५] वाले।

इसी पर ख़ुश हैं कि एक-दूसरे के साथ रहते हैं
अभी तन्हाई का मतलब नहीं समझे हैं घर वाले

कोई सूरत[६] निकलती ही नहीं है बात होने की।
वहाँ ज़ोमे[७] ख़ुदावन्दी यहाँ जज़्बे[८] बशर[९] वाले।

मफ़ा ईलुन[१०] का पैमाना[११] बहुत ही तंग होता है।
जभी तो शेर हम कहते नहीं हैं दिल-जिगर वाले।

जो उड़ते ही नहीं हैं वो नशेमन[१२] की अमां[१३] में हैं।
क़फ़स[१४] की बन्दिशों[१५] में रह रहे हैं बालो[१६] पर वाले।

---

१. दृश्य २. अंतर दृष्टि ३. अत्याचार ४. लेखनी ५. कला ६. उपाय ७. खुदाई का अहंकार ८. भावनाऐं ९. साधारण इंसान १०. उर्दू कविता की पंक्ति को नापने का एक बार ११. बाट १२. घोंसला १३. सुरक्षा १४. कैद का पिंजड़ा १५. बंधनों १६. पक्षी के पंख व बाजू

दिलों में फर्क़[१] है तो गुफ़्तुगू[२] से कुछ नहीं होगा।
चल उठ तशनालबी[३] जामो सुबू[४] से कुछ नहीं होगा।

जो बातें उससे कहनी हैं वो अपने आप से कह लो।
अभी रिश्ता है नाज़ुक दू-बदू[५] से कुछ नहीं होगा।

गरीबां खारजी[६] है जब के वहशत[७] अंदरुनी है।
रफू क्या कर रहे हो जी रफू से कुछ नहीं होगा।

मियां जब इतने सारे दोस्तों से कुछ नहीं बिगड़ा।
हमें मालूम है अब एक उर्दू[८] से कुछ नहीं होगा।

न पूरी हो सकी जो आरज़ू अब तक वो कहती है
जो पूरी हो गई उस आरज़ू से कुछ नहीं होगा।

शुजा तेरे ही तहतुल लफ़्ज़[११] से कुछ हो तो हो वरना।
ग़ज़ल में शायराने ख़ुशगुलू[१२] से कुछ नहीं होगा।

---

१. भेदभाव २. बातचीत ३. प्यास (होंठों का सूखा होना) ४. मदिरा के प्याले ५. आमने-सामने ६. बाहरी ७. दीवानापन ८. शत्रु ९. लापरवाही बेरूखी १०. दशा ११. बगैर गाये साधारण स्वर में कविता पढ़ना १२. गवैयों जैसे अच्छे गले वाले कविगण

रवायत[१] हम तलक आ जाएगी, ऐसा नहीं लगता।
हमारा क़त्ल उसके हाथ से होता नहीं लगता।

वहाँ क्यों जाऊं मैं कोई जहाँ अपना नहीं लगता।
तुम्हारी बज़्म[२] में तो ग़ैर[३] भी तन्हा नहीं लगता।

मेरी मानिन्द[४] तो कोई भी अफ़सुर्दा[५] नहीं लगता।
मेरे दीवान[६] का इक शेर भी मेरा नहीं लगता।

ज़मीं अब चांदनी से मुझको मिलने ही नहीं देती।
मैं हर शब[७] जागता रहता हूँ, पर मौक़ा नहीं लगता।

तास्सुर[८] अपना-अपना है मियां हर शख़्स[९] का, मसलन[१०]
हमें कोई समन्दर की तरह प्यासा नहीं लगता।

सुनाए वस्ल की शब[११] हर कसो-नाकस के शेर उसको
मगर अब फ़ुरक़त में अपना शेर भी अच्छा नहीं लगता।

ज़रा सोचो तो तन्हाई का मतलब[१२] जान जाओगे।
अगरचे[१३] देखने में कोई भी तन्हा नहीं लगता।

न आए कोई तो लगता है जैसे वो नहीं आया।
वो आ जाता है तो अन्दाज़[१४] ही उसका नहीं लगता।

मज़े की बात है, दुनिया मुझे मुर्दा समझती है।
मुझे अपने अलावा कोई भी ज़िन्दा नहीं लगता।

तमीज़ें[१५] मिट गई हैं शहर में अब सब बराबर हैं।
किसी का क़द किसी से अब हमें ऊंचा नहीं लगता।

किताबें इतनी दिलकश[१६] और मज़मून[१७] इतने पुर आशोब[१८]
घरों के हाल का शहरों से अन्दाज़ा[१९] नहीं लगता।

---

१. परम्परा २. महफिल ३. बेगाना ४. समान ५. दुखी ६. शायरी की किताब ७. रात ८. विचार ९. व्यक्ति १०. उदाहरणार्थ ११. मिलन की रात १२. अर्थ १३. यद्यपि १४. ढंग १५. अंतर १६. आकर्षक १७. लेख १८. मुसीबत भरे १९. अनुमान

१. मेरा दिल हाथों में लो तो क्या तुम्हारा जाएगा
२. कर लिया है खुद से कितना दूर अपने आप को
३. हालात न बदलें तो इसी बात पे रोना
४. इस सर की जरूरत, कभी उस सर की जरूरत
५. सरदी भी ख़त्म हो गई बरसात भी गई
६. कब किसने जान दी है कहां, कुछ नहीं पता
७. अब तो उठता ही नहीं आरिजो लब से ऊपर
८. हको बातिल का सबक अब न पढ़ाओ उस्ताद
९. बदन बदन से और लबों से लब मिलते हैं
१०. एक नहीं सब मंजर देख
११. बीत गया मैं बैठा-बैठा
१२. शहनशह जिस तरह से ख़ानकाहों में भी होते हैं
१३. यहां तो क़ाफिले भर को अकेला छोड़ देते हैं
१४. अब शोरे गिरिया देखना जब रात कम होने लगे
१५. विजदान में वो आया इलहाम हुआ मुझको
१६. तारीख़ की ख़ातिर भी दो-एक निशां छोड़ो
१७. किसी ने सताया किसी ने नवाज़िश करी
१८. यह काज़ी कराएगा दंगा कोई
१९. इस ऐतबार से बे-इन्तिहा ज़रूरी है
२०. अलामतों से है बैर इन बयान वालों को
२१. पेश कर दी है उसको जान तलक
२२. जैसा मंज़र मिले, गवारा कर
२३. न पूछो तो छिपाते कुछ नहीं हैं
२४. मसीहा तुझको कैसा लग रहा है

आसमां से हम उतरते ही नहीं थे जिन दिनों।
याद आ जाती है अक्सर[१] उन दिनों की इन दिनों।

देखिए मेरी बसारत[२] की बसीरत[३] इन दिनों।
काम दे जाता है उसके कुर्ब[४] का एक दिन, दिनों।

हो रहा था इक ज़माना हम पे आशिक़ जिन दिनों।
याद कर ले हम हुए थे तेरे आशिक़ किन दिनों।

यार, क्या बेताबियां रहती थीं हमको विन दिनों।
और अब हम सांस ले सकते हैं तेरे बिन, दिनों।

उससे थोड़ी देर को भी गुफ़्तगू[५] हो तो मियां।
बात अपने आप से होती नहीं मुमकिन[६] दिनों।

दिल के इस धंधे में होना था यह प्यारे एक दिन।
भूल जा रातों की नींदें अब तो तारे गिन दिनों।

सबके एहसानात[७] का एक दिन क़सीदा[८] लिख शुजा।
और ऐसा लिख कि ढूंढ़े तुझको हर मुहसिन[९] दिनों।

---

१. बहुत २. देखने की बाहरी शक्ति (नयन) ३. देखने की अन्दर की शक्ति (सिद्धि) ४. निकटता ५. बातचीत ६. संभव ७. उपकार ८. प्रशंसा लेख ९. आभार करने वाला

मैंने सिर्फ़ अपने नशेमन[१] को सजाया साल भर।
फ़सलेगुल[२] भी इसलिए आई है अब के डाल भर।

बदगुमानी[३] आई तो ले जाएगी रिश्ते तमाम।
देखना निकलेगी इन शीशों की हस्ती[४] बाल भर।

आज मेरी अर्ज़[५] पर ज़ुल्फ़ें अगर खोलेगा वो।
कल हसद[६] की आग में जल जाएगा बंगाल भर।

मोतबर[७] चाके[८] गरेबां ने तुझे भी कर दिया।
चल दीवाने तू भी अब जेबे[९] जुनूं में माल भर।

सजदा[१०] भर ईमान[११] बाक़ी रह गया है शेख़ का।
और अक़ीदत[१२] बरहमन की रह गई है थाल भर।

---

१. घोंसला २. बसंत ३. आशंका ४. वास्तविकता ५. निवेदन ६. ईर्ष्या ७. विश्वसनीय ८. कमीज का फटा हुआ गला ९. दीवानापन १०. सर झुकाना ११. धार्मिक विश्वास १२. श्रद्धा

साहिलों[१] से गो[२] मेरे हक़[३] में बड़े ऐलान[४] आए।
डूबना तन्हा[५] पड़ा जब भी कभी तूफ़ान आए।

घेर लेता है हमीं को जो कोई बोहरान आए।
हर कोई बेजान हो तो जान में कुछ जान आए।

महफ़िलें इतनी सजाईं तो कोई आया नहीं।
गोशए तन्हाई में मिलने बड़े मेहमान आए।

सूफ़ियों[७] पर रोज़ो शब[८] का जब्र[९] हावी[१०] हो गया।
आँख लग जाती है जब भी साअते इरफ़ान[११] आए।

पान तो बाज़ार में भी खूब मिलते हैं शुजा
पर कभी चिलमन के पीछे से भी तो एक पान आए।

---

१. तट २. यद्यपि ३. पक्ष ४. घोषणाएं-वक्तव्य ५. अकेला ६. एकांत का समारोह ७. संत सूफी ८. दिन-रात ९. जोर १०. भारी पड़ना ११. सिद्धि का क्षण

ऐसा लगता है अभी तक दौरे सुलतानी[१] में हूँ।
अपनी क़िस्मत हूँ मगर औरों की पेशानी[२] में हूँ।

सौ गुनाहों[३] की तमन्ना एक की फ़ुर्सत नहीं।
और इस पर यह कि मैं इस आलमेफ़ानी[४] में हूँ।

दूसरी दुनिया बनाने के लिए सामां नहीं।
क्या बताऊं आजकल कितनी परेशानी में हूँ।

ख़ुशकियों[५] पर तपने वालों को तो मुझ पर रश्क[६] है।
उनसे यह कैसे कहूँ मैं सर तलक पानी में हूँ।

और कुछ दिन हैं तवाज़ुन[७] रोज़ोशब में दोस्तो।
और कुछ दिन मस्त मैं अपनी तन आसानी[८] में हूँ।

---

१. सम्राटी युग २. माथा ३. पाप ४. अस्थायी संसार ५. सूखे तट ६. ईर्ष्या ७. संतुलन ८. सुस्ती

एक दिन ख़ुदा रख्खे हमको आगही[१] होगी।
कान पर कलम होगा हाथ में बही होगी।

कायनात[२] यूं ही तो मैं नहीं बना देता।
कोई बात तुमने भी कान में कही होगी।

दोस्तों तुम्हारे भी शेर कह दिए मैंने।
तुमने किस तरह मेरी शायरी सही होगी।

ख़ुद बसा के शहर आख़िर छोड़ क्यों दिया हमने।
शहर में यक़ीनन[३] यह बात चल रही होगी।

फ़लसफ़ों[४] को फिर पढ़कर सोचने लगा हूँ मैं।
आज मुझको वो लड़की याद कर रही होगी।

---

१. ज्ञान २. सृष्टि ३. अवश्य ४. विभिन्न विचारधाराएं

दोस्तों से अब बिल्कुल दोस्ती नहीं करनी ।
यानी हमको दुश्मन की फिक्र[१] ही नहीं करनी ।

गुफ़्तुगू[२] का तर्ज़[३] उसने यह नया निकाला है ।
सामने भी आ जाना बात भी नहीं करनी ।

बन्द क्यों हो कारोबार आपकी ख़ुदाई का
एक बस मुझे ही तो बन्दिगी[५] नहीं करनी ।

हम हवाओं से मिलकर ख़ुद फ़ज़ा[६] बना लेंगे ।
मौसमों के दर पर अब नौकरी नहीं करनी ।

ख़ैरियत[७] कुछ ऐसे वो पूछता है महफिल में ।
जैसे इसके आगे कुछ बात ही नहीं करनी ।

दिल की बात हम उससे साफ-साफ कह देंगे ।
अच्छी ख़ासी[८] उर्दू की फारसी नहीं करनी ।

नाकिदों[९] के साथ ऐसा क्यों सुलूक[१०] करता है ।
क्या तुझे "शुजा ख़ावर" शायरी नहीं करनी ।

---

१. चिन्ता २. बात-चीत ३. ढंग ५. भक्ति ६. वातावरण ७. कुशलता ८. अच्छी भली ९. साहित्य आलोचक १०. व्यवहार

चेहरे पे थोड़ी रखी है।
दिल में बेताबी[१] रखी है।

रिन्द[२] खड़े है मिम्बर[३] मिम्बर
और वाइज़[४] ने पी रखी है।

इक-दो दिन से जीने वालों
हमने काफ़ी जी रखी है।

दिल के शजर[५] ने किस मेहनत[६] से
इक-इक शाख़[७] हरी रखी है।

वस्ल[८] हुआ पर दिल में तमन्ना[९]
जैसी थी वैसी रखी है।

हवस[१०] में कुछ भी कर सकते हो।
इश्क़[११] में पाबन्दी[१२] रखी है।

ग़ैर[१३] की क्या रखेगा यह दरबां[१४]
ज़ालिम ने किसकी रखी है।

राख क़लन्दर की ले जाओ
आग कहाँ बाक़ी रखी है।

इक तो बातूनी है "ख़ावर"
ऊपर से पी भी रखी है।

---

१. बेचैनी २. मदिरा पान करने वाला ३. मस्जिद में जिस स्थान से इमाम उपदेश देता है ४. धार्मिक उपदेश देने वाला ५. वृक्ष ६. लगन ७. शाखा ८. मिलन ९. अभिलाषा १०. वासना ११. सच्चा प्रेम १२. सीमाएं १३. खलनायक १४. चौकीदार

यह नहीं कि मेरी ज़मीन पर कभी आसमान नहीं रहा।
मगर आसमान कभी मेरे तेरे दरमियान[१] नहीं रहा।

यह बता कि कौन सी जंग में मैं लहूलुहान[२] नहीं रहा।
मगर आज भी तेरे शहर में कोई मुझको मान नहीं रहा।

चलो यह तो हादसा[३] हो गया कि वो सायबान[५] नहीं रहा।
ज़रा यह भी सोच लो एक दिन अगर आसमान नहीं रहा।

सभी ज़िन्दगी पे फ़रेफ़ता[६] कोई मौत पर नहीं शेफ़ता[७]
सभी सूदख़ोर[८] तो हो गए हैं कोई पठान नहीं रहा।

शबे हिज्र[९] ने हवस[१०] और इश्क़[११] के सारे फ़र्क मिटा दिए।
कहीं चारपाई चटख गई तो कहीं पे बान नहीं रहा।

इसी बेरूख़ी में हज़ार रूख़[१२] हैं पुराने रिश्ते के साहिबो।
यही कम नहीं है कि जानकर भी वह मुझको जान नहीं रहा।

---

१. बीच में २. खून में लथपथ ३. घटना ५. छत्र-छाया ६. न्यौछावर ७. आशिक ८. अपना लाभ देखने वाला (ब्याज खाने वाला) ९. विरह की रात १०. शारीरिक मिलन की भावना ११. आत्मा से भरा प्रेम (अशारीरिक) १२. रूप

कर गया बारिश में कैसा काम पानी
काम बिल्कुल आग का, और नाम पानी

ज़िन्दगी का है ज़ियां[१] दोनों तरह से
तश्नगी[२] आग़ाज़[३] और अंजाम[४] पानी

बाक़ी मौसम मुंह छुपाए फिर रहे हैं
पड़ रहा है ख़ूब बेहंगाम[५] पानी

सूखता रहता है इक बेचारा जंगल
नहर में बहता है सुबहो-शाम[६] पानी

सर्द[७] वादी में ही रहना बर्फ बनकर
गर्म मैदां[८] में है बे-आराम[९] पानी

---

१. बर्बादी २. प्यास ३. आरम्भ ४. परिणाम ५. धड़ाधड़ ६. सुबह और शाम ७. ठण्डी ८. मैदान ९. विचलित

शजर[१] वहशत[२] का बढ़कर आ गया सर के बराबर
बहारें आके ठहरी हैं मेरे घर के बराबर

उठूगा अब हिसाबे ज़िन्दगी[३] करके बराबर
मेरा सर हो गया है आपके दर के बराबर

अगर बैअत[४] नहीं करनी यज़ीदो,[५] सरफिरों[६] को
तो तुम लाखों भी क्या उनके बहत्तर[७] के बराबर

मुनज़्ज़िर्म[८] छोड़ मेरी बात बस इतना बता दे
कभी मज़लूम[९] भी होंगे सितमगर[१०] के बराबर।

नशेमन[११] से कुछ ऐसा ही तअल्लुक़ है वगरना
बुलन्दी आसमानों की है एक पर के बराबर

दुआएं दोस्तों को भी तो दी थीं ज़िन्दगी की
चलो दुश्मन तो हो ही जाएंगे मर के बराबर

"शुजा" साहब बसे हैं जाके शहरे आरज़ू[१२] में
जहाँ बादे सबा[१३] होती है सर सर[१४] के बराबर

---

१. पेड़ २. दीवानापन ३. जीवन भर का लेखा जोखा ४. गुलामी ५. दमनकारी ६. दीवाने ७. करबला की लड़ाई में सत्य के साथ केवल बहत्तर आदमी थे (इमाम हुसैन के साथी) ८. ज्योतिषी ९. जिन पर अत्याचार हो १०. अत्याचारी ११. घोंसला १२. अभिलाषा १३. ठंडी हवा १४. गरम हवा

२५. क़लन्दरी के फ़रायज़ निभाने पड़ते हैं
२६. फिराए शहर में तन्हा ख़ुदा किसी को नहीं
२७. बचने की खबर भी न किसी यार को पहंचे
२८. है जब से शिकम चैन से, बेचैन है सर कुछ
२९. फ़िरऔन की बस्ती में भी हम शाद नहीं थे
३०. ख़ुदा मालूम ऐसा क्या है क्यों रोता है अक्सर दिल
३१. बुराई लोग करते रहते हैं दिन रात पत्थर की
३२. समझते क्या हैं इन दो चार रंगों को उधर वाले
३३. दिलों में फर्क है तो गुफ़्तगू से कुछ नहीं होगा
३४. रवायत हम तलक आ जाएगी, ऐसा नहीं लगता
३५. आसमां से हम उतरते ही नहीं थे जिन दिनों
३६. मैंने सिर्फ अपने नशेमन को सजाया साल भर
३७. साहिलों से गो मेरे हक़ में बड़े ऐलान आए
३८. ऐसा लगता है अभी तक दौरे सुलतानी में हूं
३९. एक दिन ख़ुदा रख्खे हमको आगही होगी
४०. दोस्तों से अब बिल्कुल दोस्ती नहीं करनी
४१. चेहरे पे थोड़ी रख़्खी है
४२. यह नहीं कि मेरी ज़मीन पर कभी आसमान नहीं रहा
४३. कर गया बारिश में कैसा काम पानी
४४. शजर वहशत का बढ़कर आ गया सर के बराबर
४५. ज़मीं का सिलसिला सिर्फ़ आसमां तक है
४६. डूबकर तो मैं बेमौत मरना नहीं चाहता
४७. छोड़िए बाक़ी भी क्या रक्खा है उनके क़हर में
४८. पार उतरने के लिए तो ख़ैर बिल्कुल चाहिए
४९. हो गए तहज़ीब के आगे बड़े लाचार लोग

ज़मीं[१] का सिलसिला सिर्फ़ आसमां[२] तक है
उदासी[३] क्या कहा जाए कहाँ तक है

यहाँ से ले के अन्दाज़न[४] वहाँ तक है
अकेलापन मकां[५] से लामकां[६] तक है

बड़ा आराम है इस शहर के बाहर
तमन्ना[७] का इलाक़ा[८] शहरे-जां[९] तक है

कहाँ की बज़्म[१०] और क्या बज़्म आराई[११]
हर इक रिश्ता मेरी शीरी[१२] ज़बां[१३] तक है

ज़रा मुहतात[१४] होकर गुफ़्तगू[१५] करना
हमारा सिलसिला अल्ला मियां[१६] तक है

---

१. धरती २. आकाश ३. निराशा ४. अनुमानत: ५. घर ६. अन्तरिक्ष ७. अभिलाषा ८. क्षेत्र ९. प्रेयसी की नगरी १०. सभा ११. सभा सजना १२. मधुर १३. वाणी १४. सावधान १५. बातचीत १६. ईश्वर

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

डूबकर तो मैं बेमौत मरना नहीं चाहता ।
फिर भी इन साहिलों पर उतरना नहीं चाहता ।

बांधना हाथ सर को झुकाना क़दम चूमना ।
काम हैं शहर में, मैं ही करना नहीं चाहता ।

यह कोई मेहरबानी नहीं तन्ज[१] है तायरों[२] ।
अब तो सय्याद[३] पर भी कतरना नहीं चाहता ।

आसमां से उतरने में कुछ वक़्त तो चाहिए ।
मोहतसिब[४] इतनी मुहलत मैं वरना नहीं चाहता ।

ख़ूब है कशमकश[५] ख़ामोशी और इज़हार[६] की ।
झील जो चाहती है वह झरना नहीं चाहता ।

कर दिए हमने इतने नमकदान[७] खाली मियां ।
ज़ख़्म को कौन कमबख़्त भरना नहीं चाहता ।

तेरी यादें मेरे दिल में आती हैं, अब भी मगर ।
जो सिमट जाए वह फिर बिखरना नहीं चाहता ।

कोई साहिल पे भी ख़ौफ[८] से कांपता है शुजा ।
और कोई डूबकर भी उभरना नहीं चाहता ।

---

१. व्यंग्य २. हे पक्षियों ३. पक्षियों का शिकारी ४. शराबबंदी को लागू करने वाला कठोर अधिकारी ५. खींचातानी ६. कथन (बोलना) ७. नमक का बर्तन ८. भय

छोड़िए बाक़ी भी क्या रक्खा है इनके क़हर[१] में
जान दरवेशों[२] को प्यारी है हमारे शहर में

देखिए क्या हश्र[३] होता है हमारा दहर[४] में
शहरयारी[५] की तमन्ना[६], और तेरे शहर में

देखने वाले को सारा ही समन्दर चाहिए
सोचने वाला समन्दर सोच ले इक लहर में

देखिए तासीर[७] ख़ाली ज़हर में होती नहीं
ज़िन्दगी सूखी मिलाकर खाइएगा ज़हर में

उनसे यूं तश्बीह[८] देता हूँ कि वो भी दूर हैं
वर्ना क्या मिलता है तुझमें और माहो-मेहर[९] में

---

१. अत्याचार २. साधुओं ३. हाल ४. दुनिया ५. राज (बादशाहत) ६. इच्छा ७. प्रभाव ८. उपमा ९. चांद-सूरज

पार उतरने के लिए तो ख़ैर बिल्कुल चाहिए
बीच दरिया[१] डूबना भी हो तो इक पुल चाहिए

शख़्सियत[२] में अपनी वो पहली सी गहराई नहीं
फिर तेरी जानिब से थोड़ा-सा तग़ाफ़ुल[३] चाहिए

जिनको क़ुदरत[४] है तख़य्युल[५] पर, उन्हें दिखता नहीं
जिनकी आँखें ठीक हैं, उनको तख़ययुल[५] चाहिए

रोज़ हमदर्दी जताने के लिए आते हैं लोग
मौत के बाद अब हमें जीना न बिल्कुल चाहिए

---

१. नदी २. व्यक्तित्व ३. लापरवाही ४. काबू ५. कल्पना

हो गए तहज़ीब[१] के आगे बड़े लाचार लोग
शरहे-ग़म[२] करते नहीं हैं अब सरे-बाज़ार[३] लोग

रात आ जाए तो पा लें ख़्वाब[४] का आज़ार[५] लोग
रफ़्ता-रफ़्ता[६] काम से लग जाएं फिर बेकार लोग

बज़्म आराई[७] की कोई बात भी करता नहीं
ज़ुल्म[८] तन्हाई का सहते जा रहे हैं यार लोग

दश्त[९] की जानिब[१०] भी अब जाएं तो कुछ हासिल[११] नहीं
अब तो अपने आप से भी हो गए बेज़ार[१२] लोग

पहले मरने पर भी आमादा[१३] रहा करते थे सब
और अब जीने को भी होते नहीं तैयार लोग

इत्रो अंबर के खरीदारों की मुश्किल हो गई
नानेगन्दुम[१४] बेचते हैं आजकल अत्तार[१५] लोग

आरज़ू[१६] के शहर की आबो-हवा[१७] अच्छी नहीं
देखते ही देखते पड़ने लगे बीमार लोग

---

१. सभ्यता २. दुख का वर्णन ३. भरे बाजार में ४. सपना ५. रोग ६. धीरे-धीरे ७. सभा सजाना ८. अत्याचार ९. जंगल, वीराना १०. ओर ११. प्राप्ति १२. विमुख १३. तैयार १४. गेहूँ १५. गंधी १६. इच्छा १७. जलवाय

आ पड़ा हूँ नाउमीदी[१] के खुले मैदान में
कोई घर ख़ाली नहीं है, कूचएं-इमकान[२] में

आम इंसा क्या मुफ़क्किर[३] भी रहे नुक़सान में
बामो-दर[४] क्या फ़लसफ़े[५] भी उड़ गए तूफ़ान में

हम समझते थे फ़क़त[६] हम ही हैं उस बोहरान[७] में
देखकर बेजान सबको जान आई जान में

है मुक़द्दसतर[८] शबे वादा से रोज़े-इन्तज़ार[९]
सच्चे रोज़ेदार की तो ईद है रमज़ान में

अपनी ग़ुरबत[१०] का भी ज़्यादा तज़किरा[११] अच्छा नहीं
फ़ारसी ख़ुद अजनबी लगती है जब ईरान में

शायरी में गुफ्तुगू[१२] के लफ़्ज़[१३] हम लाए मगर
फूल जो असली थे, मसनूई[१४] लगे गुलदान में

आपका अन्दाज़ रहना चाहिए था आप तक
ग़ैर[१५] भी करता है गुस्ताख़ी[१६] हमारी शान में

---

१. निराशा २. संभावना की गली ३. विचारक ४. दीवार और द्वार ५. दर्शन ६. केवल ७. बिपता ८. अति पवित्र ९. इंतिजार का दिन १०. गरीबी ११. चर्चा १२. वार्तालाप १३. शब्द १४. कृत्रिम १५. बेगाना १६. अपमान

कर दिया अपने ख़्यालों में कुछ ऐसा गुम हमें
ख़ुद भी आसानी[1] से पा सकते नहीं अब तुम हमें।

हिज्र[2] वाला होश रखते हैं हमेशा अपने साथ।
वस्ल[3] हालॉ के पिला जाता है ख़ुम के ख़ुम[4] हमें।

और सब के सामने तो बेज़रर बन्दे हैं हम।
कुछ समझता है तो बस वो आसमां या तुम हमें।

ढंग से मिलना है हमसे तो मिलो तन्हाई में।
बज़्म[5] में जब भी मिलोगे पाओगे गुमसुम हमें।

हिज्र में हम देखते रहते थे इनको और आज।
वस्ल की शब देखते हैं यह महो अंजुम[6] हमें।

---

१. कल्पना २. विरह ३. मिलन ४. मदिरा का बड़ा प्याला ५. बिना किसी अभिलाषा और आदर्श के ६. सभा-महफिल ७. चांद तारे

क़ायनाती[१] ग़म भी जाती[२] मसअलों[३] की बात है
ठीक था सब कुछ अभी पिछले दिनों की बात है

काम चलना हो ग़ज़ल[४] से तो चले दुनिया का काम
और यूं देखो तो ख़ाली क़ाफ़ियों[५] की बात है

वाक़ई[६] पत्थर ही पत्थर हैं फ़लक[७] की जेब में
है बड़ी सच्ची अगरचे[८] शायरों की बात है

गर्मियों में अबके ठडक है तो हैरत[९] किसलिए
किस क़दर गर्मी थी पिछली सर्दियों की बात है

इन दिनों तो धूप की शिद्दत[१०] है और हम हैं "शुजा"
बाक़ी जो कुछ है वो पिछली बारिशों[११] की बात है

---

१. सम्पर्ण ब्रहमांड का २. निजी ३. समस्याओं ४. शायरी ५. तुकबंदी ६. वास्तव में ७. आकाश (भाग्य) ८. यद्यपि ९. आश्चर्य १०. तेजी (तपन) ११. वर्षाओं

वो नहीं हैं हम जो यूं ही उम्र भर ज़िन्दा रहे।
दर्दे दिल मर कर दिखा देंगे अगर ज़िन्दा रहे।

मुझको तो मरना है एक दिन यह मगर ज़िन्दा रहे।
कारीगर[१] की मौत का क्या है हुनर[२] ज़िन्दा रहे।

सर झुकाने वाले दिल को मार कर ज़िन्दा रहे।
सर उठाने वाले लेकिन सरबसर[३] ज़िन्दा रहे।

एक सर को देके हमने ले लिए दिल बेशुमार[४]।
हम इधर तो मर गए लेकिन उधर ज़िन्दा रहे।

सर झुका कर हाथ फैलाकर ज़बानें काट कर।
ज़िन्दा रहने वाले — क़िस्सा मुख़तसर[५] — ज़िन्दा रहे।

तुम हवा से डर गए उनकी भी सोचो जो शुजा।
मौसमों के सामने ख़म ठोंककर[६] ज़िन्दा रहे।

---

१. मजदूर २. कला ३. पूरी तरह — पूर्ण ४. अनगिनत ५. संक्षिप्त में ६. जमकर

५०. आ पड़ा हूँ नाउमीदी के खुले मैदान में
५१. कर दिया अपने ख़्यालों में कुछ ऐसा गुम हमें
५२. कायनाती ग़म भी ज़ाती मसअलों की बात है
५३. वो नहीं हैं हम जो यूं ही उम्र भर ज़िन्दा रहे
५४. ले उड़े आंधी तो फिर वापस ये आने के नहीं
५५. एक ज़ालिम को परीशां आज हमने यूं किया
५६. ज़ात के इरफ़ान का इल्ज़ाम मेरे सर लगा
५७. बोझ बाक़ी सब मुवररिख़ के क़लम पर डाल दे
५८. फ़लसफ़ों को अहमियत गर इस क़दर दी जाएगी
५९. हमसे भी हल हो न पाए अपने ज़ाती मसअले
६० दर्द मेरे बाद बिल्कुल ज्यूं का त्यूं बाक़ी रहा
६१. इस क़दर नरमी मुज़िर होगी संभल के बोलिए
६२. दोस्त का घर और दुश्मन का पता मालूम है
६३. इसमें रखती ही नहीं है अपना कोई सानी हवा
६४. उधर तो दार पर रख्खा हुआ है
६५. यह दिन का वक़्त और ख़्वाबों की भरमार
६६. यहां तो जब भी शाहो ने सज़ा दी
६७. दलीलें भूल जाओगे वकीलो
६८. सांस लेने पर मुकर्रर हो गए
६९. ख़्वाब इतने हैं, ये ही बेचा करें
७०. ख़ूब अपनों के राज़ खोले जा
७१. क्यों हमें रख दिया है यूं ढक के ।
७२. सब जो करते हैं अब वो ही कीजे
७३. ग़म के जंगल में एक बाग़ लगा
७४. दर्द का सिलसिला भी जारी है

ले उड़े आंधी तो फिर वापस ये आने के नहीं
यानी[१] यह तिनके भी मेरे आशियाने[२] के नहीं

जी तरन्नुम[३] से तो हम हरगिज़[४] सुनाने के नहीं
ग़ौर[५] के क़ाबिल[६] हैं अपने शेर गाने के नहीं

आसमां पर हुक्म[७] किसका चल रहा है इन दिनों
जानते हैं ख़ूब हम लेकिन बताने के नहीं

ले लिए थे शहर तो पहले ही फ़रज़ानो[८] ने सब
अब यह सुनते हैं कि सहरा[९] भी दिवाने के नहीं

आज ले आए हैं तो इस पर तवज्जेह[१०] कीजिए
अर्श[११] से पैग़ाम[१२] तो हम रोज़ लाने के नहीं

बरमला[१३] कहने में हम भी ख़ुश ख़ुदा भी ख़ुश मियां
शेरियत[१४] के रौब में बिल्कुल हम आने के नहीं

---

१. अर्थात २. घोंसले ३. गायकी ४. कभी नहीं ५. गम्भीर विचार ६. योग्य ७. आदेश ८. सूझ-बूझ वाले चालाक लोग ९. जंगल १०. ध्यान ११. आकाश १२. संदेश १३. साफ-साफ (शब्दों की सजावट के बिना) १४. कविता की विशेष सजीली शब्दावली

एक ज़ालिम को परेशां आज हमने यूं किया
पेश होकर उसके आगे शिकवये[१] गर दूं किया

रूठ कर तुझ से ख़ुदी[२] के फ़लसफ़े[३] का क्या करुं
जिसकी शह पर मैंने नाहक़[४] जज़्बे[५] दिल का खूं किया

पहले कहते हैं कि सब कुछ क़ब्ज़ए क़ुदरत[६] में है
फिर यह कहते हैं कि हमने यूं किया और वूं[७] किया

सब ही बच निकले इशारों की ज़बां की आड़ में
इक हमीं ने बरमला[८] इज़हार जाने क्यों किया

तुम दिवाने भी थे शायर भी थे आशिक़ भी शुजा
फिर भी एक मिसरा[९] न उसकी याद में मौजूं[१०] किया

---

१. दुर्भाग्य का रोना २. आत्म सम्मान ३. विचारधारा ४. बेकार में ५. दिल की भावनाएं ६. खुदा के हाथ में ७. यूं ८. साफ-साफ ९. पंक्ति १०. कविता की एक पंक्ति बांधना

ज़ात[१] के इरफ़ान[२] का इल्ज़ाम मेरे सर लगा।
नींद क्या आनी थी सारी रात मुझको डर लगा।

याद की बस्ती से गुज़रा तो नज़र जाती रही।
एक मंज़र[३] ठीक मेरीँ आख पर आकर लगा।

हो गया इस बात पर सब मुंसिफ़ों[४] में इत्तफ़ाक़[५]।
मैं लगा पत्थर को पहले फिर मुझे पत्थर लगा।

रात भर महरूमियों[६] की गोद में सोते रहे।
एक भी सलवट ना आई रह गया बिस्तर लगा

शहर में तफ़रीह[७] की कोई जगह मिलती नहीं।
एक मेला भी लगा तो शहर के बाहर लगा।

---

१. व्यक्तित्व २. सिद्धि ३. दृश्य ४. न्यायाधीश ५. सहमति ६. निराशाएं ७. सैर-सपाटा

बोझ बाकी सब मुवररिख़[१] के क़लम पर डाल दे।
तू भी नाहम्वार[२] मैदानों में लश्कर[३] डाल दे।

शहर सारा सैरे दरिया[४] के लिए निकला है आज।
जा, कोई नेकी[५] अभी दरिया में, जाकर डाल दे।

काम चल जाता है अक्सर बाहरी मफ़हूम[६] से।
दूसरे मफ़हूम को शेरों के अन्दर डाल दे।

हम नशीनों[७] की नफ़ासत[८] से बचाकर रख इसे।
ज़ेहन की आलूदगी[९] को घर के बाहर डाल दे।

लोग जिन्दा हैं तो जा इस बात की तस्दीक़[१०] कर।
रात को इस शहर के घर-घर में पत्थर डाल दे।

---

१. इतिहासकार २. ऊबड़-खाबड़ ऊंचे-नीचे ३. सेना ४. दरिया के किनारे की सैर (कहावत है कि नेकी कर और दरिया में डाल) ५. पुण्य ६. अर्थ ७. साथी ८. स्वच्छता ९. मैल कूड़ा-करकट १०. पुष्टि

फ़लसफ़ों[१] को अहमियत[२] गर इस क़दर[३] दी जाएगी।
जान फिर कैसे किसी के नाम पर दी जाएगी।

आते-आते याद आएंगे पुराने रास्ते।
जाते-जाते ज़ेहन[४] की आवारागर्दी जाएगी।

बात कह जाएंगे हम और लोग समझेंगे मज़ाक़।
नाम के ख़ाने[५] में अब के उम्र भर दी जाएगी।

घर से बाहर आके सूरज का तआक़्क़ुब[६] कीजिए।
गर्म आहों से भला कैसे यह सरदी जाएगी।

पहले कुछ बातों को शेरों में छुपाया जाएगा।
और फिर हर शेर की तशरीह[७] कर दी जाएगी।

---

१. विचारधाराएं २. महत्वता ३. इतनी अधिक ४. मस्तिष्क ५. स्थान ६. पीछा ७. समीक्षा

हमसे भी हल हो न पाए अपने ज़ाती मसअले[१]
हम भी हल करने लगे हैं कायनाती मसअले[२]

ज़िन्दा रहने की थकन ने मार डाला ख़िज़्र[३] को
फिर भी पैदा कर रही है बेसबाती[४] मसअले[५]

बेखुदी[६] में हम मिला बैठे तेरे जाने के बाद
इनफ़रादी मसअलों[७] में कायनाती मसअले[८]

क्या सितम[९] है मसअले उलझाए[१०] मेरी एहतियात[११]
और सुलझाए मेरी बे एहतियाती[१२] मसअले

मसअलों[१३] के हल ने कैसा ख़ून रूलवाया[१४] हमें
जान लेती गर[१५] ये दुनिया, भूल जाती मसअले

---

१. निजी समस्याएं २. संसार भर की समस्याएं ३. एक पात्र है, जिन्हें कभी मौत नहीं आयेगी ४. अस्थाईपन ५. समस्याएं ६. खोया खोयापन (अपने आप में न होना) ७. व्यक्तिगत समस्याएं ८. सांसारिक समस्याएं ९. विडम्बना १०. समस्याएं ११. सावधानी १२. असावधानी १३. समस्याओं १४. आंसूओं में खून मिल जाना १५. अगर (यदि)

दर्द मेरे बाद बिल्कुल जूं का तूं बाक़ी रहा
जैसे मजनूं मर गया, लेकिन जुनूं[१] बाक़ी रहा

कुछ उन्हीं रिश्तों से इस दिल का सुकूं[२] बाक़ी रहा
टूटने के बाद भी जिनका फ़ुसूं[३] बाक़ी रहा

महफ़िलों के बीच जब तन्हाइयां रख आए हम
क़हक़हों की तह में इक सोज़े – दरूं[४] बाक़ी रहा

उनका तर्ज़[५] अपना लिया अस्लूब[६] अपना छोड़कर
बस यह बन्दा क़ातिलों के बीच यूं बाक़ी रहा

---

१. दीवानगी २. शान्ति ३. जादू ४. छिपी बेचैनी और कसक ५. शैली ६. शैली

इस क़दर[१] नरमी मुज़िर[२] होगी संभल के बोलिए
जाने कैसा शहर है लहजा[३] बदल के बोलिए

रोज़ इन आँखों की मस्ती का बयां[४] – हद हो गई
अब ज़रा पीरे[५] मुग़ां के पास चल के बोलिए

उसकी नरमी आपके तेवर[६] से भी संगीन[७] है
इब तदाये[८] आरज़ू[९] मन्दी है हल्के बोलिए

इस तरह ख़ामोश रहने से तो यह मिट जाएगा
सोचिए इस शहर के बारे में, बलके बोलिए

हमने तो उसलूब[१०] अपना ख़ूब वाज़ह[११] कर दिया
क्या इरादे हैं "शुजा ख़ावर" ग़ज़ल के – बोलिए

---

१. इतनी २. हानिकारक ३. आवाज़ ४. वर्णन ५. मदिरापान करने वालों का मुखिया ६. अकड़ ७. दृढ़ ८. प्रारम्भ ९. इच्छा करना १०. शैली ११. स्पष्ट

दोस्त का घर और दुश्मन का पता मालूम है
ज़िन्दगी हमको तेरा सब सिलसिला मालूम है

ज़िन्दगी, जा हम भी कूए-आरज़ू[१] तक आ गए
इसके आगे हमको सारा रास्ता मालूम है

क्या मुनज्जिम[२] से करें हम अपने मुस्तक़बिल[३] की बात
हाल[४] के बारे में हमको कौन सा मालूम है

या तो जो ना-फ़हम[५] हैं, वो बोलते हैं इन दिनों
या जिन्हें ख़ामोश रहने की सज़ा मालूम है

शेर पर तो आपकी क़ुदरत[६] मुसल्लम[७] है "शुजा"
इस ज़माने[८] का भी कुछ अच्छा बुरा मालूम है

---

१. अभिलाषाओं की गली २. ज्योतिषी ३. भविष्य ४. वर्तमान ५. ना समझ ६. पकड़ ७. पक्की ८. युग

इसमें रखती ही नहीं अपना कोई सानी[१] हवा
अच्छे-अच्छों की करेगी मरसियाख़्वानी[२] हवा

लोग बदलें तो बदल जाते हैं सब पानी हवा
शहर अपना भी हो तो लगती है बेगानी हवा

आंधियों का मरतबा[३] अब तक नहीं जानी हवा
कर रही है देखिए कैसी यह नादानी[४] हवा

बे मज़ा, बे कैफ़[५], बे हंगाम[६] तूफानी हवा
चल रही है हर तरफ लफ़्ज़ों[७] की बेमानी[८] हवा

आग की मानिन्द[९] जो पहले ही जलता हो मियां
और कुछ उसकी बढ़ाती है परेशानी हवा

हिज्र[१०] की पुरनम[११] हवा से आंख नम[१२] होने लगीं
दीद[१३] हो जाए तो हो आंखों का यह पानी, हवा[१४]
इसकी आमद[१५] पर कसीदे[१६] हमने लिक्खे थे मगर
खूब मौसम है कि हमको भी न पहचानी हवा

एक घर ख़्वाबों[१७] की ऊंचाई पे था अपना "शुजा"
जाने कैसे ले उड़ी उसको भी मैदानी हवा

---

१. उदाहरण २. शोक ३. स्थान (महत्व) ४. मूर्खता ५. नीरस ६. शांत ७. शब्दों ८. निरर्थक ९. समान १०. विरह ११. भीगी १२. भीगने लगीं १३. दर्शन १४. गायब के अर्थ में (हवा होना मुहावरा है) १५. आगमन १६. प्रशंसा पत्र १७. सपनों

पृष्ट न. ग़ज़ल

७५. मेरे वजूद से कम तेरी जान थोड़ी है
७६. सुकूं ज़मीने–क़नाअत पे जब नज़र आया
७७. असर में देखिए अब कौन कम निकलता है
७८. तेरे ख़ुलूस ने आंखों से हाल पूछा है
७९. सितमगारों की तबाही को आम कर देंगे
८०. कहां कहां है ख़ुदा जाने राब्ता दिल का
८१. रक़ीब यह न समझ हम रहे ख़सारे में
८२. उरूज ही में नहीं है कमाल सूरज का
८३. शुरू में तो था मशहूर वलवला मेरा
८४. यही तो रखती है पहचान ख़ास तन्हाई
८५. निकाल ज़ात से बाहर निकाल तन्हाई
८६. वहां आना जाना तो सब का रहा
८७. उड़ा क्या जो रूख़ पर हवा के उड़ा
८८. सफ़र पर मेरे साथ चलना नहीं है
८९. मेरे चर्चे आम बहुत हैं
९०. आने वाले कल की बातें
९१. दिन में तो पांव उठ गये थे दश्त से घर के लिए
९२. दिल जल रहा है तो मियां आहो-फ़ुग़ां जल्दी करो
९३. अब क़हर भी मेरे ख़ुदा का देखिए
९४. दोनों बिल्कुल चुप रहते हैं खूब ज़माना साज़ी है
९५. दिन के पास कहां जो हम रातों में माल बनाते हैं
९६. तीर बनकर ख़ैर से हर दिल पे जब सीधा लगेगा
९७. कैसे तन्हाई के हाथों लुट गया इन्सान देखो
९८. हुआ तो है उदू का कुछ दबाव कम
९९. सहीह बात तो यह है कि तुम ग़लत न हम ग़लत

इधर तो दार[१] पर रखा हुआ है।
उधर पैरों में सर रखा हुआ है।

कम अज़ कम[२] इस सराबे[३] आरज़ू ने।
मेरी आंखों को तर[४] रखा हुआ है।

समझते क्या हैं हमको शहर वाले।
बयाबां[५] में भी घर रखा हुआ है।

हर एक शै[६] मिल गई है ढूंढ़ने पर।
सुकू[७] जाने किधर रखा हुआ है।

हम अच्छा माल तो बिल्कुल नहीं हैं।
हमें क्यों बांध कर रखा हुआ है।

मेरे हालात को बस यूं समझ लो।
परिन्दे[८] पर शजर[९] रखा हुआ है।

जहालत से गुज़ारा कर रहा हूँ।
किताबों में हुनर रखा हुआ है।

---

१. फांसी का तख्ता २. कम से कम ३. धोखा (मरूभूमि में ऐसा स्थान जहाँ दूर से पानी का धोखा होता है) ४. भीगी हुई ५. वन ६. वस्तु ७. सुख-शान्ति (चैन) ८. पक्षी ९. वृक्ष

यह दिन का वक्त और ख़्वाबों की भरमार
उठ और संगे[१] हक़ीक़त खींच कर मार

बिना देखे न यूं अग़ियार[२] पर मार
जिधर से आए हैं पत्थर उधर मार

मिलन को जज़्बे[३] सादिक़ का सिला[४] कह
जुदाई शूमिये[५] किस्मत के सर मार

मियां बस क़त्ल कर सकती है शमशीर[६]
मगर बातों की होती है दिगर[७] मार

जमीं पर एक मुस्तक़बिल[८] बना ले
यूं ही सात आसमानों से न सर मार

---

१. वास्तविकता का पत्थर २. जाने पहचाने दुश्मन ३. सच्ची लगन ४. बदला ५. दुर्भाग्य ६. तलवार ७. विभिन्न ८. भविष्य

यहाँ तो जब भी शाहों[१] ने सज़ा दी
किसी दरवेश[२] ने फ़ौरन दुआ दी

दरिन्दों[३] में तुम्हें जिसने जगह दी
उसी ने मुझको ताइर[४] की नवा दी

करा दो शहरे क़ातिल में मनादी[५]
के हमने जिस्म से जां[६] सस्ती लगा दी

मिलेंगे नाजी[७] बनकर इत्तहादी[८]
नुजूमी[९] ने मेरी किस्मत बता दी

ख़ामोशी हो गई इतनी इफ़ादी[१०]
कि दीवारे सदा[११] हमने गिरा दी

हुए महरुमियों[१२] के जब हम आदी
तो उस ज़ालिम ने चिलमन ही हटा दी

अकेले में भी एक महफ़िल जमा दी
मेरी तन्हाई निकली बज़्म जादी[१३]

बहुत ही पास है शहरे हक़ीक़त[१४]
बड़ी ही दूर है ख़्वाबों की वादी[१५]

मिलनसारी का काफ़ी तजरबा है
हमें जिसने भी दी मिलकर दग़ा दी

बड़ी घुन्नी ग़ज़ल कहते हो ख़ावर
पढ़े तो लग रही है सीधी-सादी

---

१. राजाओं २. साधु, फकीर, ३. जंगली जानवर ४. पक्षी ५. घोषणा ६. जीवन की सामग्री ७. हिटलर वादी ८. संयुक्त देशों की सेनाएं जो दूसरे महायुद्ध में हिटलर के विरुद्ध लड़ी ९. ज्योतिषी १०. लाभदायक ११. स्वर की दीवार (बाधा) १२. वंचित रहने की दशा १३. महफिल से उत्पन्न होने वाली १४. वास्तविकता का नगर १५. घाटी

दलीलें[१] भूल जाओगे वकीलों
हमारे रंग में दो रोज़ जी लो

बड़ा सादा है ख़ुद्दारी[४] का नुस्खा[५]
गरीबां चाक करके होंट सी लो

हमारा मार्का[६] तूफां से होगा

हवा की बात ख़ामोशी से पी लो

तख़्युल[७] क्या है तुमको क्या पता है
रक़ीबो, उसका जलवा — लो अभी लो

कोई इमकान[८] है तो मौत का है
कहाँ ले आई है यह जिन्दगी लो

तेरा ख़त फाड़ डाला नामावर[९] ने
इसे भी आज वहशत[१०] हो गई, लो

---

१. बैहस २. चीज़ ३. कठिन ४. आत्म सम्मान ५. उपाय ६. मुकावला ७. कल्पना ८. सम्भावना ९. संदेश ले जाने वाला दूत १०. दीवानापन

सांस लेने पर मुकर्रर[१] हो गए।
हम भी लोगों के बराबर हो गए।

कर दिया हैरान[२] इक तस्वीर ने।
ऐसे पिघले हम के पत्थर हो गए।

मीर जी, ऐसी ग़ज़ल गोई[३] भी क्या।
सुनने वाले घर से बेघर हो गए।

आप की तन्हाई[४] से खेलेंगे हम।
रात कुछ बच्चे मेरे सर हो गए।

मैंने पूछा था ख़ुदी[५] का फ़लसफ़ा[६]।
आप तो आपे से बाहर हो गए।

वस्ल[७] की शब हाथ आई ग़ैर के।
फ़लसफ़े मेरा मुक़द्दर हो गए।

---

१. नियुक्त २. अचम्भित ३. ग़ज़ल लिखना ४. अकेलापन ५. आत्म सम्मान ६. विचारधारा ७. मिलन

ख़्वाब[१] इतने हैं, ये ही बेचा करें
और क्या इस शहर में धन्धा करें

क्यों किसी का नाम हम रूस्वा[२] करें
इस्तआरों[३] की ज़ुबां[४] बोला करें

क्या ज़रा-सी बात का शिकवा[५] करें
शुक्रिये[६] से उसको शर्मिन्दा करें

तू कि हमसे भी न बोले एक लफ़्ज़[७]
और हम सबसे तेरा चर्चा करें

सबके चेहरे एक जैसे हैं, तो क्या
आप मेरे ग़म[८] का अन्दाज़ा करें

ख़्वाब[९] उधर है और हक़ीक़त[१०] है इधर
बीच में हम फंस गए हैं, क्या करें

हर कोई बैठा है, लफ़्ज़ों[११] पर सवार
हम ही क्यों मफ़हूम[१२] का पीछा करें

---

१. सपने २. तिरस्कृत ३. अतिश्योक्ति ४. भाषा ५. शिकायत ६. धन्यवाद ७. शब्द ८. दुख ९. सपना १०. सच्चाई ११. शब्दों १२. अर्थ

ख़ूब[१] अपनों के राज़ खोले जा।
दर्दे दिल, सुन रहा हूँ बोले जा।

ऐसे साहिल से डूबना बेहतर।
हमें, तूफ़ान से कहो, ले जा।

-ऐसे मंज़र कहीं बदलते हैं
जा अब इन आंसूओं को धो ले, जा।

पहले लफ़्ज़ों से वार करता था।
अब ख़मोशी से ज़हर घोले जा।

मलकुल मौत[२] ज़िन्दगी मेरी।
अर्श[३] पर चाहिए है तो ले जा।

वक़्ते रूख़सत[४] के इस समन्दर से।
कम से कम आँख ही भिगो ले जा।

क़हक़हो[५] की वो आड़ अच्छी है।
आज दिल भर के ख़ूब रो ले – जा।

वो शुजा बन्द हो गया बाज़ार।
तू यूं ही जेब को टटोले जा।

---

१. मजे से २. यमदूत ३. आकाश ४. बिछड़ने का समय ५. जोर की हंसी

क्यूँ हमें रख दिया है यूँ ढक के ।
सामने कैसे आएं गाहक के ।

दोस्तों कोई फिक्र[१] मत करना ।
हम तो आशिक़ हैं दुश्मनों तक के ।

रोने के बाद हंस दिए हम भी ।
ज़ख़्म[२] ने दे दिया मज़ा पक के ।

ख़्वाब में पिल गए हक़ीक़त पर ।
ख़ूब[३] दरबान[४] को दिए धक्के ।

मेरी तन्हाई देख ले मौला[५] ।
सारी दुनिया चली गई मक्के ।

ऐसा मंज़र कभी न देखा था ।
हर अक़ीदे[६] पे साए हैं शक के ।

---

१. चिन्ता २. घाव ३. अधिक (मज़े से) ४. चौकीदार ५. खुदा
६. धर्म विश्वास

सब जो करते हैं अब वही कीजे
यानी[१] चुपचाप जिन्दगी कीजे

मर के भी देखा जाए दो-एक दिन
कब तक ऐसे ही ज़िन्दगी कीजे

चारागर[२] कुछ नहीं बताएगा
दर्द कहता है जो वही कीजे

अब तो हालत यहाँ तक आ पहुँची
उसके बन्दों की बन्दगी कीजे

शख़्सियत[३] का मज़ार[४] पक्का है
ज़िन्दगी भर मुजावरी[५] कीजे

सामईन[६] उठ के जा रहे हैं "शुजा"
राइज़ुल[७] वक़्त शायरी कीजे

---

१. अर्थात २. वैद्य ३. व्यक्तित्व ४. क़बर ५. क़बर की देखभाल करने वाला ६. श्रोतागण ७. चलताऊ

ग़म[१] के जंगल में एक बाग़[२] लगा
दिल भी लग जाएगा, दिमाग़[३] लगा

चल दिए हम फ़ना[४] के रस्ते पर
रह गया ख़्वाहिशों[५] का बाग़ लगा

हम भी नादिम[६] हुए वफ़ा[७] पे तेरी
तेरे किरदार[८] को भी दाग़[९] लगा

फ़ारसी[१०] पढ़ गए "शुजा" जो हम
हर पियाला हमें अयाग़[११] लगा।

---

१. दुख २. उद्यान ३. ध्यान ४. बर्बादी ५. कामनाओं ६. लज्जित ७. वफादारी ८. चरित्र ९. धब्बा १०. ईरानी भाषा ११. जाम